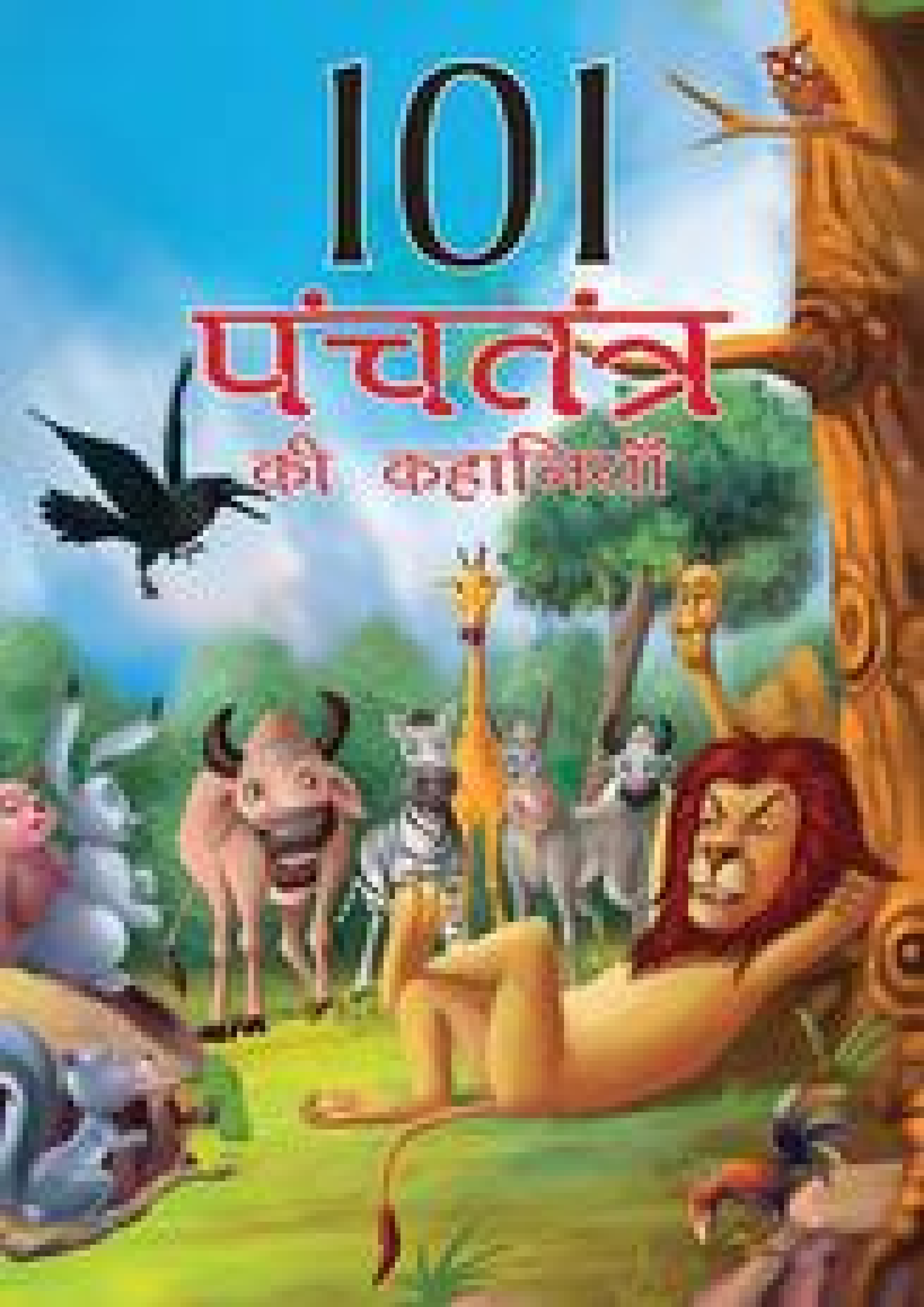

101
पंचतंत्र
की कहानियाँ

101

पंचतंत्र की कहानियाँ



OM KIDZ

An imprint of Om Books International

An imprint of Om Books International
Corporate & Editorial Office
A-12, Sector 64, Noida - 201 301
Uttar Pradesh, India
Phone: +91-120-477 4100
Email: editorial@ombooks.com
Website: www.ombooksinternational.com

ISBN 978-93-81607-83-1

10 9 8 7 6 5 4 3 2



विषय सामग्री



1 हंस और मूर्ख कछुआ

एक बार की बात है। एक कछुआ और दो हंस आपस में बहुत अच्छे मित्र थे।

एक साल बारिश बिलकुल नहीं हुई और जिस तालाब में वे रहते थे, वह सूख गया।

कछुए ने एक योजना बनाई और हंसों से बोला, “एक लकड़ी लाओ। मैं उसे बीच में दाँतों से दबा लूँगा और तुम लोग उसके किनारे अपनी चोंच में दबाकर उड़ जाना और फिर हम तीनों किसी दूसरे तालाब में चले चलेंगे।”

हंस मान गए। उन्होंने कछुए को चेतावनी दी, “तुम्हें पूरे समय अपना मुँह बंद रखना होगा। वरना तुम सीधे धरती पर आ गिरोगे और मर जाओगे।”

कछुआ तुरंत मान गया। जब सब कुछ तैयार हो गया तो हंस कछुए को लेकर उड़ चले।

रास्ते में कुछ लोगों की नजर हंसों और कछुए पर पड़ी। वे उत्साह में आकर चिल्लाने लगे, “देखो, ये हंस कितने चतुर हैं। वे अपने साथ कछुए को भी ले जा रहे हैं।”

कछुए से रहा नहीं गया। वह उन लोगों को बताना चाहता था कि यह विचार तो उसके मन में आया था। वह बोल पड़ा लेकिन जैसे ही उसने मुँह खोला, लकड़ी उसके मुँह से छूट गई और वह सीधे धरती पर आकर गिर पड़ा। अगर उसने अपने अहंकार पर नियंत्रण कर लिया होता तो वह भी सुरक्षित नए तालाब में पहुँच जाता।



2 लालची कुत्ता

एक कुत्ता इधर-उधर घूम रहा था। तभी उसे हड्डी का एक टुकड़ा पड़ा मिला।

उसने हड्डी का टुकड़ा उठा लिया और इधर–उधर देखने लगा। जब उसे कोई नहीं दिखा, तो वह टुकड़ा लेकर भाग निकला।

अब वह किसी एकांत और शांत स्थान की खोज करने लगा, जहाँ वह बैठकर आराम से हड्डी चबा सके। वह एक नदी किनारे पहुँचा और उसके ऊपर बने लकड़ी के पुल से नदी पार करने लगा।

जब वह पुल पार कर रहा था तभी उसकी निगाह नदी के पानी पर पड़ी। उसे पानी में अपनी ही छवि दिखाई दी। उसने अपनी ही छवि देखकर समझा कि वह कोई और कुत्ता है, जो हड्डी का टुकड़ा भी मुँह में दबाए है।

उसके मन में लालच आ गया। उसने दूसरे कुत्ते की हड्डी छीनने का निश्चय किया।

दूसरे कुत्ते को डराने के लिए वह जोर से भौंका। भौंकने के लिए उसने जैसे ही मुँह खोला, उसकी हड्डी पानी में गिर गई।

उसने हड्डी दुबारा उठाने की बहुत कोशिश की लेकिन हड्डी तो पानी में नीचे चली गई थी।

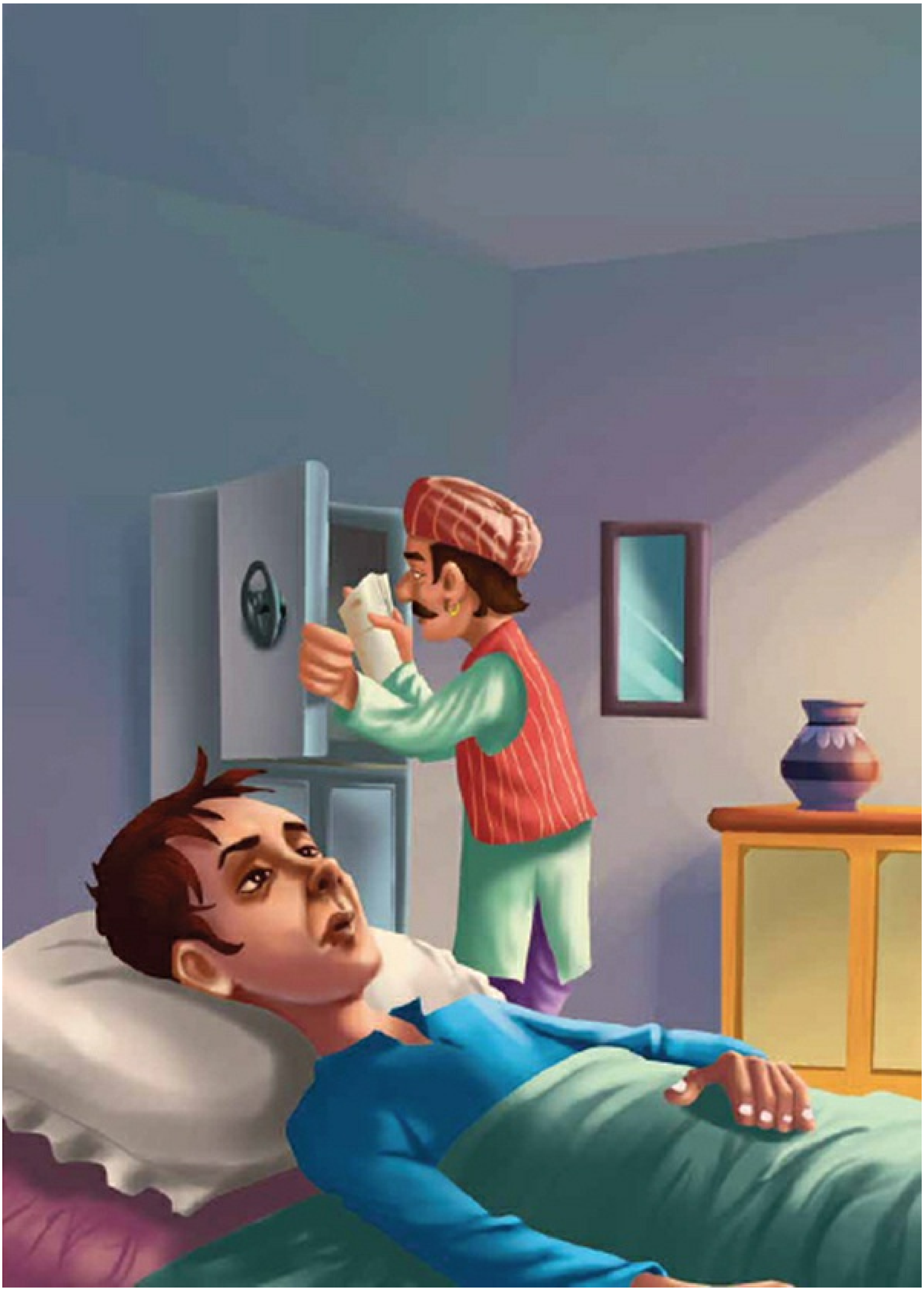
इस प्रकार, कुत्ते ने दूसरे कुत्ते की हड्डी पाने के चक्कर में अपनी हड्डी भी गँवा दी।



3 कंजूस पिता

सोलह वर्षीय लड़के मट्टकुंडली को पीलिया की बीमारी हो गई। उसका पिता बहुत कंजूस था। वह पैसे खर्च होने के डर से अपने बेटे को वैद्य के पास नहीं ले गया और घर पर स्वयं ही उसका उपचार करने का प्रयास करता रहा। लड़के की हालत बिगड़ती गई।

बुद्ध ने लड़के की दयनीय हालत देखी तो उन्हें बहुत दुख हुआ। वे आए और रोगी के बिस्तर के पास बैठ गए। उन्होंने लड़के को कुछ सुंदर धार्मिक उपदेश सुनाए। जीवन के अपने अंतिम पलों में उस लड़के के मन में बुद्ध के उपदेशों के प्रति गहरा विश्वास जग गया। थोड़ी देर बाद उसकी मौत हो गई। अब शोक संतप्त पिता अपने बेटे की चितास्थली पर जाकर रोने लगा। इसे देखकर देवताओं के राजा सक्क उसके सामने प्रकट हुए और उससे कहने लगे कि तुम्हारी कंजूसी की वजह से ही तुम्हारे बेटे की जान गई है। उसके बाद से कंजूस पिता ने कंजूसी छोड़ दी और अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए बुद्ध के उपदेशों का पालन करने लगा।



4 विद्यार्थी और शेर

एक छोटे से नगर में चार ब्राह्मण विद्यार्थी रहते थे। वे एक-दूसरे के बहुत अच्छे मित्र भी थे। उनमें से तीन पढ़ाई-लिखाई में बहुत होशियार थे और बहुत चतुर माने जाते थे। चौथा विद्यार्थी पढ़ाई में बहुत तेज नहीं था लेकिन उसे दुनियादारी की समझ काफी थी।

एक दिन एक विद्यार्थी बोला, "अगर हम लोग राजाओं के दरबारों में जाएँ तो अपनी बुद्धि के बल पर बहुत नाम और दाम कमा सकते हैं।"

सारे विद्यार्थी तुरंत मान गए। वे यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में उन्हें शेर की खाल और हड्डियाँ पड़ी मिलीं।

पहला विद्यार्थी जोश में आकर बोला, "हमें अपने ज्ञान की परीक्षा करनी चाहिए। चलो इस शेर को फिर से जीवित करते हैं! मैं इसके कंकाल को सही तरह से व्यवस्थित कर सकता हूँ।"

"मैं कंकाल में माँस और खून भर सकता हूँ," दूसरे विद्यार्थी ने भी शेखी बघारी।

"मैं फिर इसके शरीर में जान डाल सकता हूँ। यह फिर से जीवित जानवर बन जाएगा।" तीसरा विद्यार्थी बोल पड़ा।

चौथे विद्यार्थी ने कुछ नहीं कहा और तीनों की बातें सुनता रहा।

इसके बाद उसने अपना सिर हिलाया और बोला, "ठीक है, तुम लोगों को जो अच्छा लगे, वैसा करो। लेकिन पहले मुझे किसी पेड़ पर चढ़ जाने दो। तुम लोग बहुत होशियार हो। मुझे तुम लोगों के ज्ञान और बुद्धि पूरा भरोसा है। तुम लोग शेर को अवश्य जीवित कर लोगे और जल्द ही यह मरा हुआ शेर जीवित होकर दहाड़ मारने लगेगा। हालाँकि मुझे यह विश्वास नहीं है कि तुम लोग इस शेर का स्वभाव भी बदल पाओगे। शेर कभी घास नहीं खा सकता, जैसे मेमना कभी माँस नहीं खा सकता।"

उसके साथी उसकी बात सुनकर हँस पड़े। "तुम डरपोक हो। तुम्हें अपनी जान गँवाने का डर है। शर्म करो! तुम्हें हमारे ज्ञान पर भरोसा है लेकिन तुम्हें यह नहीं पता कि हम लोग जिस जानवर को जीवित करेंगे, वह पूरी तरह हमारे अनुसार ही कार्य करेगा। हम जिस जानवर को जीवनदान देंगे, वह भला हमारे ऊपर क्यों हमला करेगा? खैर, तुम चाहते हो तो छिप जाओ और हमारा कमाल देखो!"

चौथा विद्यार्ती दौड़कर एक पेड़ पर चढ़ गया। उसके सारे मित्र उसे देखकर फिर से हँस पड़े। जब तीसरे विद्यार्थी ने शेर के शरीर में जान डाली तो शेर दहाड़ मारकर उठ बैठा। उठते ही उसने तीनों विद्यार्थियों पर झपट्टा मारा और उन्हें मारकर खा गया। चौथे विद्यार्थी ने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने उसे दुनियादारी की इतनी समझ दी कि उसने ईश्वर और उसके बनाए प्राणियों के काम में दखल नहीं दिया।



5 घमंडी बारहसिंघा

एक बारहसिंघा था। वह अक्सर एक तालाब के पास जाया करता था और अपनी पानी में अपनी परछाई देखकर अपने आपसे कहता, “मेरे सींग कितने सुंदर हैं! काश मेरे पैर भी इतने ही सुंदर होते!”

एक दिन एक शेर ने उसका पीछा किया। बारहसिंघा घने जंगल की ओर भागा, लेकिन उसके सींग एक घनी झाड़ी में फँस गए। उसे लगा कि उसकी मौत अब पास आ चुकी है। वह अपने सींगों को कोसने लगा।

आखिरकार, उसने अपने मजबूत पैरों की सहायता से अपने आपको झाड़ी से मुक्त करा लिया। इसके बाद वह अपने मजबूत पैरों से उछलता-कूदता जंगल में भाग गया और शेर से बचने में सफल हो गया।

बारहसिंघा ने अपने कुरूप पैरों को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया, जबकि उसके सुंदर सींगों की वजह से तो उसकी जान ही जाने वाली थी। वह सोचने लगा कि उसे संकट से बचने के लिए सींगों के बजाय पैरों की अधिक आवश्यकता है। उसके बाद से उसने अपने पैरों को कभी कुरूप नहीं माना।



6 कौआ और सीप

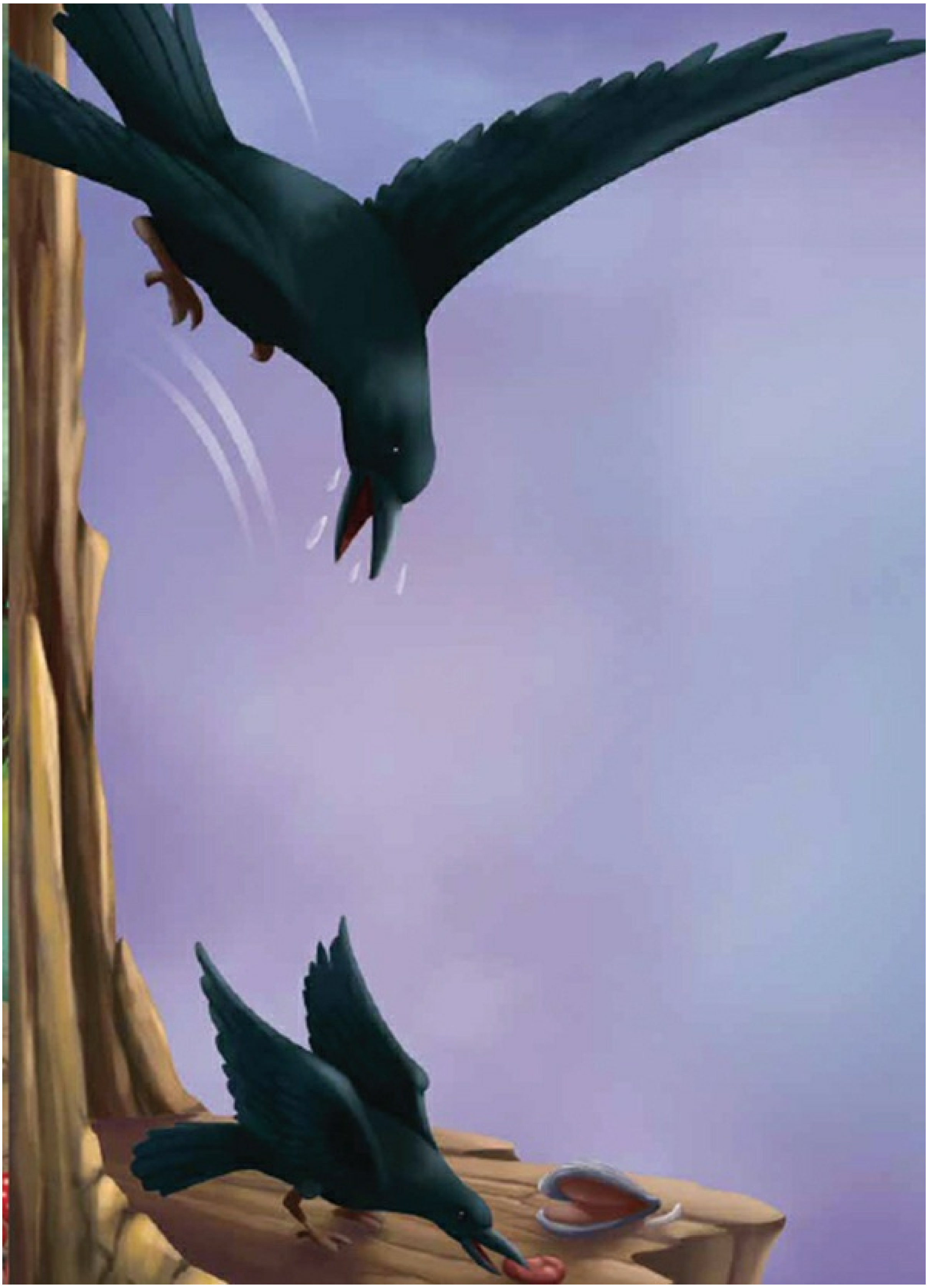
एक दिन एक भूखे कौए को समुद्र तट पर एक सीप पड़ी मिली। सीप के अंदर का माँस निकालने और खाने के लिए उसने सीप को तोड़ने की कोशिश की। सीप नहीं खुली। अब उसने अपनी चोंच से सीप के अंदर का माँस निकालने का प्रयास किया पर वह असफल रहा। अब उसने सीप पर पत्थर मारा, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ।

इस बीच, एक और चालाक कौआ वहाँ आकर बोला, “मेरे दोस्त, यह सीप इस तरह से नहीं खुलेगी। तुम मेरी सलाह मानो और इसे अपनी चोंच में दबाकर ऊपर आकाश में उड़ जाओ। वहाँ से इस सीप को चट्टान पर गिरा देना। तभी यह खुल पाएगी।”

भूखे कौए को यह विचार पसंद आया और उसने वैसा ही किया।

कौआ सीप को चोंच में दबाकर उड़ गया और ऊपर जाकर उसने सीप गिरा दी। सीप तुरंत खुल गई लेकिन दूसरे कौए ने तुरंत उसे उठा लिया और उसके अंदर का माँस खा गया।

जब पहला कौआ वहाँ पहुँचा तो उसे सिर्फ सीप के खोल के टुकड़े ही पड़े मिले।



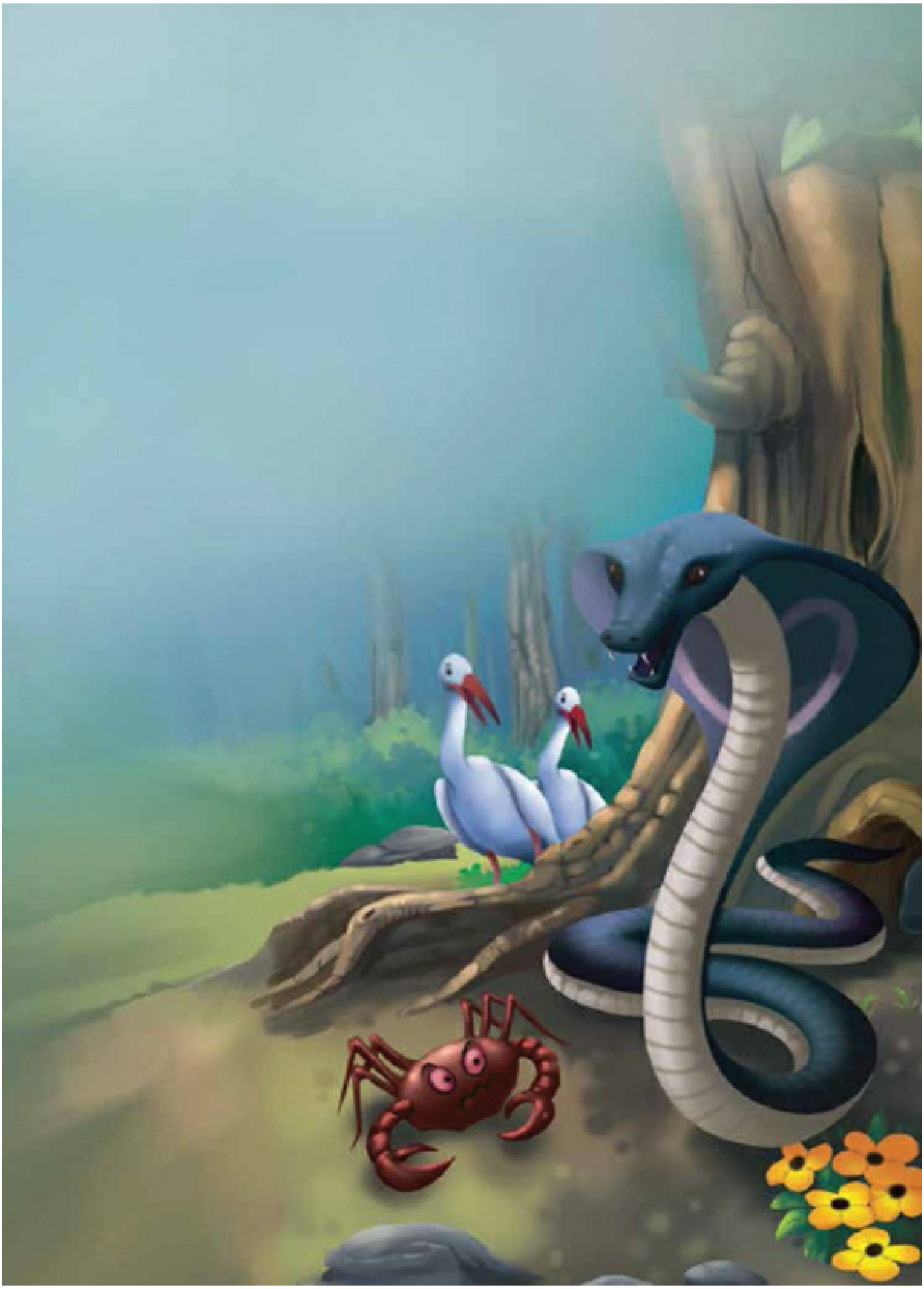
7 मूर्ख सारस और केकड़ा

एक बड़े बरगद के पेड़ पर बहुत सारे सारस रहते थे। वहीं पर पेड़ के एक बिल में एक साँप भी रहता था। साँप सारस के छोटे-छोटे बच्चों को खा जाता था। जब सारस को पता चला कि साँप उनके बच्चों को खा जाता है तो वह रोने लगा। उसके रोने की आवाज सुनकर एक केकड़ा वहाँ आ पहुँचा और उससे रोने का कारण पूछने लगा।

सारस ने उसे पूरी बात बताई और उससे अनुरोध किया कि वह निर्दयी साँप से छुटकारा पाने का कोई तरीका सुझाए। केकड़े ने अपने आपसे कहा, “ये सारस तो जन्म से ही हमारे शत्रु होते हैं। मुझे इन्हें गलत सलाह देनी चाहिए।”

इस प्रकार, केकड़े ने सारस को सलाह दी, “नेवले के बिल से लेकर पेड़ तक माँस के टुकड़े बिखरा दो। नेवला उन टुकड़ों के पीछे चलता-चलता यहाँ तक आ जाएगा और साँप को मार डालेगा।”

सारस ने केकड़े की सलाह मान ली। नेवला आया और उसने साँप को तो मारा ही, साथ में सारे सारसों को भी मार डाला। इसीलिए कहा गया कि जो अपने मित्र न हों, उनसे सलाह नहीं लेनी चाहिए।



8 हौद में पड़ा कुत्ता

एक बाड़े में एक कुत्ता रहता था। वह हमेशा घोड़ों का चारा रखने की हौद में मुलायम सूखी घास पर सोता रहता था। वैसे कुत्ते का भोजन तो बाड़े के बाहर अहाते में रखा जाता था लेकिन स्वार्थी कुत्ता उसी हौद में पड़ा रहता था। इतना ही नहीं, जब घोड़े खाना खाने आते, तो वह उन पर भौंकने भी लगता।

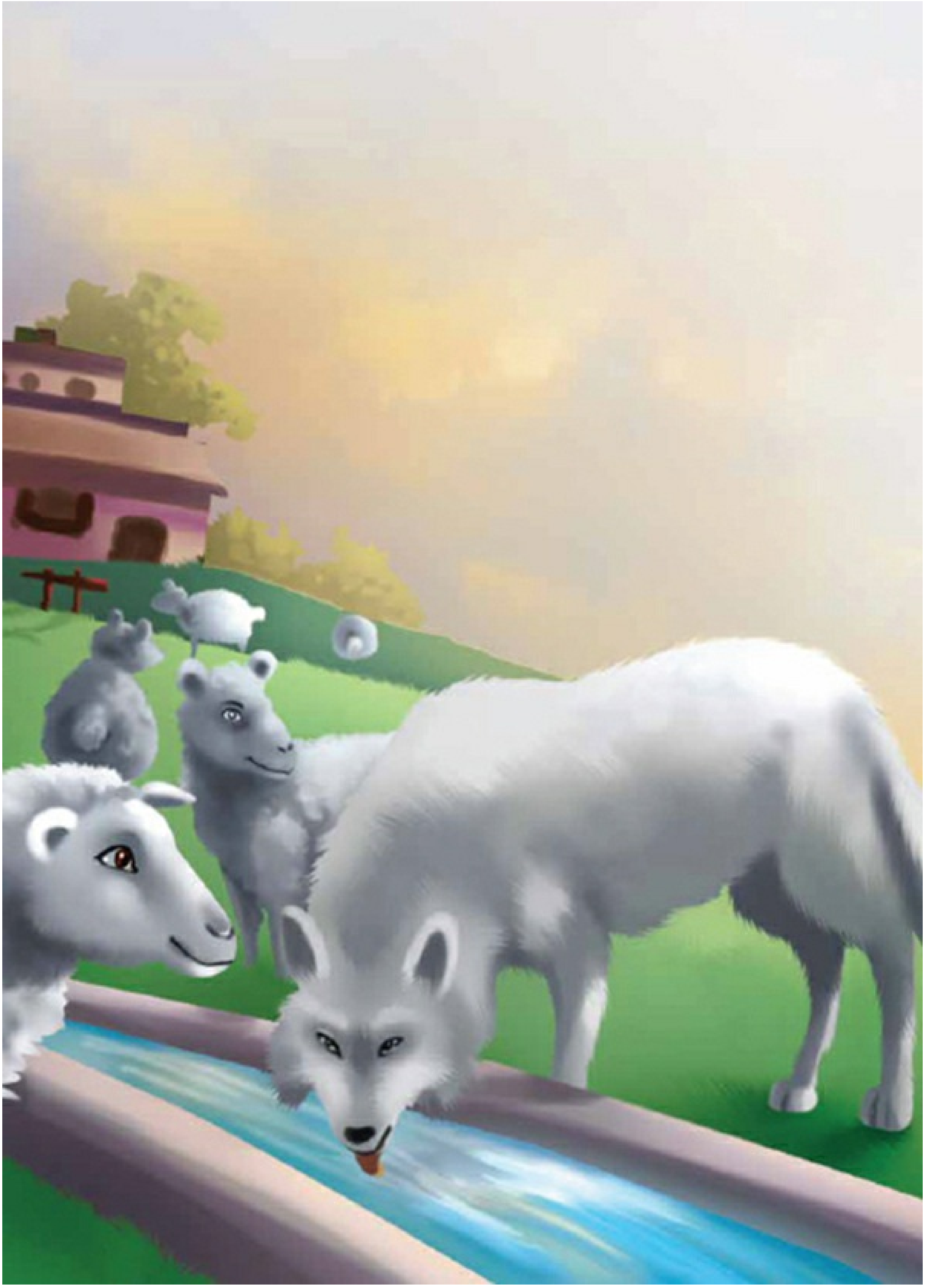
बेचारे घोड़े अपना खाना तक नहीं खा पाते थे! वे कुत्ते को बताते कि किसान ने अहाते में उसके लिए हड्डियाँ रखी हैं, लेकिन कुत्ता हौद से बाहर निकलने को तैयार ही नहीं होता था।

"कितना स्वार्थी कुत्ता है!" घोड़ों ने आपस में कहा। "वह जानता है कि वह घास नहीं खा सकता लेकिन वह तो हमें भी कुछ खाने नहीं देता। वह हमें तो परेशानी में डालता ही है, वह खुद भी परेशानी में पड़ेगा!"



9 भेड़िया बन गया दोस्त

एक भेड़िया भेड़ों के झुंड के पीछे लगा था। उसने झुंड के पास चरवाहे को देखा तो उसने भेड़ों पर हमला करने का प्रयास नहीं किया। चरवाहे को उस पर संदेह तो था ही, इसलिए वह भेड़ों की निगरानी करता रहा। अगली बार, फिर भेड़िया चुपचाप भेड़ों के साथ लगा रहा और उन पर उसने कोई हमला नहीं किया। धीरे-धीरे वह भेड़ों के झुंड का ही हिस्सा बन गया। चरवाहे को भी उस पर विश्वास होने लगा कि वह भेड़ों पर हमला नहीं करेगा। एक दिन, चरवाहे को किसी काम से शहर जाना पड़ा। उसने भेड़िए पर भरोसा करते हुए उसे भेड़ों की रखवाली का काम सौंप दिया। जैसे ही चरवाहा शहर के लिए निकला, भेड़िया तुरंत भेड़ों पर टूट पड़ा और एक-एक करके सबको मार डाला। वापस लौटने पर चरवाहे ने देखा तो उसे अपनी मूर्खता समझ में आई। उसे भेड़िए पर विश्वास करने का पश्चात्ताप होने लगा। भेड़िए जैसा मित्र किसी शत्रु से भी बुरा होता है।



10 परिचय से मिलता है साहस

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। एक दिन, उसने अपने जीवन में पहली बार किसी शेर को देखा। लंबा अयाल, भयानक शरीर, डरावनी दहाड़ और राजा की तरह चाल-ढाल देखकर लोमड़ी डर गई। वह वहीं पर बेहोश होकर गिर पड़ी। अगले दिन, फिर वही शेर उसे दिखाई दिया। वह अब भी डरी हुई थी, लेकिन उसने साहस जुटाया और अपने डर को छिपाने की कोशिश की। जल्द से जल्द वह वहाँ से भाग गई। तीसरे दिन, स्थिति पूरी तरह से बदल गई। लोमड़ी सीधे शेर के पास पहुँच गई और बोली, “जय हो महाराज, सब ठीक-ठाक है न?” वह शेर से बिलकुल परिचितों की तरह बात करने लगी। अब उसे शेर से बिलकुल डर नहीं लग रहा था। पिछले दो दिनों से लगातार शेर को देख-देखकर, वह उससे परिचित हो गई थी।

इसीलिए कहा गया है कि परिचय होने पर साहस मिलता है।

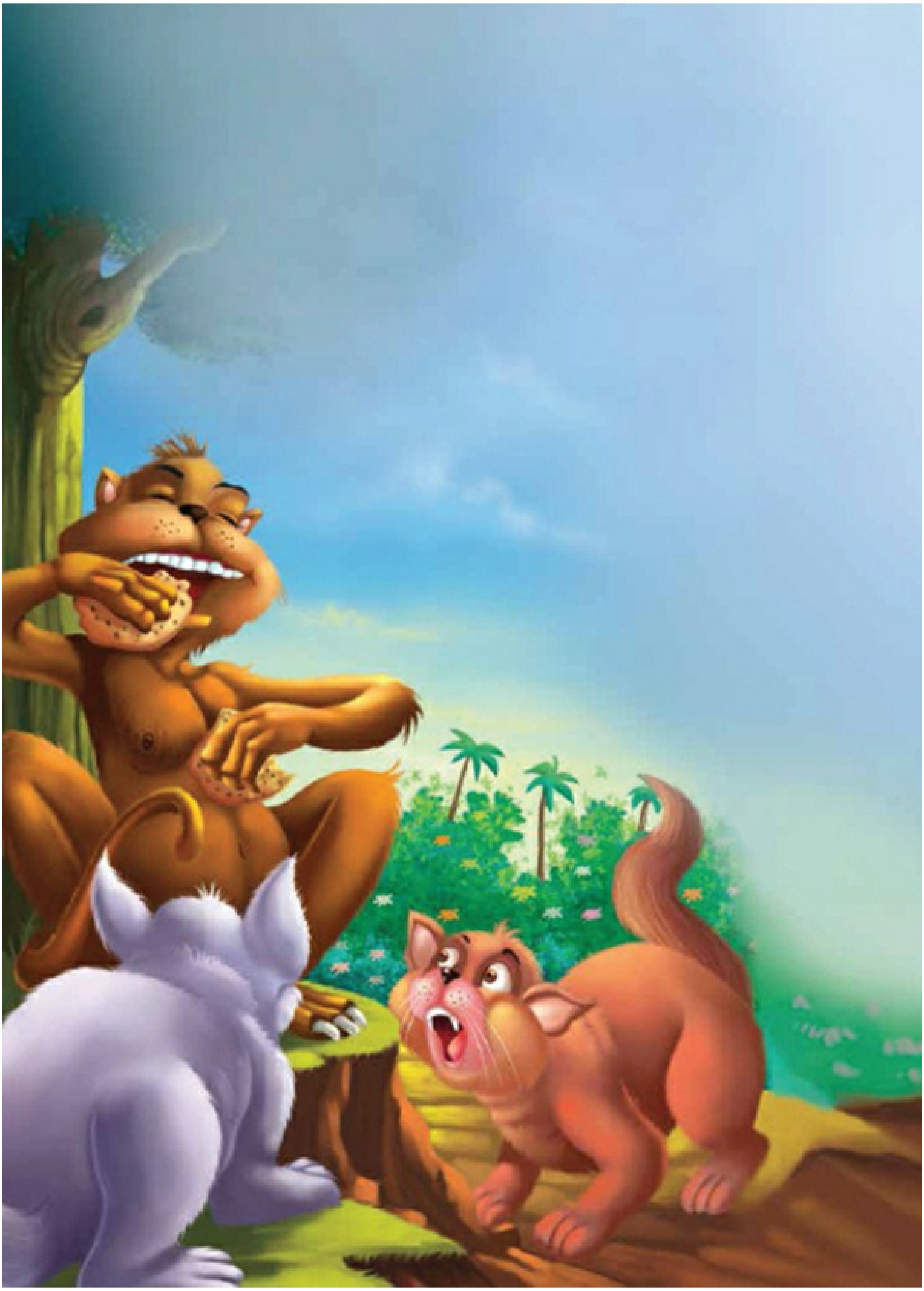


11 मूर्ख बिल्लियाँ

एक बार, एक बिल्ली को सड़क पर रोटी का टुकड़ा पड़ा मिला। तभी एक और बिल्ली की निगाह उस टुकड़े पर पड़ी। दोनों बिल्लियाँ आपस में झगड़ने लगीं।

कुछ देर बाद, पहली बिल्ली ने सुझाव दिया कि रोटी के टुकड़े को दो हिस्सों में बाँट लेते हैं। तभी एक बंदर वहाँ आ गया। बिल्लियों ने उस बंदर से कहा कि वह रोटी के उस टुकड़े को दो बराबर भागों में बाँट दे।

बंदर बहुत चालाक था। उसने रोटी के दो टुकड़े किए और दोनों के आकार की जाँच करने लगा। एक हिस्सा थोड़ा बड़ा लगा तो उसने उसका एक टुकड़ा खा लिया। अब उसने देखा कि दूसरा हिस्सा कुछ बड़ा रह गया है। उसने दूसरे हिस्से का एक टुकड़ा खा लिया। इसी तरह करते-करते वह दोनों हिस्से खा गया और बिल्लियों को कुछ भी नहीं मिला।



12 कुत्ता चला विदेश

एक नगर में चित्रांगन नामक एक होशियार कुत्ता रहता था। एक साल उस नगर में भयानक अकाल पड़ा। चित्रांगन को खाने के लाले पड़ गए। परेशान होकर वह कहीं दूर के नगर में चला गया। नई जगह पर खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। वह एक घर के पिछवाड़े में रहता और वहाँ मनपसंद खाना खाता।

एक दिन, कुछ वहीं के कुत्तों ने उसे देख लिया। उसे देखते ही वे समझ गए कि यह कुत्ता तो बाहर से आया है। उन कुत्तों ने उस पर हमला कर दिया। सारे कुत्ते उस पर भौंकते हुए टूट पड़े और उसे जगह-जगह से बुरी तरह घायल कर दिया।

आखिरकार, किसी तरह वह उन कुत्तों के चंगुल से छूट पाया। अब वह सोचने लगा, “यह जगह छोड़ देने में ही भलाई है। मेरे नगर में भले ही अकाल पड़ा हो, लेकिन कम से कम वहाँ मेरे साथी तो हैं।”



13 नीले सियार की कहानी

एक बार एक सियार एक धोबी के घर में घुस गया और कपड़ों को रंगने के लिए नीले रंग से भरे बड़े हौद में छिप गया। जब वह बाहर निकला तो वह पूरा नीला हो गया था!

जब सियार जंगल वापस आया तो सारे जानवर उसे देखकर डर गए। उन्हें समझ ही नहीं आया कि यह अजीब जानवर कौन-सा है। सियार बोला, “डरने की कोई बात नहीं है। मुझे ईश्वर ने विशेष तौर पर बनाया है। उसने मुझे तुम लोगों का राजा बनाकर भेजा है।”

जंगल के सभी जानवरों ने उसे अपना राजा मान लिया।

एक दिन, जब नीला सियार अपना दरबार लगाए बैठा था, तभी उसे कुछ और सियारों के हुआ-हुआ चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं। अपने साथियों की आवाजें सुनकर वह इतने जोश में आ गया कि वह भी जोर-जोर से हुआ-हुआ चिल्लाने लगा।

सारे जानवर समझ गए कि उनका ये राजा कोई और नहीं, बल्कि सियार ही है। वे सब बहुत नाराज हुए। उन सबने मिलकर सियार की अच्छी पिटाई की और उसे वहाँ से भगा दिया।



14 घमंडी कौए

एक नन्हीं मैना अपने घोंसले में लौटते समय अंधेरा हो जाने के कारण रास्ता भटक गई। वह एक पेड़ पर बैठ गई। उस पेड़ पर बहुत सारे कौए बैठे थे। वे सब चिल्लाने लगे, “हमारे पेड़ से भागो!”

मैना ने उनसे विनती की, “बारिश होने वाली है। मुझे थोड़ी देर यहीं रुक जाने दो।” लेकिन कौओं ने उसकी एक न सुनी।

आखिरकार, मैना उड़कर दूसरे पेड़ पर बैठ गई। वहाँ से उसे एक खाली गड्ढा मिल गया, जिसमें वह आराम से बैठ गई। कुछ ही देर बाद भारी बारिश होने लगी और बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। कई कौए घायल हो गए और कई तो मर भी गए। जब बारिश थमी तो मैना बाहर निकली और अपने घर की तरफ उड़ चली। एक कौए ने उससे पूछा, “अरे, तुम्हें चोट नहीं लगी?”

“दूसरों पर दया करने वालों की ईश्वर सहायता करता है और तुम्हारे जैसे घमंडियों को कष्ट सहने के लिए छोड़ देता है,” मैना ने जवाब दिया।



15 हाथ की चिड़िया

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन शेर को एक पेड़ के पास एक छोटा-सा खरगोश दिखाई दिया। शेर उसे पकड़ने के लिए गया और उस पर छलाँग मारने ही वाला था कि खरगोश ने उसे देख लिया और वह जान बचाकर भागा।

शेर ने और लंबी छलाँग लगाई और खरगोश को दबोच लिया। शेर अब उसे खाने ही वाला था कि उसे एक हिरन दिख गया। लालची शेर ने खरगोश को छोड़ दिया और हिरन के पीछे भागा।

हिरन ने शेर को अपने पीछे आता देखा, तो वह लंबी-लंबी छलाँग मारता हुआ जंगल में जाकर छिप गया।

शेर खरगोश से भी हाथ धो बैठा और हिरन भी उसकी पकड़ में नहीं आया। वह खरगोश को छोड़ने की गलती करने के लिए पछताने लगा।

इसी कारण, ठीक ही कहा गया है कि आकाश में दो चिड़ियों से अपने हाथ की एक चिड़िया बेहतर होती है।



16 पिस्सू और बेचारा खटमल

एक खटमल एक राजा के पलंग में रहता था। एक पिस्सू शयनकक्ष में आया और खटमल से बोला, “मैंने कभी किसी राजा का खून नहीं पिया। आज तुम्हारे साथ मैं भी राजा का खून पिऊँगा।”

खटमल ने जवाब दिया, “तुम प्रतीक्षा करना। मेरा पेट भर जाने के बाद ही तुम्हारी बारी आएगी। तब तुम अपना पेट भर लेना।” पिस्सू सहमत हो गया।

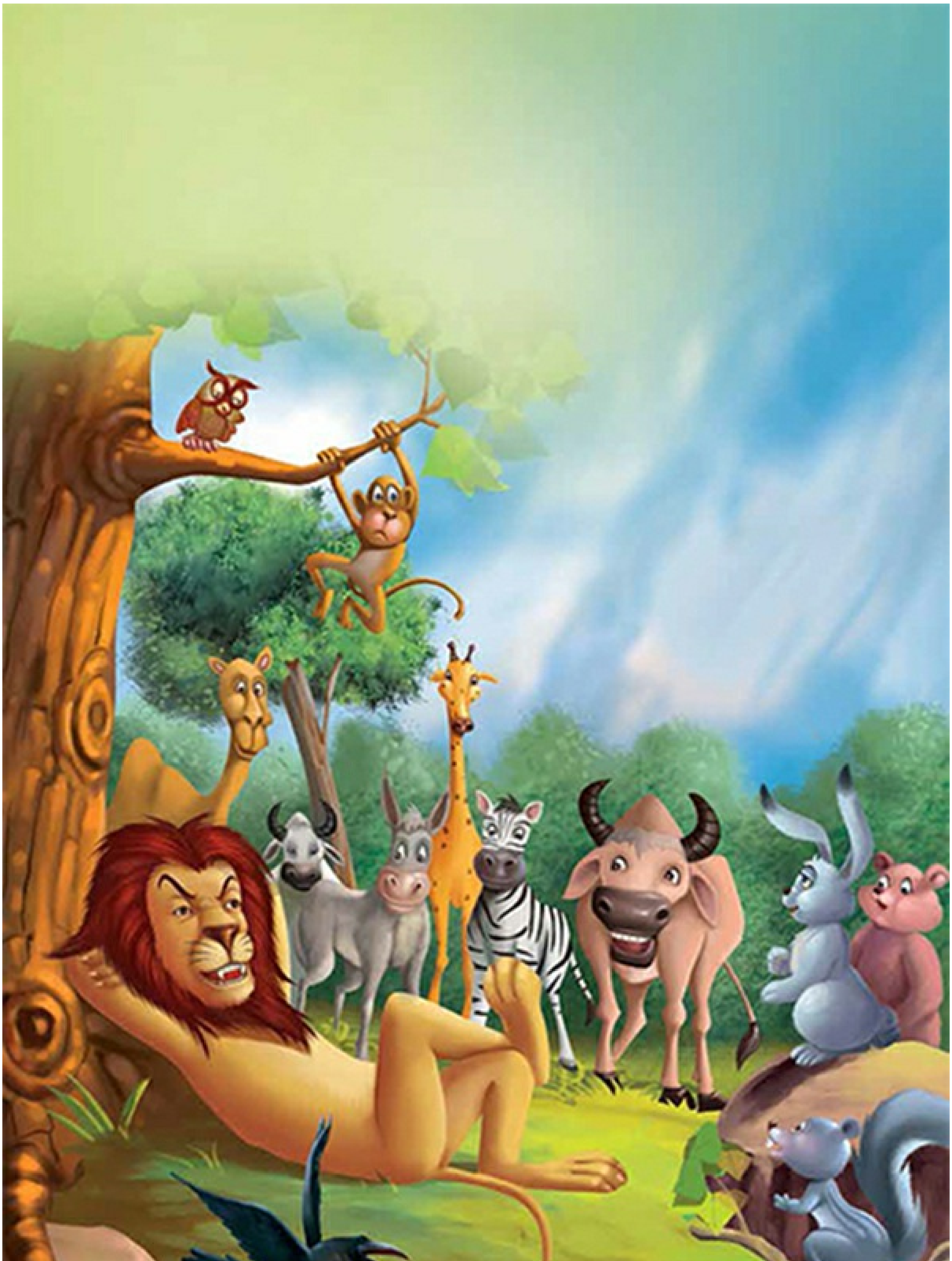
इस बीच, राजा शयनकक्ष में आ गया। बेसब्र पिस्सू अपने पर नियंत्रण नहीं कर पाया। राजा के सोने से पहले ही उसने उसका खून चूसना शुरू कर दिया। पिस्सू के काटने से राजा पलंग पर उठकर बैठ गया। उसने अपने सेवकों को बुलाकर पलंग की अच्छी तरह से जाँच-पड़ताल करने को कहा। राजा के सेवकों ने पलंग को बहुत ध्यान से देखा। पिस्सू तो धीरे से पलंग के अँधेरे कोने में खिसककर छिप गया लेकिन खटमल उन्हें दिख गया। उन्होंने खटमल को मार डाला।



17 शेर और चतुर खरगोश

एक जंगल में एक बहुत शक्तिशाली शेर रहता था। वह पूरे जंगल में निडर होकर घूमता रहता था और जो भी जानवर उसे दिख जाता, उसे मार डालता। सारे जानवर बहुत चिंतित थे। एक दिन सारे जानवर एक साथ शेर के पास पहुँचे और कहने लगे, “आप हमारे राजा हैं। हम नहीं चाहते कि आपको शिकार करने के लिए इधर-उधर भटकना पड़े। हम लोग स्वयं ही प्रतिदिन एक जानवर आपके पास भोजन के लिए भेज दिया करेंगे।” शेर राजी हो गया और बोला, “लेकिन याद रखना, हर दिन दोपहर में खाने के समय से पहले एक जानवर मेरी गुफा में पहुँच जाना चाहिए, वरना मैं तुम सबको मार डालूँगा।”

इसके बाद, जंगल में शांति हो गई। एक दिन एक छोटे और दुबले-पतले खरगोश की बारी आई। वह बेहद चतुर था। उसने तय कर लिया कि जैसे भी हो, अपनी जान बचानी ही है। वह शेर की गुफा की ओर चल पड़ा और कोई उपाय सोचने लगा। रास्ते में उसे एक गहरा कुँआ मिला। कुँए में साफ पानी में उसे अपनी परछाई दिखाई दी। उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। तब तक, शेर अपनी गुफा से बाहर आ चुका था। खरगोश को देखकर वह जोर से दहाड़ने लगा।



खरगोश बोलने लगा, "महाराज, देरी के लिए क्षमा करें। देरी के लिए मैं या साथी जानवर दोषी नहीं हैं। आपके भोजन के लिए मेरे साथ चार और खरगोश भेजे गए थे, पर रास्ते में हम लोगों को एक बहुत शक्तिशाली शेर मिल गया। उसने हम लोगों को

रोक लिया और पूछने लगा कि कहाँ जा रहे हो। जब हमने उसे पूरी बात बताई तो वह बहुत गुस्सा होने लगा। वह कहने लगा कि वही जंगल का असली राजा है। वह तो आपको नकली राजा कहने लगा। उसने झपटकर चारों खरगोशों को पकड़कर खा लिया और मुझे आपके पास भेज दिया!"

शेर ने गुस्से में आकर जोर से दहाड़ मारी। "ये कौन नकली राजा आ गया है जो मेरी जगह लेना चाहता है?" वह हैरानी से बोला। "मुझे अभी उसके पास ले चलो!"

खरगोश उस शेर को कुँए के पास ले गया। "अंदर झाँकिए," वह बोला, "आपको कुँए के अंदर वह दूसरा शेर दिख जाएगा।" शेर ने कुँए में झाँककर देखा। उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी। वह समझा कि वही दूसरा शेर हैं। गुस्से में दहाड़ मारकर वह कुँए में कूद गया और डूबकर मर गया। चतुर खरगोश की जान बच गई।

कई बार बुद्धि के सहारे अपने से शक्तिशाली शत्रु को भी मात दी जा सकती है।



18 दुष्ट बिचौलिया

एक गौरैया ने एक पेड़ पर खाली छेद में अपना घर बनाया। एक दिन, वह भोजन की तलाश में निकली और फिर कई दिन तक नहीं लौटी।

इस बीच, एक खरगोश वहाँ आया और उसका घर खाली देखकर, उसमें रहने लगा।

काफी दिनों बाद गौरैया लौटी तो खरगोश ने वह घर खाली करने से इन्कार कर दिया।

गौरैया बोली, “चलो किसी से अपना फैसला करवाते हैं। वह जैसा कहेगा, हम दोनों वैसा ही करेंगे।”

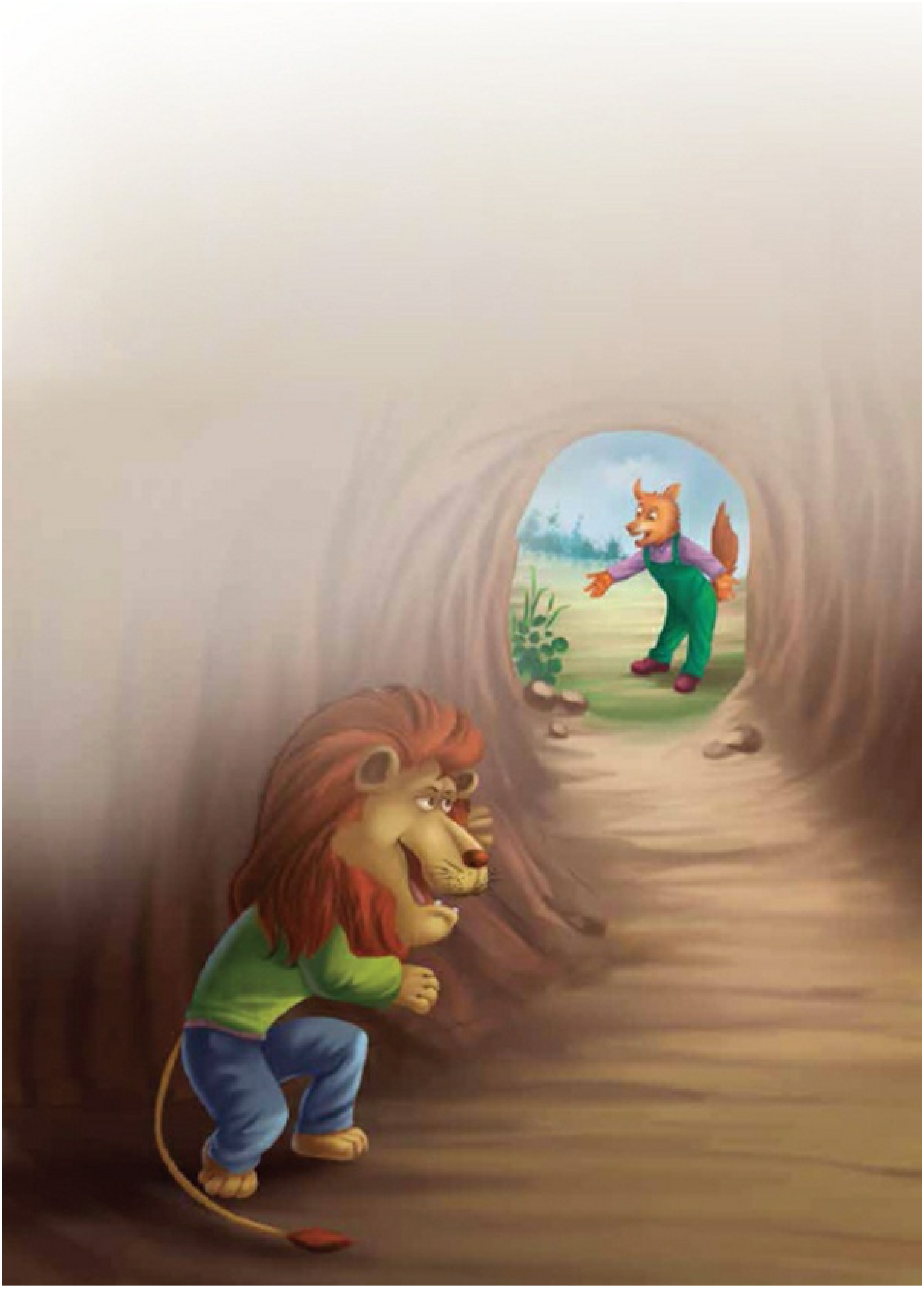
इस बीच, एक दुष्ट बिल्ली को उनके झगड़े के बारे में पता चल गया। वह उन दोनों के पास आ गई। दोनों ने उन्हें अपने झगड़े के बारे में बताया। बिल्ली बड़ी मीठी आवाज में बोली, “मैं बहुत बूढ़ी हो गई हूँ और ठीक से सुनाई नहीं देता। पास आकर अपनी बात समझाओ।” जब बेचारी गौरैया और खरगोश उसके पास आ गए, तो बिल्ली ने झपटकर दोनों को दबोच लिया और उन्हें मारकर खा गई! अगर तुम लोग भी लड़ोगे तो तुम्हारी शक्ति कम हो जाएगी और दूसरे इसका लाभ उठा ले जाएँगे।



19 बोलने वाली गुफा

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन वह आराम करने के लिए जगह तलाश कर रहा था, कि उसे एक बड़ी गुफा दिखाई दी। शेर ने अंदर देखा, उसे कोई नहीं दिखा। शेर को लग तो रहा था कि कोई न कोई तो इस गुफा में अवश्य रहता है, लेकिन उसे वह गुफा इतनी पसंद आई कि उसका मन उसी में रहने का करने लगा। वह गुफा एक सियार की थी। थोड़ी ही देर में शाम हो गई और सियार अपनी गुफा में आ गया। गुफा के बाहर उसे शेर के पैरों के निशान दिखाई दिए। सियार बहुत होशियार था। वह सतर्क हो गया। वह शेर का शिकार नहीं बनना चाहता था! गुफा में शेर है या नहीं, यह पता करने के लिए सियार ने एक चाल चली। वह जोर से चिल्लाया, “ओ गुफा! अगर तुमने रोज की तरह मुझसे बात नहीं की, तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।”

शेर ने सियार की आवाज सुनी तो उसके मन में लालच आ गया। उसने गुफा के बदले जवाब देने का निश्चय किया। उसने दहाड़ मार दी। शेर की दहाड़ सुनकर चतुर सियार समझ गया और जान बचाकर भाग गया।



20 बंदर और घंटी

एक बार जंगल में बंदरों के एक झुंड को एक घंटी पड़ी मिली। हर रात बंदर घंटी की मधुर धुन सुनने लगे।

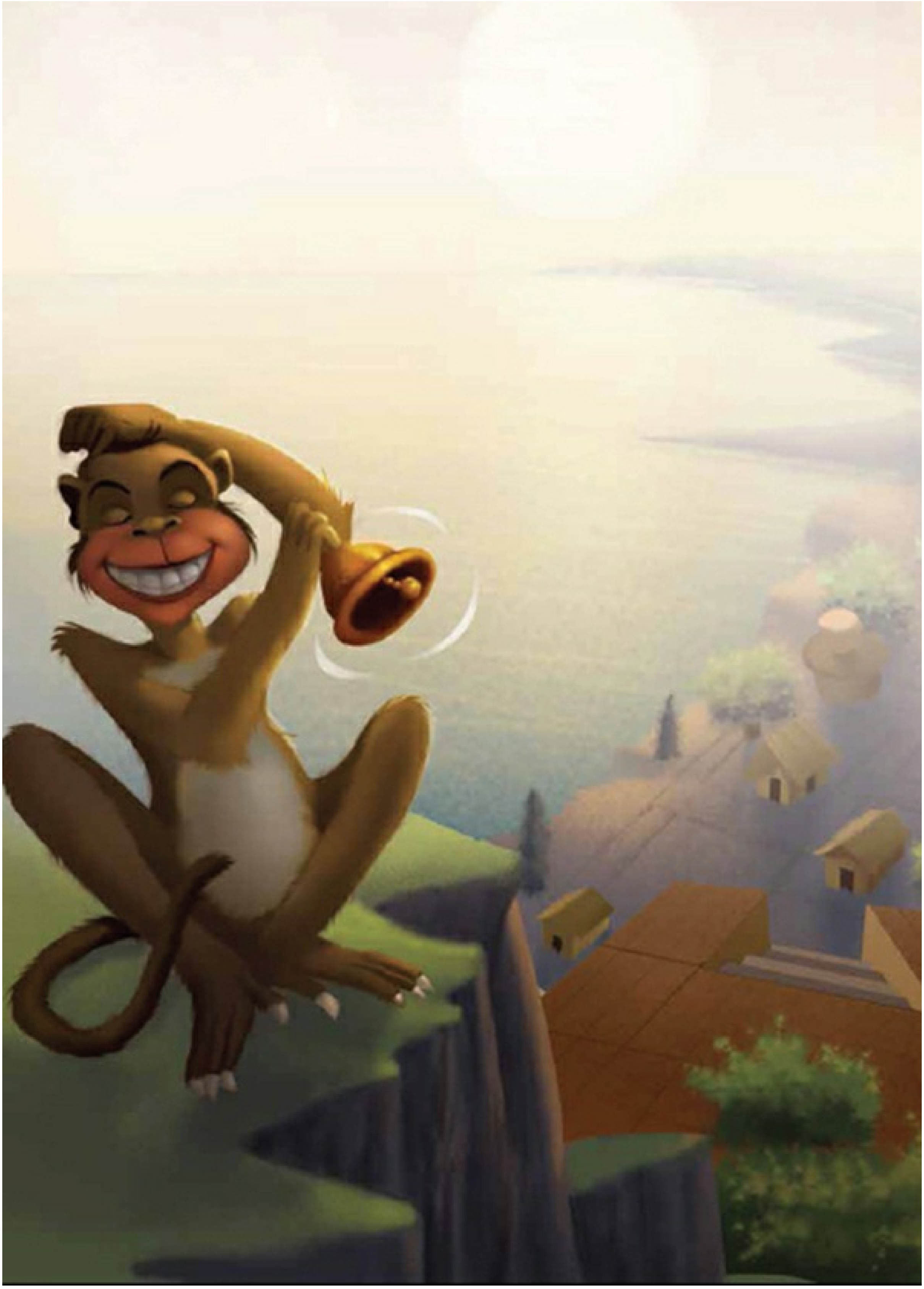
गाँव वाले घंटी की आवाज को डरावना मानकर उससे डरने लगे। तब गाँव की एक बुद्धिमान महिला जंगल गई और उसे असलियत का पता लग गया।

उसे पता लग गया कि बंदरों का एक झुंड ही घंटी बजाया करता है।

उस महिला ने जंगल में एक पेड़ के नीचे कुछ मूँगफली के दाने और फल रख दिए। इसके बाद वह महिला कुछ दूर बैठकर देखने लगी।

बंदरों ने घंटी छोड़ दी और पेड़ के नीचे रखे खाने के सामान पर झपट पड़े। उस महिला ने जल्दी से वह घंटी उठा ली और गाँव वापस आ गई। गाँव वालों ने उस महिला की बुद्धि की सराहना की।

मामूली बातों से किसी को घबराना नहीं चाहिए। बुद्धि और साहस से सारी परेशानियों का सामना किया जा सकता है।



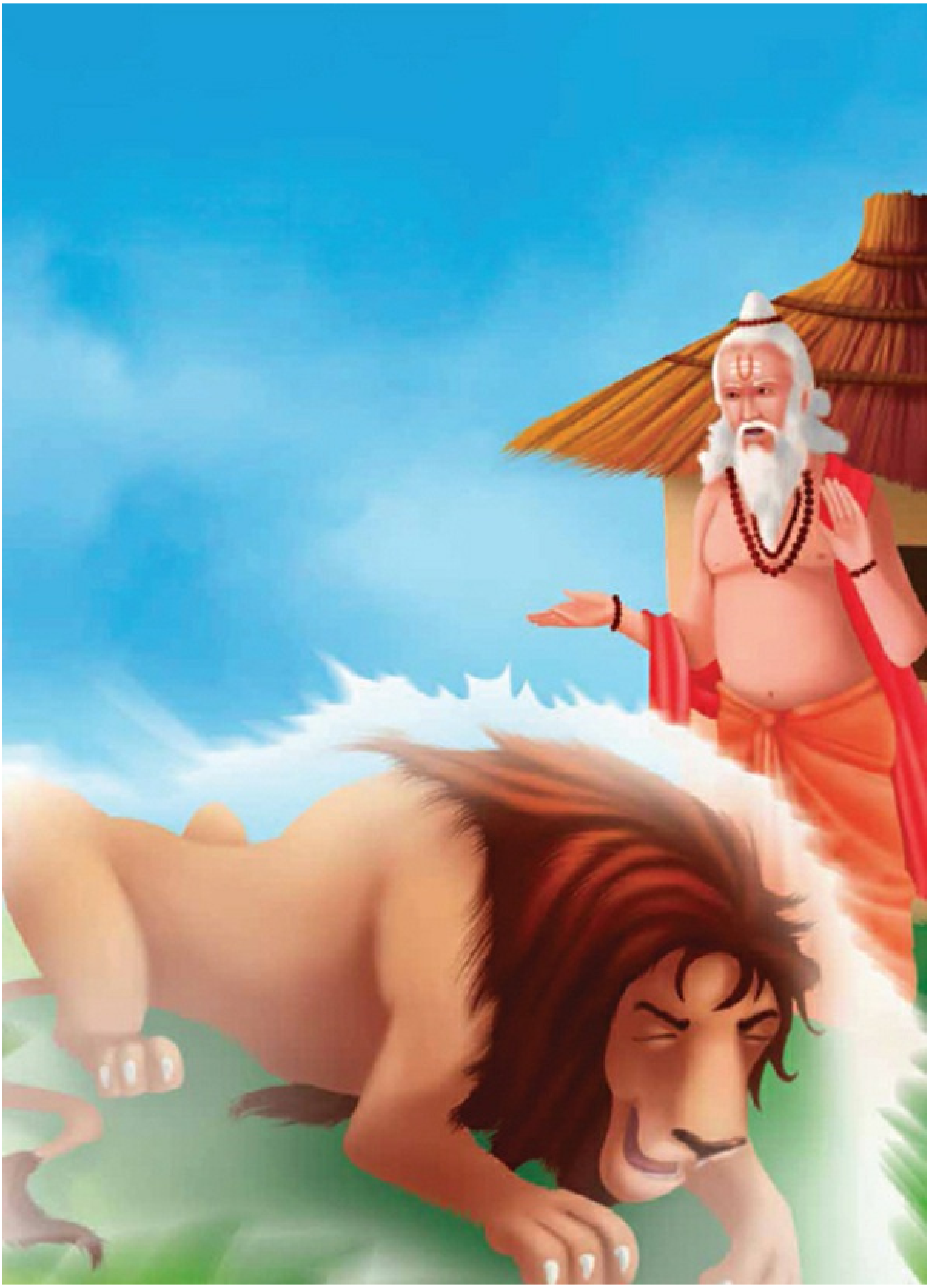
21 चूहा बन गया शेर

एक दिन, एक साधु ने देखा कि एक बिल्ली चूहे को खदेड़ रही थी। साधु ने अपनी अलौकिक शक्तियों से उस चूहे को बिल्ली बना दिया और उसकी जान बच गई। एक दिन उस बिल्ली के पीछे एक कुत्ता दौड़ पड़ा। अब साधु ने उसको कुत्ता बना दिया। एक बार, उस कुत्ते पर शेर ने हमला कर दिया। साधु ने तुरंत उस कुत्ते को शेर बना दिया।

जो गाँव वाले इस नए शेर का रहस्य जानते थे, वे उसका मजाक उड़ाते थे। उनके लिए वह एक पिद्दी-सा चूहा ही था, जो शेर बना फिरता था! अब इस शेर ने सोचा कि जब तक यह साधु जीवित रहेगा, सब लोग उसका ऐसा ही मजाक उड़ाते रहेंगे।

साधु ने इस शेर को अपनी ओर आते देखा, तो उसके इरादे समझ गया। साधु बोला, “जाओ, तुम फिर से चूहा ही बन जाओ। तुम अहसानफरामोश हो और शेर बनने लायक नहीं हो।”

और इस प्रकार वह शेर फिर से सिकुड़कर दुबारा चूहा बन गया।

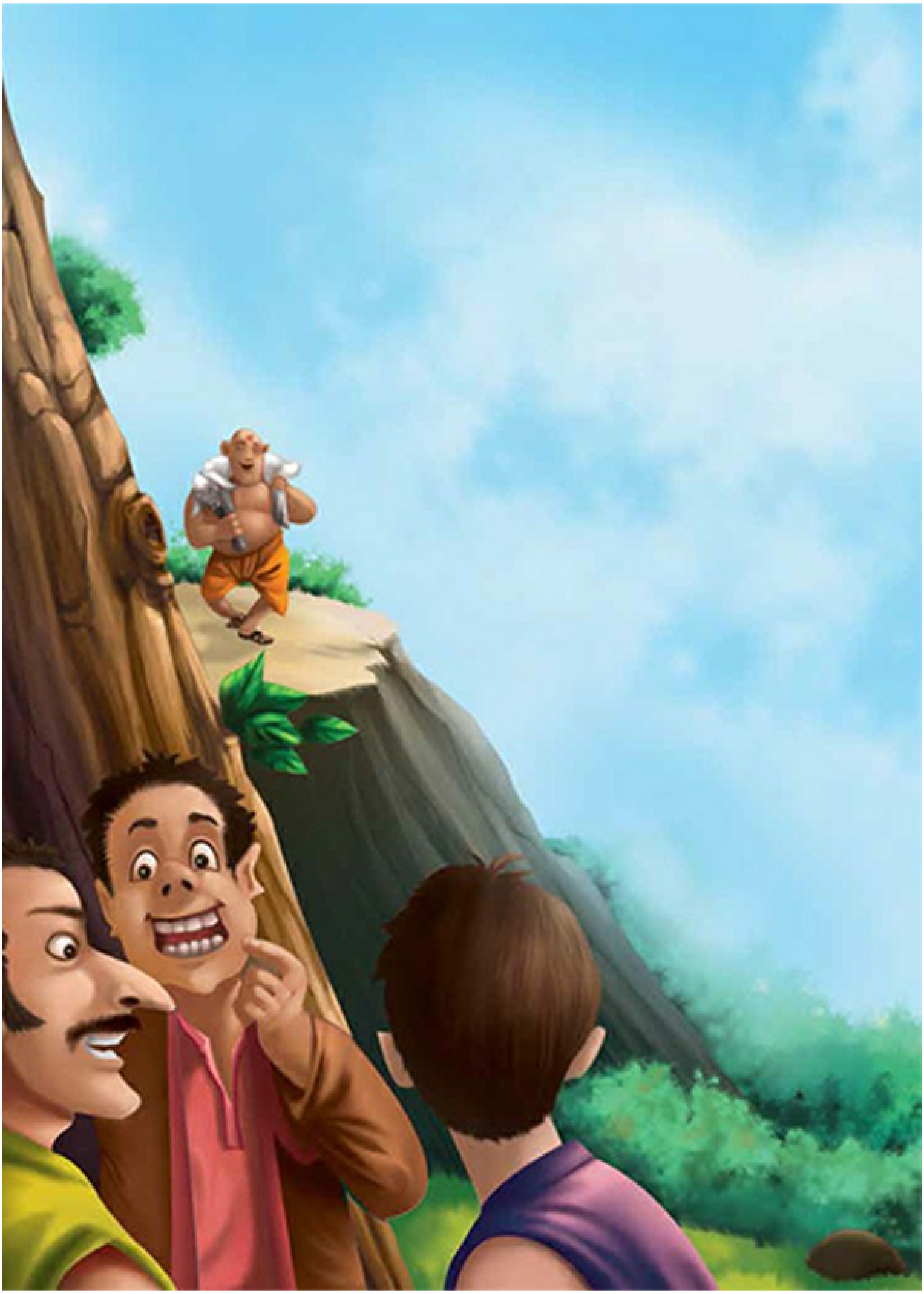


22 ब्राह्मण और बकरी

बहुत समय पहले एक ब्राह्मण रहता था। एक दिन वह कंधों पर बकरी लादकर अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे दो ठग मिल गए। उन ठगों का पूरा गिरोह था, जो योजना बनाकर लोगों को ठगा करता था। उनका सारा काम सुनियोजित हुआ करता था। जब ठगों ने बकरी लिए ब्राह्मण को देखा, तो वे उसकी बकरी ठग लेने के बारे में सोचने लगे। दिन का समय था, इसलिए छीनकर बकरी ले पाना संभव नहीं था क्योंकि सड़क पर बहुत सारे लोग आ-जा रहे थे।

हालाँकि, चोरों ने ब्राह्मण का पीछा करना जारी रखा और उसके किसी एकांत स्थान तक पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगे। बाजार से उसका घर काफी दूर था। कुछ दूर चलने के बाद ब्राह्मण को एक जंगल से भी गुजरना पड़ा। वहाँ पर रास्ता सुनसान था। ठगों ने सोचा कि यही जगह ब्राह्मण को ठगने के लिए ठीक रहेगी। उन्होंने योजना बना ली थी। दो ठग जंगल में अलग-अलग जगह खड़े हो गए, ताकि ब्राह्मण को यह न लगे कि वे एक साथ हैं।

ब्राह्मण की बकरी छीन लेने की उनकी योजना तैयार थी। उन्हें बस सही समय की प्रतीक्षा थी। उनमें से एक ठग रास्ते में ब्राह्मण के सामने आया और चेहरे पर आश्चर्य के भाव लाकर बोला, “अरे, इस गंदे कुत्ते को अपने कंधों पर क्यों लादे जा रहे हो?”



ब्राह्मण नाराज होने लगा। "अंधे हो क्या?" उसने ठग को डाँट दिया। "दिखाई नहीं देता कि मैं बकरी लिए जा रहा हूँ?"

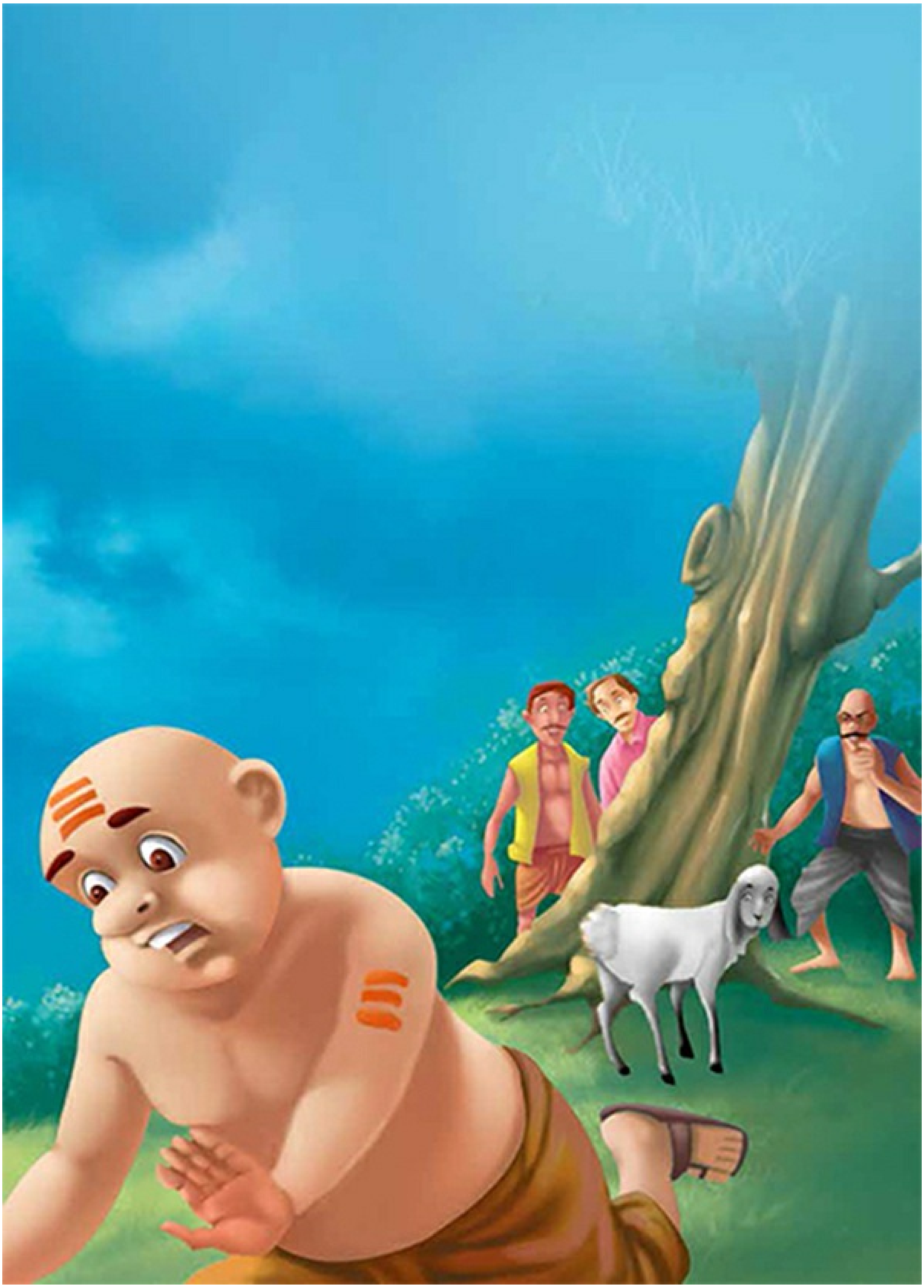
"मुझे तो बकरी नहीं, कुत्ता दिख रहा है," ठग ने जवाब दिया। ब्राह्मण अपनी

बकरी को ध्यान से देखने लगा। उसने बकरी का चेहरा और शेष शरीर देखा, फिर ठग से कहा, "मुझे पूरा विश्वास है कि यह बकरी ही है, कुत्ता नहीं। या तो तुमने कभी बकरी देखी नहीं, या तुम पागल हो गए हो। जो भी हो, मुझे घर जाने दो।" ब्राह्मण कुछ भ्रमित-सा आगे चल पड़ा। तभी दूसरा ठग सामने आ गया और कहने लगा, "हे भगवान! अपने कंधों पर इस मरे हुए बछड़े को क्यों लिए जा रहे हो?"

ब्राह्मण इस बार और अधिक भ्रमित हो गया। उसे अपने आप पर ही विश्वास नहीं रहा।

"हो न हो, इस जानवर में कुछ तो विशेष बात है!" ब्राह्मण के अंदर डर की भावना पैदा हो गई। "शायद यह कोई प्रेत है, जो अपना रूप बदल रहा है।" उसने बकरी को वहीं नीचे उतार दिया और तेजी से चलता हुआ अपने घर आ गया। ठगों ने तुरंत बकरी को पकड़ लिया और अपने साथ ले गए।

हर किसी को अपनी स्वयं की बुद्धि पर ही विश्वास करना चाहिए।



23 आलसी हिरन

एक दिन एक हिरनी अपने बेटे को एक बुद्धिमान हिरन के पास लेकर गई और उससे बोली, “मेरे बुद्धिमान भाई, कृपया मेरे बेटे को भी अपनी जान बचाने की कुछ तरकीबें सिखा दो, ताकि वह कभी संकट में फँसे तो अपनी जान बचा सके।” बड़ा हिरन मान गया। छोटा हिरन बहुत शैतान था और उसका मन दूसरे बच्चों के साथ खेलने में ही लगा रहता था। जल्द ही, वह कक्षा से गायब रहने लगा और उसने बचाव की कोई तरकीब नहीं सीखी। एक दिन, खेलते-खेलते वह एक जाल में फँस गया। जब उसकी माँ को यह पता चला तो वह बहुत रोई। बड़ा हिरन उसके पास गया और उससे बोला, “प्यारी बहना, मुझे दुख है कि तुम्हारा बच्चा जाल में फँस गया। मैंने उसे सिखाने की बहुत कोशिश की थी, लेकिन वह कुछ सीखना ही नहीं चाहता था। अगर कोई विद्यार्थी सीखना ही नहीं चाहे तो शिक्षक उसे कैसे सिखा सकता है।”



24 जादुई मुर्गी

एक दिन, एक निर्धन व्यक्ति एक किसान के पास गया और एक मुर्गी के बदले, उससे एक बोरी चावल ले आया।

किसान की पत्नी को जब पता चला कि उसके पति ने एक साधारण मुर्गी के बदले बोरी भर चावल दे दिए तो वह बहुत नाराज हुई।

हालाँकि, अगले दिन, सुबह किसान की पत्नी मुर्गी के पास गई तो उसे एक सोने का अंडा मिला।

जादुई मुर्गी हर दिन सोने का एक अंडा देने लगी। कई सप्ताह तक ऐसा चलता रहा। जल्द ही वह किसान गाँव में सबसे धनी हो गया।

हालाँकि किसान की लालची पत्नी इससे संतुष्ट नहीं थी। एक दिन जब किसान घर पर नहीं था, तो वह एक बड़ा चाकू ले आई और मुर्गी का पेट काट डाला। वह सोच रही थी कि मुर्गी के पेट से एक साथ सारे सोने के अंडे मिल जाएँगे। जब उसे एक भी अंडा नहीं मिला तो उसे बहुत निराशा हुई। अब उसे हर दिन जो अंडा मिलता था, वह उससे भी हाथ धो बैठी।



25 गधा और धोबी

एक निर्धन धोबी था। उसके पास एक गधा था। गधा काफी कमजोर था क्योंकि उसे बहुत कम खाने-पीने को मिल पाता था।

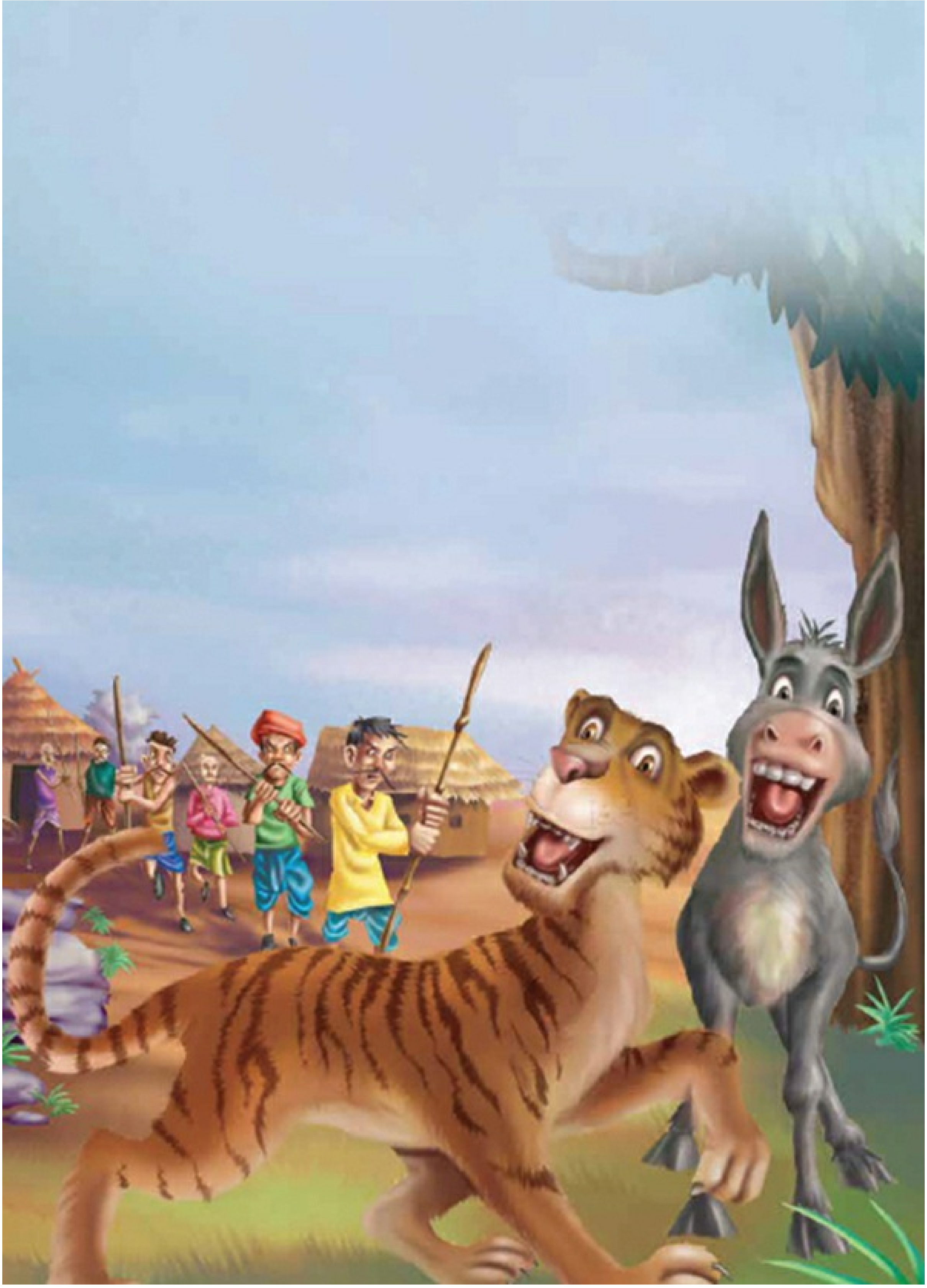
एक दिन, धोबी को एक मरा हुआ बाघ मिला। उसने सोचा, "मैं गधे के ऊपर इस बाघ की खाल डाल दूँगा और उसे पड़ोसियों के खेतों में चरने के लिए छोड़ दिया करूँगा। किसान समझेंगे कि वह सचमुच का बाघ है और उससे डरकर दूर रहेंगे और गधा आराम से खेत चर लिया करेगा।"

धोबी ने तुरंत अपनी योजना पर अमल कर डाला। उसकी योजना काम कर गई।

एक रात, गधा खेत में चर रहा था कि उसे किसी गधी की रेंकने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर वह इतने जोश में आ गया कि वह भी जोर-जोर से रेंकने लगा।

गधे की आवाज सुनकर किसानों को उसकी असलियत का पता लग गया और उन्होंने गधे की खूब पिटाई की!

इसीलिए कहा गया है कि अपनी सच्चाई नहीं छिपानी चाहिए।



26 चतुर किसान

एक बार एक किसान एक बकरी, घास का एक गट्ठर और एक शेर को लिए नदी के किनारे खड़ा था। उसे नाव से नदी पार करनी थी लेकिन नाव बहुत छोटी थी कि वह सारे सामान समेत एक बार में पार नहीं जा सकता था। वह अगर शेर को पहले ले जाकर नदी पार छोड़ आता है तो इधर बकरी घास खा जाएगी और अगर घास को पहले नदी पार ले जाता है तो शेर बकरी को खा जाएगा।

अंत में उसे एक समाधान सूझ गया। उसने पहले बकरी को साथ में लिया और नाव में बैठकर नदी के पार छोड़ आया। इसके बाद दूसरे चक्कर में उसने शेर को नदी पार छोड़ दिया लेकिन लौटते समय बकरी को फिर से साथ ले आया।

इस बार वह बकरी को इसी तरफ छोड़कर घास के गट्ठर को दूसरी ओर शेर के पास छोड़ आया। इसके बाद वह फिर से नाव लेकर आया और बकरी को भी ले गया।

इस प्रकार, उसने नदी पार कर ली और उसे कोई हानि भी नहीं हुई।



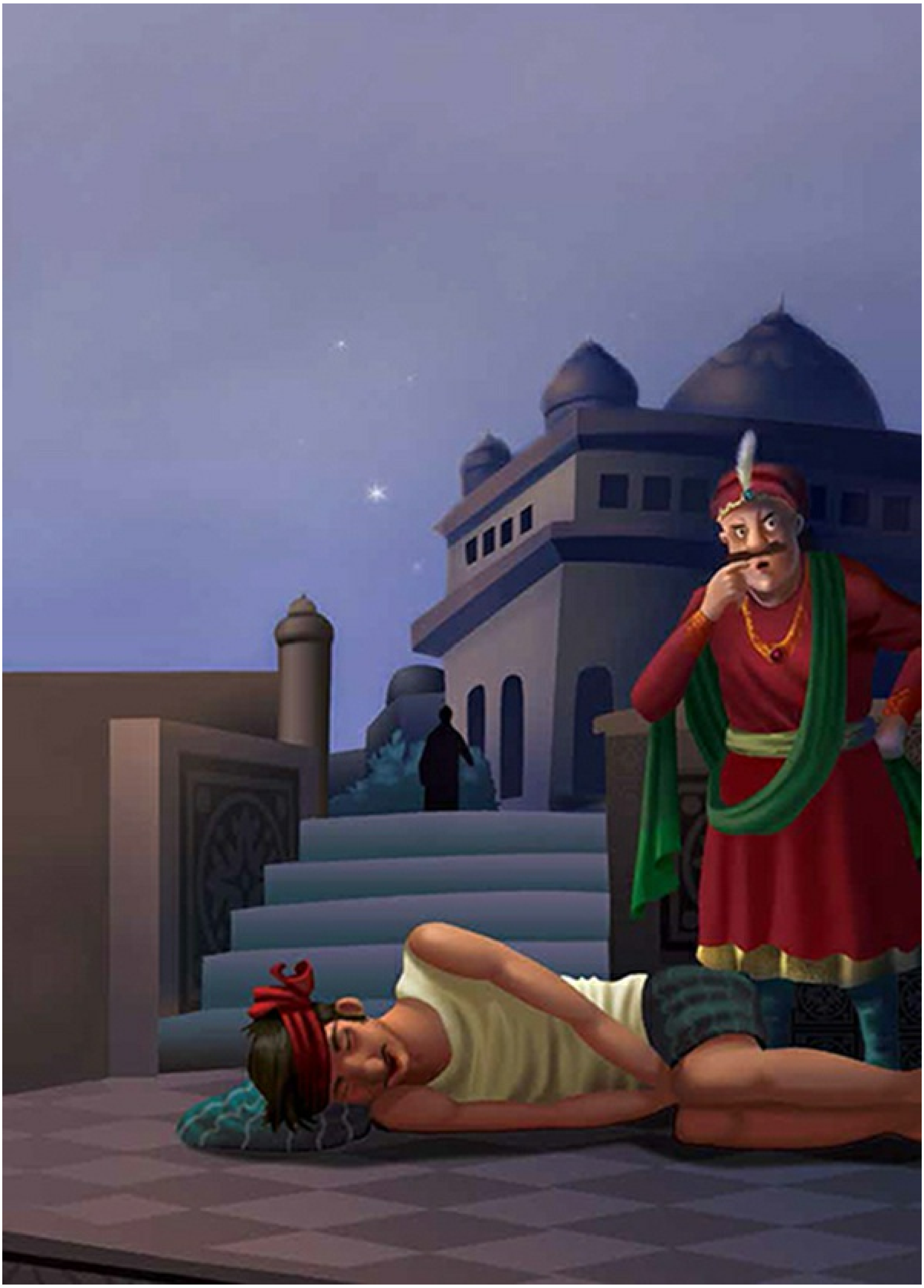
27 बुद्धिमान मंत्री

एक बार की बात है। एक रियासत के मंत्री ने राजा को अपनी बेटी के विवाह समारोह में निमंत्रित किया। जब राजा अपने परिवार के साथ विवाह समारोह में पहुँचा, तो मंत्री उन्हें सम्मानपूर्वक विशिष्ट आसन पर बैठाने ले गयो, तो मंत्री यह देखकर बहुत लज्जित हुआ कि एक सफाईकर्मी वहाँ बैठा हुआ था। उसने सफाईकर्मी को सभी के सामने वहाँ से उठा फेंका और उसे बहुत डाँटा। सफाईकर्मी ने बहुत अपमानित महसूस किया और बदला लेने की योजना बनाने लगा। अगले दिन, सुबह वह जब वह राजा का कक्ष साफ कर रहा था, तभी वह जानबूझकर बड़बड़ाया, “राजा कितने नादान हैं। उन्हें यह पता ही नहीं कि रानी और मंत्री के बीच क्या चल रहा है।” राजा आधी नींद में था। “यह क्या बकवास कर रहे हो?” उसने पूछा। “महाराज, मैं पूरी रात सो नहीं पाया। मैं तो नींद में बड़बड़ा रहा था,” सफाईकर्मी जवाब में बोला। हालाँकि, उसकी बात सुनकर राजा के मन में संदेह के बीज पड़ गए थे। राजा अब मंत्री से चिढ़ने लगा और समय-समय पर अपमानित करने लगा। एक दिन तो उसने द्वारपालों से यह तक कह दिया कि वे मंत्री को महल में घुसने ही न दें।

मंत्री राजा के व्यवहार से बहुत चकित था, लेकिन कुछ विचार करने के बाद उसे समझ में आ गया कि सफाईकर्मी ही इसके लिए जिम्मेदार हो सकता है। “मैंने उसका अपमान किया था और उसी का उसने बदला लिया है। अब मुझे उसे दुबारा प्रसन्न करना होगा, तभी वह राजा की निगाह में मेरा सम्मान दुबारा दिला सकता है,” मंत्री ने सोचा। एक दिन उसने सफाईकर्मी को अपने घर भोजन पर आने का निमंत्रण दिया और कहा, “मेरे दोस्त, मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारा अपमान किया था। मुझे गलती का अहसास हो गया है। इन सुंदर कपड़ों को उपहार के रूप में ग्रहण करो। चलो, मेरे साथ भोजन करो।” सफाईकर्मी प्रसन्न हो गया। वह सोचने लगा, “मंत्री तो अच्छा आदमी है। मैंने ही उस दिन गलती कर दी थी।” अब सफाईकर्मी प्रसन्न था और प्रयास करने लगा कि मंत्री के बारे में राजा की धारणा बदल जाए। एक बार जब वह राजा के कक्ष में गया तो राजा सो रहा था। वह बड़बड़ाने लगा, “अरे, राजा का तो दासी के साथ प्रेम संबंध है। बड़ी लज्जा की बात है! ” राजा ने उसका बड़बड़ाना सुना तो उठकर बैठ गया। राजा ने सफाईकर्मी को बहुत डाँटा। सफाईकर्मी बोला, “क्षमा कर दें महाराज, मैं पूरी रात सो नहीं पाया। इसलिए दिन में ही नींद में बड़बड़ा रहा था।”



राजा को अपनी गलती समझ में आ गई। इस तरह की अफवाह के चक्कर में आकर उसने अपने बहुत अच्छे सलाहकार की अनदेखी शुरू कर दी थी। राजा ने मंत्री को बुलाया और दोनों फिर से मित्र बन गए।



28 हाथी और गौरैया

एक दिन, एक जंगली हाथी ने एक पेड़ की डाली तोड़ी, जिससे उस पर बना गौरैया का घोंसला टूट गया और उसमें रखे अंडे फूट गए।

गौरैया का रोना सुनकर एक कठफोड़वा वहाँ आया और उससे रोने का कारण पूछने लगा। गौरैया ने उसे सारी बात बताई। कठफोड़वा बोला, "चलो, मक्खी की सलाह लेते हैं।" वे मक्खी के पास गए और उसे गौरैया की दर्द भरी कहानी सुनाई। मक्खी ने मेंढक की सहायता लेने की सलाह दी।

गौरैया, कठफोड़वा और मक्खी, तीनों मेंढक के पास गए और उसे पूरी बात बताई।

मेंढक बोला, "हम सब एकजुट हो जाएँ तो हमारे सामने हाथी क्या कर लेगा? जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो। मक्खी, तुम दोपहर में हाथी के पास जाना और उसके कानों में कोई मीठी-सी धुन सुनाना। जब वह धुन में मग्न होकर अपनी आँखें बंद कर ले तो कठफोड़वा उसकी आँखें फोड़ देगा। वह अंधा हो जाएगा और जब उसे प्यास लगेगी तो वह पानी की खोज करेगा। तब मैं दलदल के पास जाकर वहाँ से टर्र-टर्र करने लगूँगा। वह समझेगा कि वहाँ पानी है और वह वहीं पहुँच जाएगा और दलदल में फँसकर मर जाएगा।"

चारों ने मेंढक की योजना के अनुसार अपने-अपने काम अच्छी तरह से किए और बिना सोचे-समझे काम करने वाला हाथी मारा गया।



29 एकता में ही बल है

एक बार की बात है। कबूतरों का एक झुंड था। अपने राजा के साथ वह भोजन की तलाश में इधर-उधर उड़ता रहता था। एक दिन, वे सारे कबूतर एक जाल में फँस गए। उन्होंने जाल से छूटने की बहुत कोशिश की लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली।

कबूतरों के राजा के मन में एक विचार आया। उसने सारे कबूतरों से कहा कि अगर वे सभी एक साथ उड़ने के लिए बल लगाएँ तो वे जाल को साथ में लेकर उड़ सकते हैं। सारे कबूतरों ने उसकी बात मानी और पूरा बल लगाकर जाल को साथ ले उड़े।

शिकारी ने जब कबूतरों को जाल के साथ ही उड़ते देखा तो वह हैरान रह गया।

कबूतर उड़ते-उड़ते एक चूहे के पास पहुँचे। चूहा उनका विश्वसनीय मित्र था। चूहे ने तुरंत ही अपने दाँतों से जाल काट दिया और सारे कबूतर मुक्त हो गए।



30 मेंढक और साँप

एक साँप ने एक झील में रहने वाले सारे मेंढकों को खा जाने की योजना बनाई। साँप ने मेंढकों से कहा, “एक ब्राह्मण के शाप के कारण मैं तुम लोगों की सेवा करने यहाँ आया हूँ।”

मेंढकराज बहुत उत्साहित हुआ और उसने सारे मेंढकों को यह बात बताई।

सारे मेंढक उछलकर साँप की पीठ पर चढ़कर सवारी करने निकल पड़े।

अगले दिन, साँप बोला, “मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं है। मैं तेजी से रेंग तक नहीं पा रहा हूँ।” मेंढकराज बोला, “तुम अपनी पूँछ पर सबसे पीछे बैठे सबसे छोटे मेंढक को खा सकते हो।”

साँप ने वैसा ही किया।

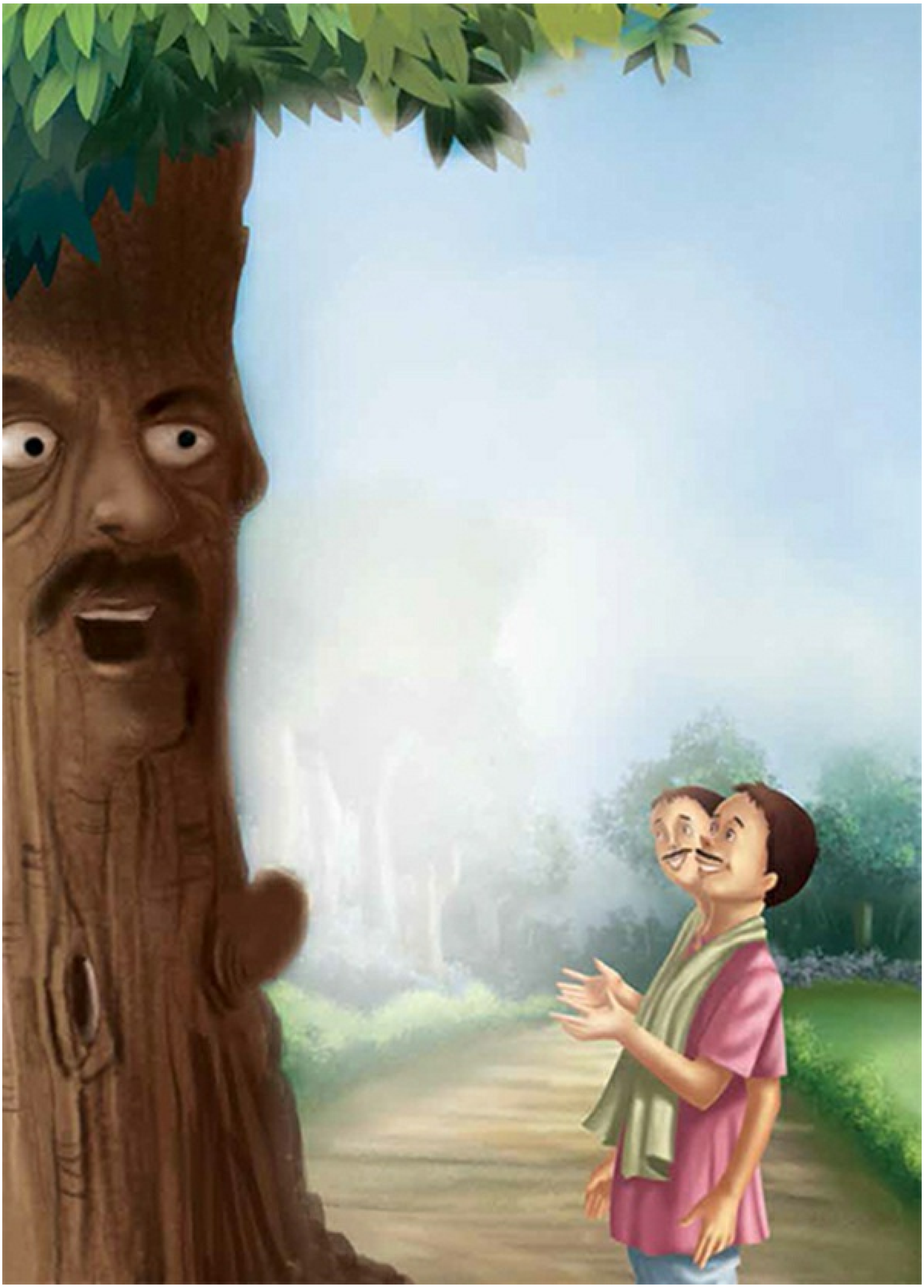
कुछ दिनों में साँप एक-एक करके सारे मेंढकों को खा गया। केवल मेंढकराज ही बचा।

अगले दिन, मेंढकराज फिर बोला, “तुम अपनी पूँछ पर सबसे पीछे बैठे एक मेंढक को खा सकते हो,” साँप तुरंत उसको ही खा गया।



31 दो सिर वाला जुलाहा

एक दिन, जब एक जुलाहा कपड़ा बुन रहा था, तभी उसका लकड़ी का बना करघा टूट गया। उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और किसी लकड़ी की तलाश में निकल पड़ा ताकि उसकी सहायता से वह अपना करघा ठीक कर सके। उसे एक बड़ा पेड़ दिखा तो वह सोचने लगा, “अगर मैं इस पेड़ को काट लूँ, तो मुझे बहुत सारी लकड़ी मिल जाएगी और उससे मैं बुनाई के सारे औजार बना लूँगा।” उसने कुल्हाड़ी उठाई और पेड़ को काटना शुरू किया। तभी उस पेड़ पर रहने वाला प्रेत बोल पड़ा, “यह पेड़ मेरा घर है। मैं तुमसे इसे छोड़ देने की विनती करता हूँ।” जुलाहे ने जवाब दिया, “मेरे पास इस पेड़ को काटने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।” प्रेत ने अनुरोध किया, “मैं जादुई प्रेत हूँ। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकता हूँ, बस, इस पेड़ को मत काटो। तुम जो भी वरदान माँगोगे, वह मैं तुम्हें दूँगा!” जुलाहा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। पेड़ पर रहने वाला प्रेत उसकी हर तरह की इच्छा पूरी करने का वचन दे रहा था। हालाँकि, उसने अत्यधिक होशियारी दिखाते हुए, प्रेत से कहा, “मुझे इस बारे में अपनी पत्नी से बात करनी पड़ेगी। तुम प्रतीक्षा करो। मैं अभी आता हूँ।”



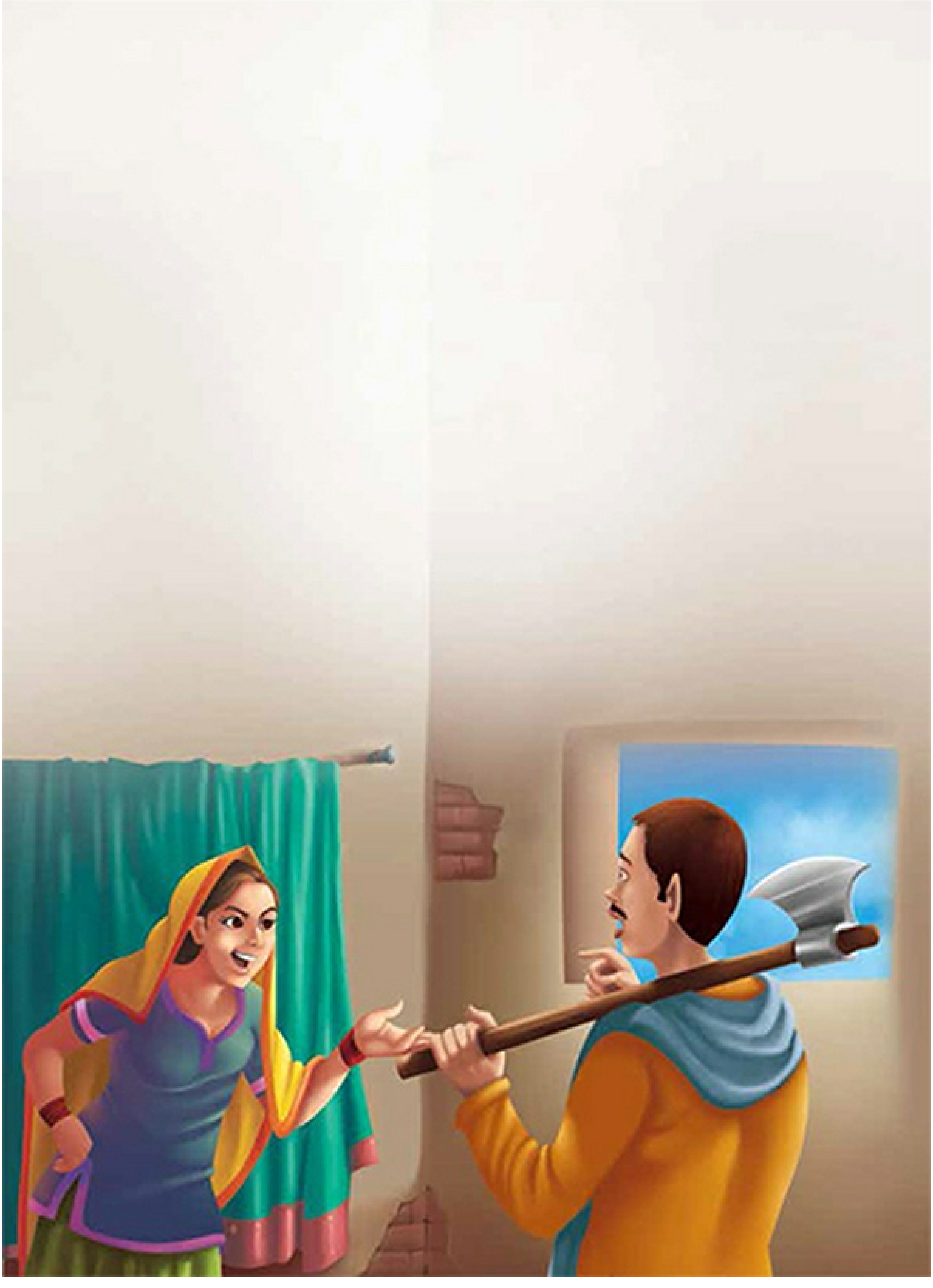
इतना कहकर वह जल्दी से अपनी पत्नी के पास राय लेने के लिए भागा।

रास्ते में उसे एक मित्र मिला। मित्र से भी उसने सलाह ली। मित्र ने कहा, “इस अवसर को मत गँवाओ। तुम उससे राज्य माँग लो। तुम राजा बनकर रहना और राजसी

सुख-सुविधाओं का आनंद उठाना।" जुलाहे को यह सुझाव पसंद तो आया लेकिन उसने प्रेत से यह वरदान माँगने से पहले एक बार पत्नी से सलाह लेने का निश्चय किया। वह बोला, "मुझे अपनी पत्नी से भी सलाह लेनी चाहिए।" वह जल्दी से अपनी पत्नी के पास गया और उसे पूरी बात बताई। जुलाहे की पत्नी ने शीघ्रता से जवाब दिया, "तुम्हारे मित्र ने बिलकुल मूर्खतापूर्ण सलाह दी है। उसकी सलाह पर ध्यान मत दो।" वह आगे बोली, "तुम तो वरदान में एक और सिर, और एक जोड़ी हाथ और माँग लो। तब तुम एक साथ दो कपड़े बुन सकोगे। अपने हाथों के कौशल की बदौलत जल्द ही तुम्हारा बहुत नाम हो जाएगा और तुम धनी हो जाओगे।!"

मूर्ख जुलाहा प्रसन्न हो गया और बोला, "मैं ऐसा ही करूँगा। तुम मेरी पत्नी हो और मुझे विश्वास है कि सबसे अच्छी सलाह तुम्हीं दे सकती हो।" जुलाहा लौटकर प्रेत के पास गया और उससे बोला, "मुझे एक जोड़ी हाथ और दे दो। साथ ही एक सिर और दे दो।" जैसे ही उसके मुँह से यह बात निकली, वैसे ही उसके एक और सिर उग आया, साथ ही दो अतिरिक्त हाथ भी निकल आए।

जुलाहा प्रसन्न होकर अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे गाँव वाले मिले। गाँव वालों ने दो सिर और चार हाथ वाला मनुष्य देखा तो वे डर गए। वे समझे कि यह कोई राक्षस आ गया है। सारे लोगों ने मिलकर उसे घेर लिया और उसे पीट-पीटकर मार डाला। मूर्खतापूर्ण सलाह मानने के कारण बेचारे जुलाहे को अपनी जान गँवानी पड़ गई।



32 हंस और उल्लू

बहुत समय पहले, एक झील के किनारे एक हंस रहता था। एक उल्लू भी वहीं आकर रहने लगा। वे दोनों साथ में खुशी-खुशी रहने लगे।

जब गर्मियों का मौसम आया, तो उल्लू वापस अपने घर जाने के बारे में सोचने लगा। उसने हंस से भी साथ चलने को कहा। हंस बोला, “जब नदी सूख जाएगी, तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा।”

जब नदी सूख गई तो हंस उल्लू के पास उसके बरगद के पेड़ पर पहुँच गया। हंस जल्दी सो जाता था।

तभी कुछ राहगीर वहाँ से निकले और आराम करने के लिए उसी पेड़ के नीचे बैठ गए।

उन राहगीरों को देखकर, उल्लू जोर से चिल्लाया। राहगीरों ने इसे अपशकुन माना और उल्लू पर तीर से निशाना मार दिया। उल्लू को तो अंधेरे में दिखता था, इसलिए वह तीर से बच गया और उड़ गया। उसके बदले में वह तीर हंस को लग गया और वह मर गया!

इसी कारण सही कहा गया है कि नई जगह पर हमेशा सतर्क रहना चाहिए।



33 दो सिर वाला पक्षी

भरुंड नाम का एक दो सिर वाला पक्षी था। एक दिन, उसे एक सुनहरा फल मिला। पहला सिर उस सुनहरे फल को खाने लगा। उसे वह फल बहुत स्वादिष्ट लगा। दूसरा सिर बोला, “मुझे भी यह फल खाने दो।” पहले सिर ने जवाब दिया, “हमारा पेट तो एक ही है। चाहे जो भी सिर खाए, जाएगा तो वह पेट में ही।”

एक दिन बाद, दूसरे सिर को विषैले फलों वाला एक पेड़ मिला। उसने वह विषैला फल लिया और पहले वाले सिर से बोला, “मैं यह विषैला फल खाऊँगा और तुमसे बदला लूँगा।” पहला सिर चिल्लाने लगा,

“अरे, इस फल को मत खाओ। अगर तुमने यह फल खाया तो हम दोनों ही मर जाएँगे।” हालाँकि, दूसरे सिर ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और वह विषैला फल खा गया।

इस प्रकार, दोनों को अपनी जान गँवानी पड़ी।



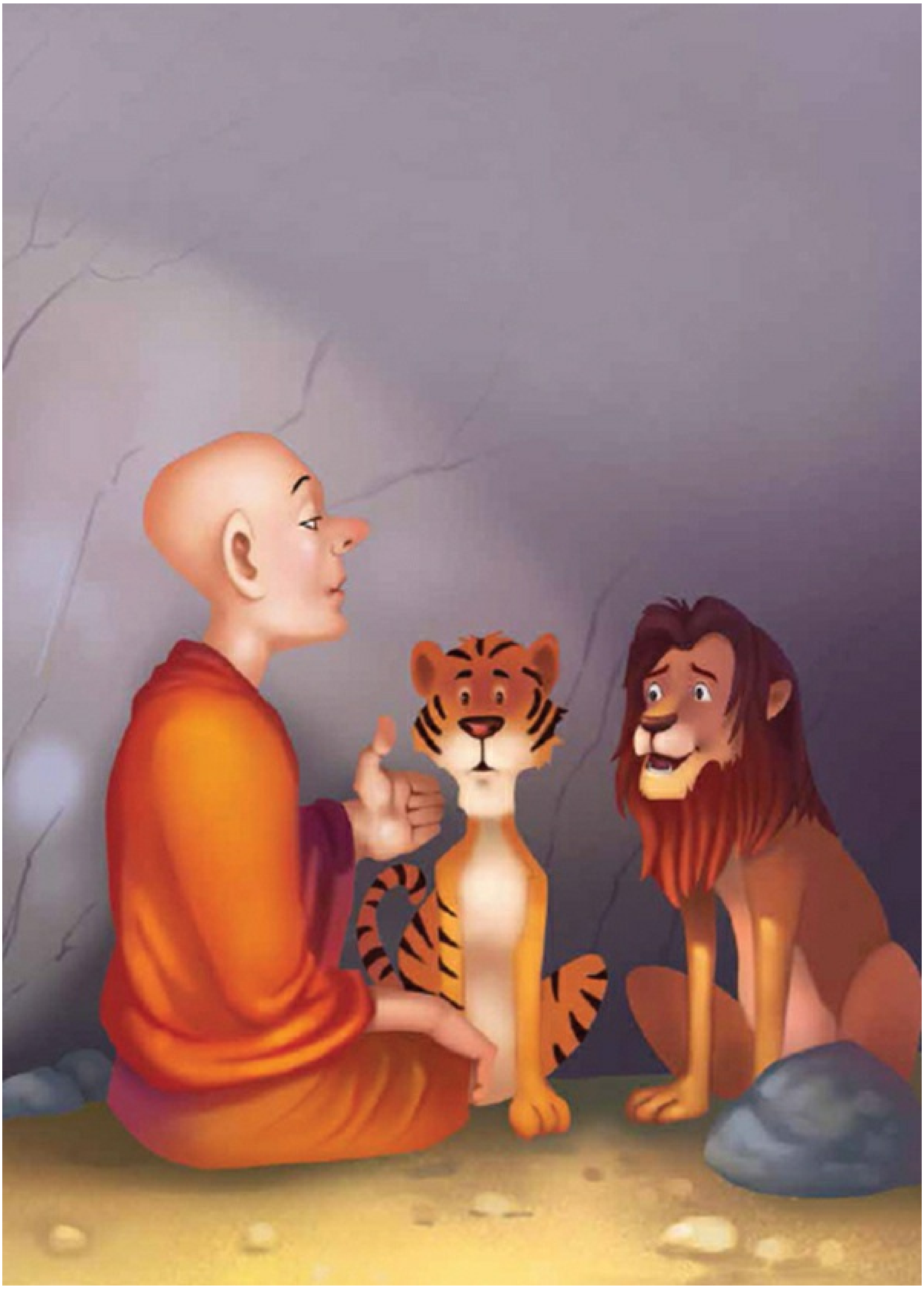
34 हवा और चंद्रमा

एक शेर और एक बाघ अच्छे दोस्त थे और साथ में रहते थे। पास में ही एक साधु रहता था।

एक दिन, बाघ बोला, "जब चंद्रमा छोटा होता जाता है, तो सर्दियाँ आने लगती हैं।" शेर ने जवाब दिया, "तुम मूर्ख हो, जब चंद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूरी तरह से विकसित हो जाता है, तब सर्दियाँ आती हैं।"

सही उत्तर जानने के लिए वे दोनों दोस्त साधु के पास गए।

साधु बोला, "चंद्रमा की किसी भी स्थिति में सर्दी हो सकती है, चाहे उसका आकार बढ़ रहा हो अथवा कम रहा हो। सर्दी तो हवा की वजह से होती है, अब चाहे वह पश्चिम दिशा से आए, उत्तर दिशा से आए या पूर्व दिशा से आए। इस प्रकार, तुम दोनों ही सही हो।" साधु ने यह भी बताया, "सबसे महत्वपूर्ण बात बिना झगड़े के और एकजुट होकर रहना है।" उसके बाद दोनों अच्छे दोस्तों की तरह प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। मौसम तो आते-जाते रहे, पर उनकी दोस्ती हमेशा बनी रही।



35 डॉल्फिन और नन्हीं मछली

डॉल्फिनों और व्हेलों के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था। जब झगड़ा बहुत ज्यादा बढ़ गया तो एक नन्हीं सी मछली ने दोनों पक्षों में सुलह कराने की कोशिश की।

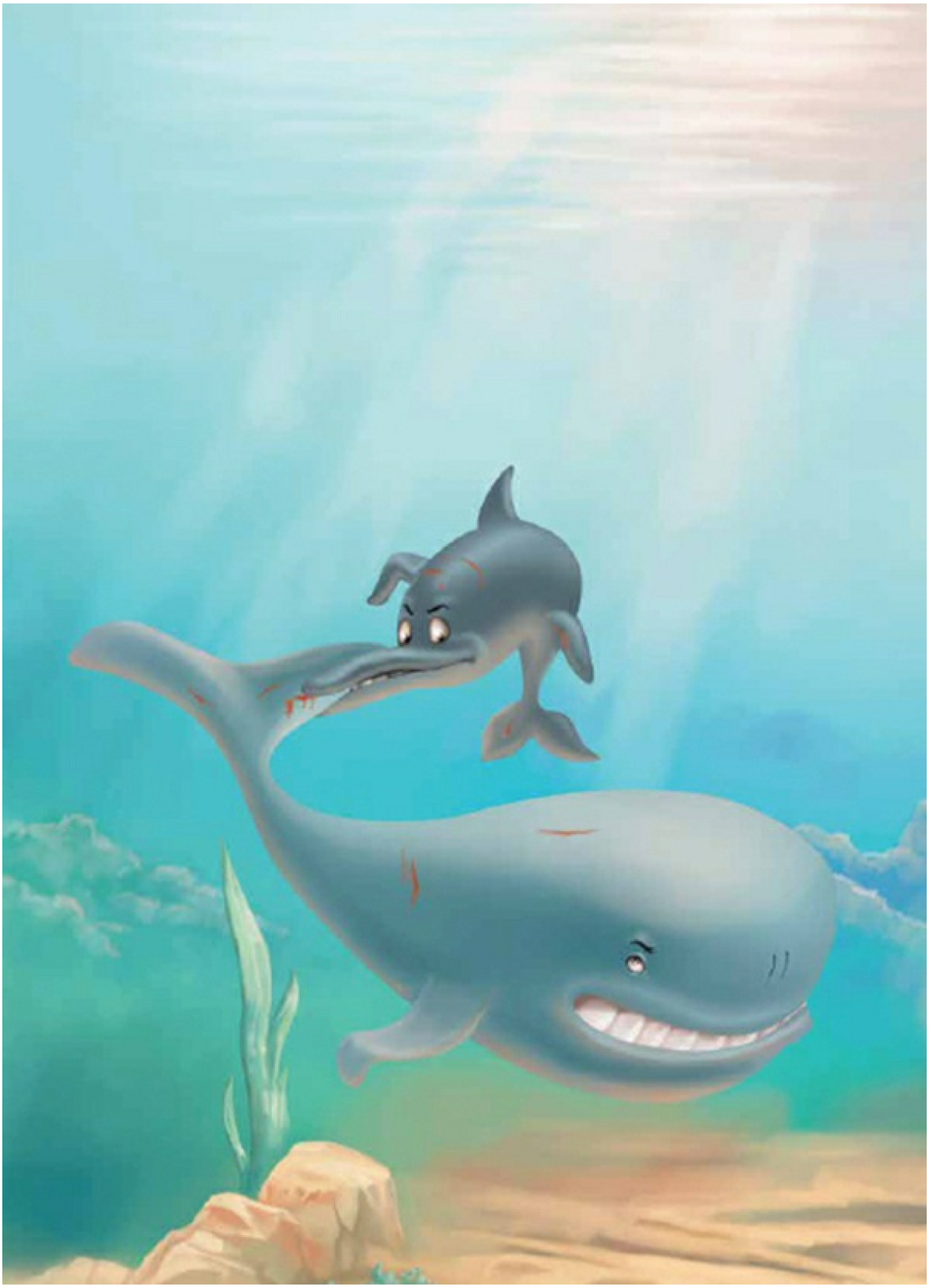
हालाँकि डॉल्फिनों ने नन्हीं मछली से कोई भी सहायता लेने से इन्कार कर दिया। आश्चर्यचकित मछली ने इसका कारण जानना चाहा।

इस पर एक डॉल्फिन चिल्लाकर बोली, "दूर रहो। हम तुम्हारी जैसी छोटी-सी मछली से सुलह करवाने के बजाय मर जाना पसंद करेंगे। तुम्हारी हमारे सामने क्या बिसात!"

नन्हीं मछली को बहुत बुरा लगा और वह वहाँ से चली गई।

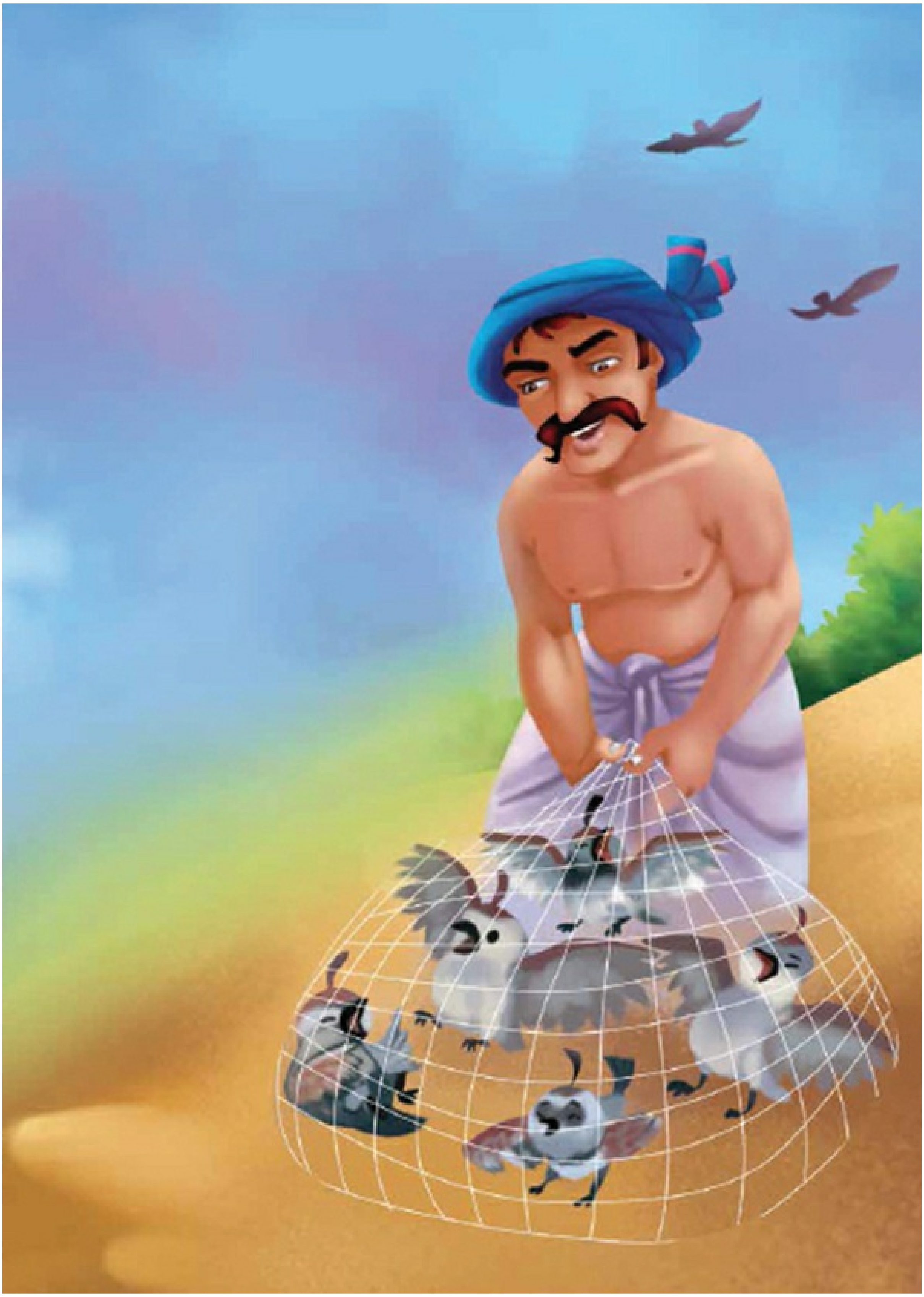
डॉल्फिनें लड़ती रहीं और सारी बहुत बुरी तरह से घायल हो गईं। एक-एक करके जब वे मरने लगीं, तब भी उनके चेहरे से घमंड झलक रहा था।

घमंडी लोग किसी भी तरह की हानि सह सकते हैं लेकिन अपने से नीचे स्तर के लोगों से सहायता स्वीकार नहीं करते।



36 बटेर और शिकारी

एक बहेलिया था, जो हर दिन बहुत सारी बटेरों का शिकार किया करता था। बटेरों की संख्या तेजी से घटने लगी। बटेरों के राजा ने अपने साथियों की बैठक बुलाई और बोला, “कल, जब बहेलिया हमें पकड़ने के लिए आएगा, तो हम सब एक साथ बल लगाकर जाल लेकर उड़ चलेंगे और अपनी जान बचाएँगे।” बटेरों की योजना सफल रही और उस दिन बहेलिया एक भी बटेर नहीं पकड़ पाया। कुछ दिनों बाद बहेलिया फिर से आया। उसने फिर से अपना जाल फैला दिया और बटेरें फिर से फँस गईं। हालाँकि जब वे एक साथ उड़ने के लिए तैयार हुईं तभी एक बटेर का पैर दूसरी बटेर के सिर पर लग गया। दोनों में झगड़ा हो गया और बचना भूलकर वे एक दूसरे से लड़ने लगीं! बहेलिया आया और सारी बटेरों को जाल में लपेटकर ले गया। संकट के समय बटेरों ने एकजुटता दिखाने के बजाय, आपस में लड़ना शुरू कर दिया, जिससे बहेलिए को उन्हें पकड़ने में सफलता मिल गई।



37 बरगद के पेड़ का जन्म

तीन दोस्त थे- कौआ, बंदर और हाथी। तीनों के बीच अक्सर किसी न किसी बात पर मतभेद हो जाते, लेकिन वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाते।

एक दिन, वे एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे। तभी बंदर बोला, “जब तुम लोगों ने इस पेड़ को देखा था तो इसका आकार कितनता था? ”

हाथी बोला, “जब मैं बच्चा था, तब मैं इसकी नर्म-नर्म डालियों से अपना पेट रगड़ा करता था।”

“जब मैं छोटा था, तब मैंने कुछ बेर खाए थे और उसकी कुछ गुठलियाँ यहाँ डाल दी थी। उन्हीं गुठलियों से यह पेड़ उगा है,” कौआ आराम से बोला।

उसकी बात सुनकर बंदर बोला, “दोस्त, जब मैंने पहली बार इसे देखा था तो यह एक पौधा ही था। तो, अब भाई, अब ऐसा लगता है कि तुम्हीं हम सब लोगों से बड़े हो। अब हम तुम्हारी ही राय सुना करेंगे। ”



38 साधु की बेटी

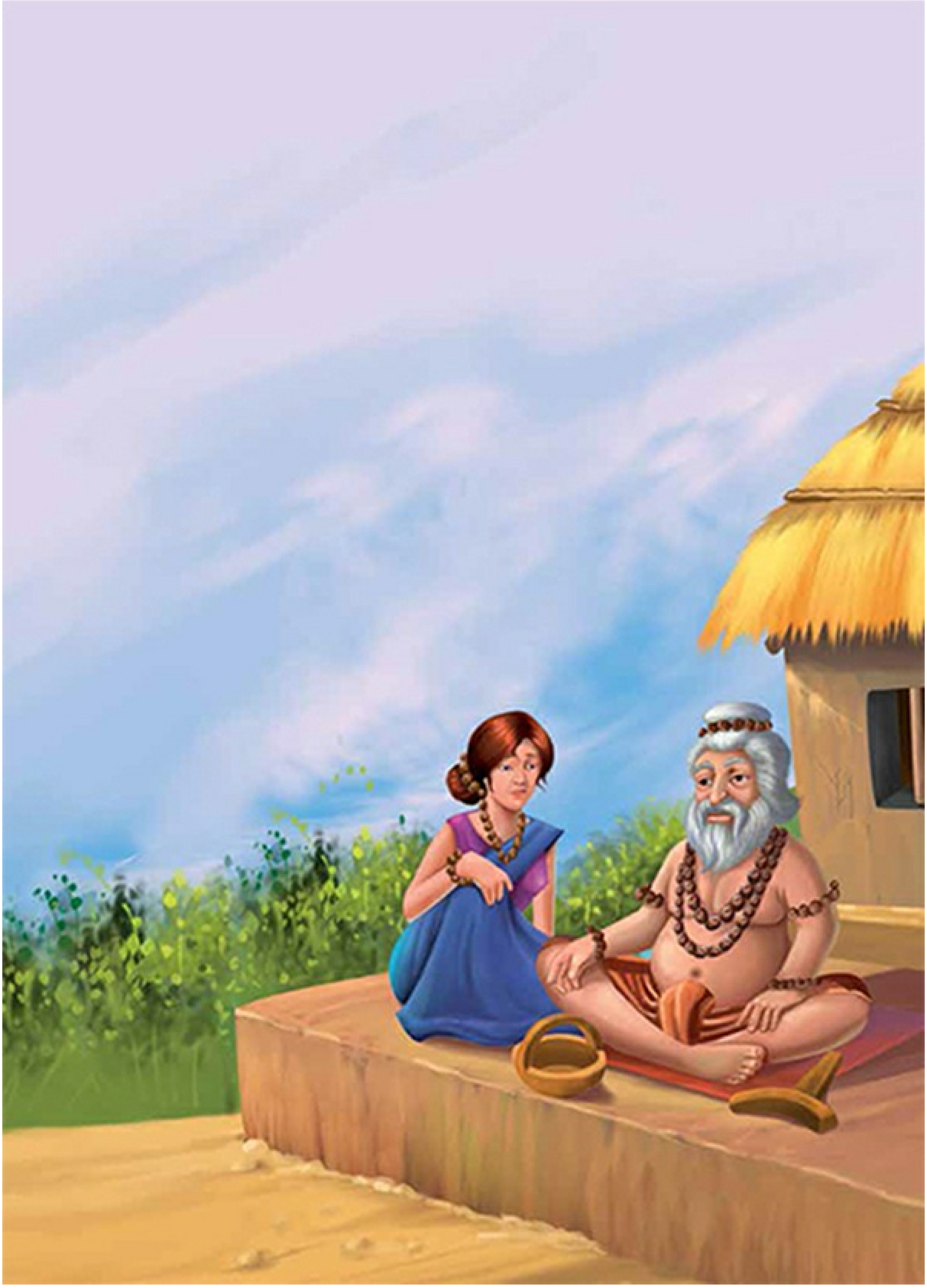
बहुत समय पहले की बात है। एक साधु अपनी पत्नी के साथ नदी के तट पर रहता था। उन दोनों की कोई संतान नहीं थी। उनकी बड़ी इच्छा थी कि कम से कम एक संतान उनके यहाँ जरूर हो। एक दिन, साधु जब तपस्या में लीन था, तभी एक चील ने अपने पंजे में फँसी एक चुहिया उसके ऊपर गिरा दी। साधु ने उस चुहिया को घर ले जाने का निश्चय किया लेकिन उससे पहले उसने उसे एक लड़की में बदल दिया।

उस लड़की को देखकर साधु की पत्नी ने पूछा, "कौन है ये? इसे कहाँ से लाए हो?" साधु ने पत्नी को पूरी बात बताई। उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई और वह बोली, "तुमने उसे जीवन दिया है, इसलिए तुम्हीं उसके पिता हुए। इस तरह मैं भी उसकी माँ हुई। हमारे यहाँ कोई संतान नहीं थी, इसलिए भगवान ने इसे हमारे पास भेजा है।"

जल्द ही वह बच्ची एक सुंदर युवती बन गई। जब वह सोलह साल की हुई तो साधु और उसकी पत्नी ने उसका विवाह करने का निश्चय किया। साधु ने सूर्य देवता का आह्वान किया। जब सूर्य देवता उसके सामने आए, तो साधु ने उनसे उसकी बेटी से विवाह करने का अनुरोध किया।

हालाँकि, लड़की को यह विचार अच्छा नहीं लगा और उसने कह दिया, "क्षमा कीजिए, लेकिन मैं सूर्य देवता से विवाह नहीं कर सकती क्योंकि वह बहुत गर्म हैं।" निराश साधु ने सूर्य देवता से कहा कि अब वे ही उसकी लड़की के लिए कोई सुयोग्य वर सुझाएँ। सूर्य देवता ने कहा, "बादलों के देवता से आपकी लड़की की जोड़ी सही बैठेगी क्योंकि वे ही धूप की गर्मी से उसकी रक्षा कर सकते हैं। "

साधु ने अब बादल देवता से उसकी लड़की से विवाह करने का अनुरोध किया। इस बार भी लड़की ने विवाह से इन्कार कर दिया और बोली, "मैं इस काले व्यक्ति से विवाह नहीं करूँगी। इसके अलावा, बादलों की गरज से मुझे डर भी लगता है।" साधु फिर से उदास हो गया और उसने बादल देवता से अनुरोध किया कि वे ही कोई सुयोग्य वर सुझाएँ। बादल देवता ने कहा, "पवन देवता के साथ इसकी जोड़ी अच्छी रहेगी क्योंकि वे आसानी से मुझे उड़ा सकते हैं।"



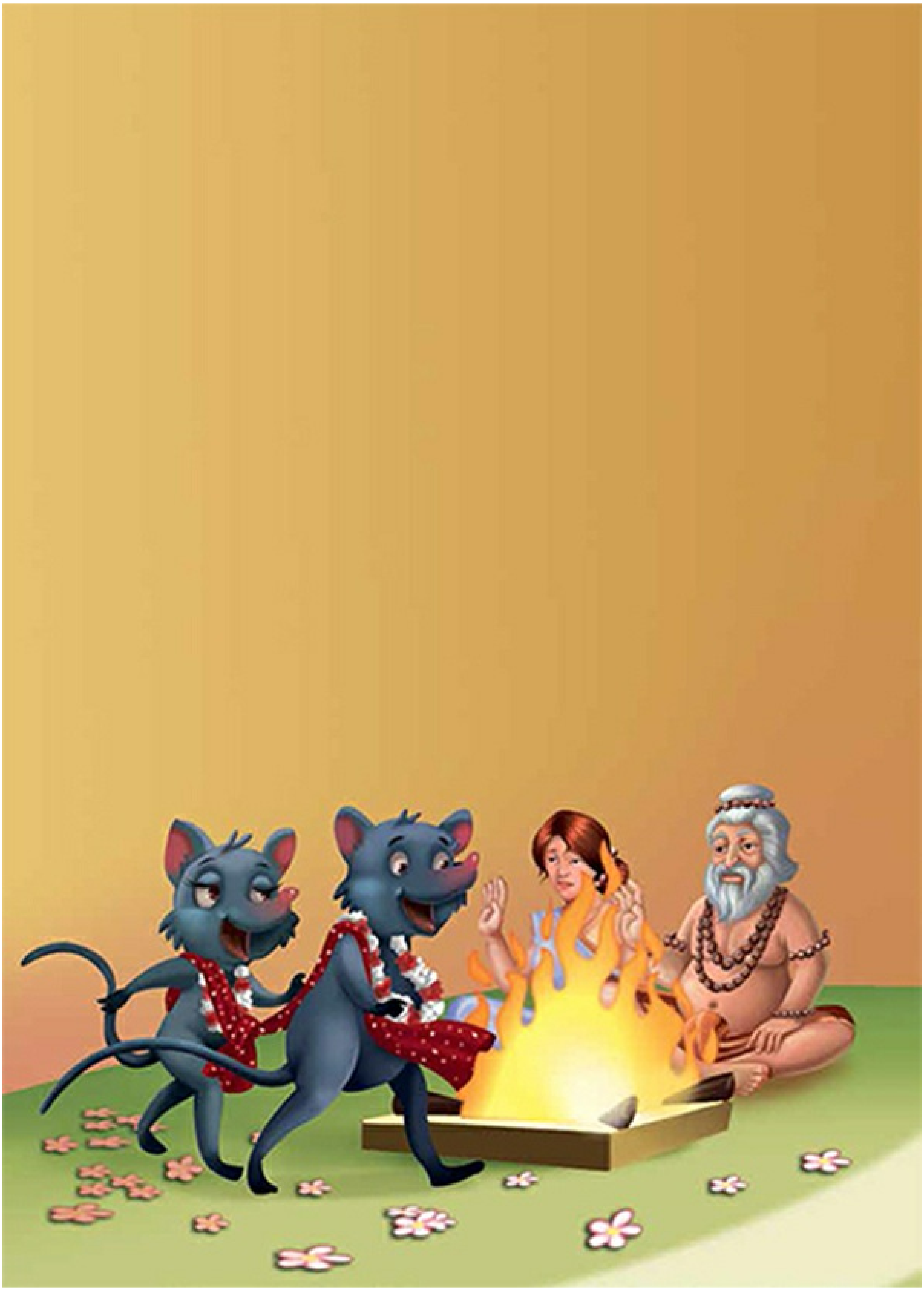
साधु ने अब पवन देवता से विवाह का अनुरोध किया। इस बार भी लड़की ने विवाह से इन्कार कर दिया और बोली, "मैं ऐसे अस्थिर व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती जो हर समय यहाँ-वहाँ उड़ता रहता हो।" साधु काफी परेशान हो गया। साधु ने

पवन देवता से ही कोई सुयोग्य वर सुझाने को कहा। पवन देव ने जवाब दिया, “पर्वतों के राजा बहुत मजबूत और स्थिर हैं। वे बहती हुई हवा को भी आसानी से रोक सकते हैं। उनसे आपकी लड़की की जोड़ी सही बैठेगी।”

साधु अब पर्वतराज के पास गया और उससे उसकी लड़की के साथ विवाह करने का अनुरोध किया। हालाँकि इस बार भी लड़की ने विवाह करने से इन्कार कर दिया और कहा, “मैं ऐसे किसी व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती जो इतना कठोर और ठंडा हो।” लड़की ने साधु से किसी नर्म वर को खोजने को कहा। साधु ने पर्वतराज से सलाह माँगी। पर्वतराज ने जवाब दिया, “किसी चूहे के साथ ही आपकी लड़की की जोड़ी अच्छी रहेगी क्योंकि वह नर्म भी है और आसानी से किसी पर्वत में भी बिल बना सकता है।”

इस बार लड़की को वर पसंद आ गया। साधु काफी हैरान हुआ और बोला, “भाग्य का खेल कितना निराला है! तुम मेरे पास एक चुहिया के रूप में आई थीं और मैंने ही तुम्हें लड़की का रूप दिया था। चुहिया के रूप में जन्म लेने के कारण तुम्हारे भाग्य में चूहे से ही विवाह करना लिखा था और वही हुआ। भाग्य में जो लिखा था, वही हुआ।” साधु ने फिर से प्रार्थना शुरू कर दी और लड़की को दुबारा चुहिया बना दिया।

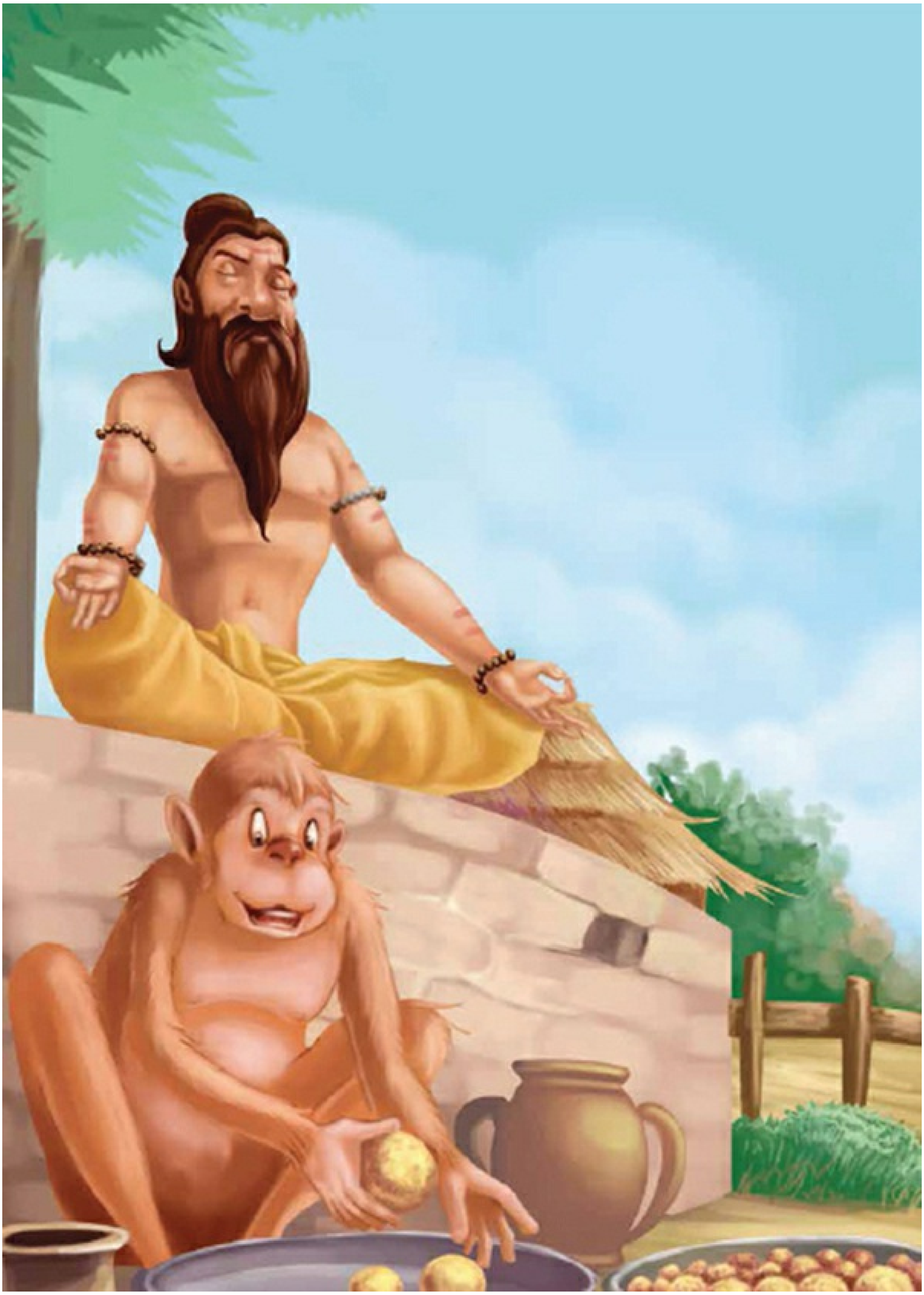
भाग्य कभी नहीं बदलता।



39 शरारती बंदर

बोधिसत्व ने एक बार साधु के रूप में जन्म लिया। हर रोज साधु गाँव जाकर भिक्षा माँगता। जब साधु गाँव जाता तो एक बंदर उसकी कुटिया में घुस जाता और खाने-पीने का सारा सामान चटकर जाता तथा सारा सामान अस्त-व्यस्त कर जाता। एक बार जब बंदर साधु की कुटिया में घुसा तो उसे खाने को कुछ नहीं मिला। वह साधु को देखने गाँव तक चला गया।

गाँव वाले पूजा करने के बाद साधु को प्रसाद देने जा रहे थे। बंदर साधु के पास जाकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। गाँव वालों को लगा कि यह बंदर तो ध्यान कर रहा है। वे उसकी भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुए। तभी साधु ने बंदर को पहचान लिया। उसने गाँव वालों को बता दिया कि यह तो वही बंदर है, जो उसकी कुटिया में घुसकर सारा सामान तोड़-फोड़ देता है और उसे परेशान करता है। क्रोधित गाँव वालों ने बंदर को खदेड़कर भगा दिया।



40 घोड़ा

एक बार की बात है। एक घोड़े के पास पूरा चारागाह था। एक दिन घोड़ा जब बाहर गया हुआ था, तभी एक बारहसिंघा चारागाह में घुस आया। बारहसिंघा ने हर ओर कूद-फाँदकर सारी घास बर्बाद कर दी। जब घोड़ा लौटा तो उसे यह बर्बादी देखकर बहुत क्रोध आया।

वह बारहसिंघे को सबक सिखाना चाहता था। वह एक मनुष्य के पास गया और बोला, "क्या तुम जंगली बारहसिंघे को दंड देने में मेरी सहायता करोगे?" वह मनुष्य बोला, "जरूर। लेकिन एक बात बताओ। क्या तुम मुझे अपनी पीठ पर सवारी कराओगे? तभी मैं तुम्हारी सहायता करूँगा और बारहसिंघे को अपने हथियार से दंड दूँगा !"

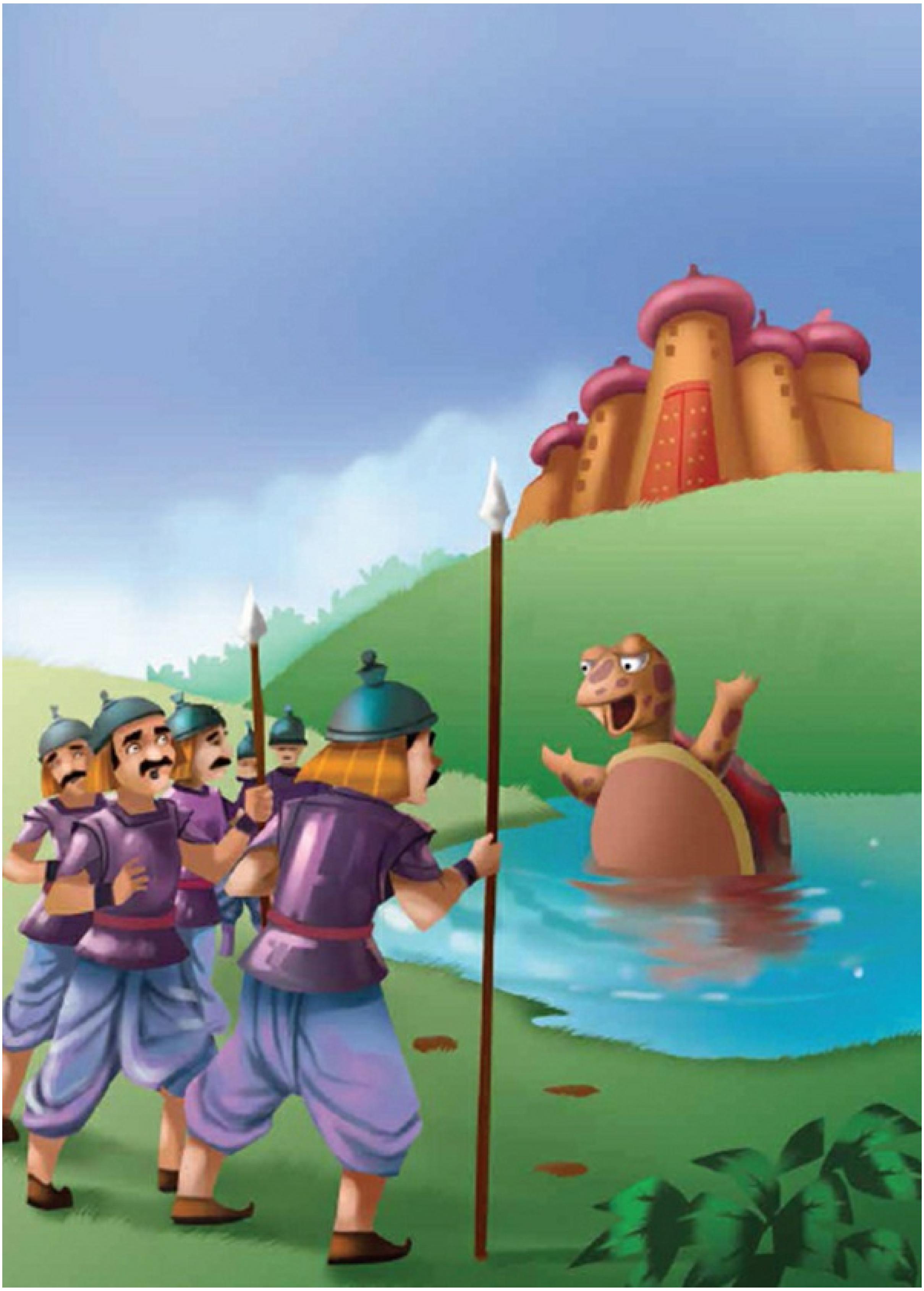
घोड़ा बोला, "हाँ, हाँ..क्यों नहीं? मैं तैयार हूँ।"

तभी से घोड़ा बारहसिंघे से बदला लेने की उम्मीद में मनुष्य का सेवक बनकर काम कर रहा है।



41 कछुए ने बचाई अपनी जान

एक राजा ने अपने छोटे बच्चों के लिए एक तालाब बनवाया। उसने अपने सिपाहियों से उस तालाब में कुछ मछलियाँ डालने को भी कह दिया। संयोग से उन मछलियों के साथ एक कछुआ भी तालाब में आ गया। जब राजकुमारों ने कछुए को देखा तो डरकर भागे। राजा ने कछुए को मार डालने का आदेश दिया। सिपाहियों को समझ में नहीं आ रहा था कि वे कछुए को कैसे मारें। काफी सोच-विचार के बाद एक सिपाही बोला, “इसको नदी में पड़े पत्थरों पर फेंक देते हैं, जिससे यह मर जाएगा और नदी की ओर बह जाएगा।” कछुए ने यह सुना तो अपने खोल से सिर बाहर निकालकर बोला, “तुम लोग मुझे सीधे ही पानी में फेंक दो। मैं उसी से मर जाऊँगा!” सिपाहियों ने उसे नदी के पानी में फेंक दिया। कछुआ हँसता हुआ तैरकर अपने घर वापस चला गया।



42 गधा और गाड़ी वाला

एक गाड़ी वाला अपने गधे को गाड़ी में जोते जा रहा था। अचानक गधा रस्सी तोड़कर गाड़ी से भाग निकला। वह अँधाधुंध भागता गया और ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर निकल गया। वह बिना सोचे-समझे भागे जा रहा था। भागते-भागते वह एक ऊँचे टीले पर पहुँच गया, जहाँ से वह आगे कदम बढ़ाने ही वाला था कि उसके मालिक ने उसकी पूँछ पकड़ ली और उसे पीछे खींच लिया। गधे ने छुड़ाने का बहुत प्रयास किया, लेकिन मालिक भी पूरी ताकत से उसे पीछे खींच रहा था। मालिक गधे को गिरने से बचाना चाहता था लेकिन गधे को यह बात समझ में नहीं आ रही थी। आखिरकार, मालिक ने उसे छोड़ दिया। "ले, अगर तू जाना ही चाहता है, तो फिर तेरी इच्छा। हठ करने वाले को बाध्य नहीं करना चाहिए।" मालिक से छूटते ही गधा आगे बढ़ा और टीले से नीचे गिरकर मर गया।

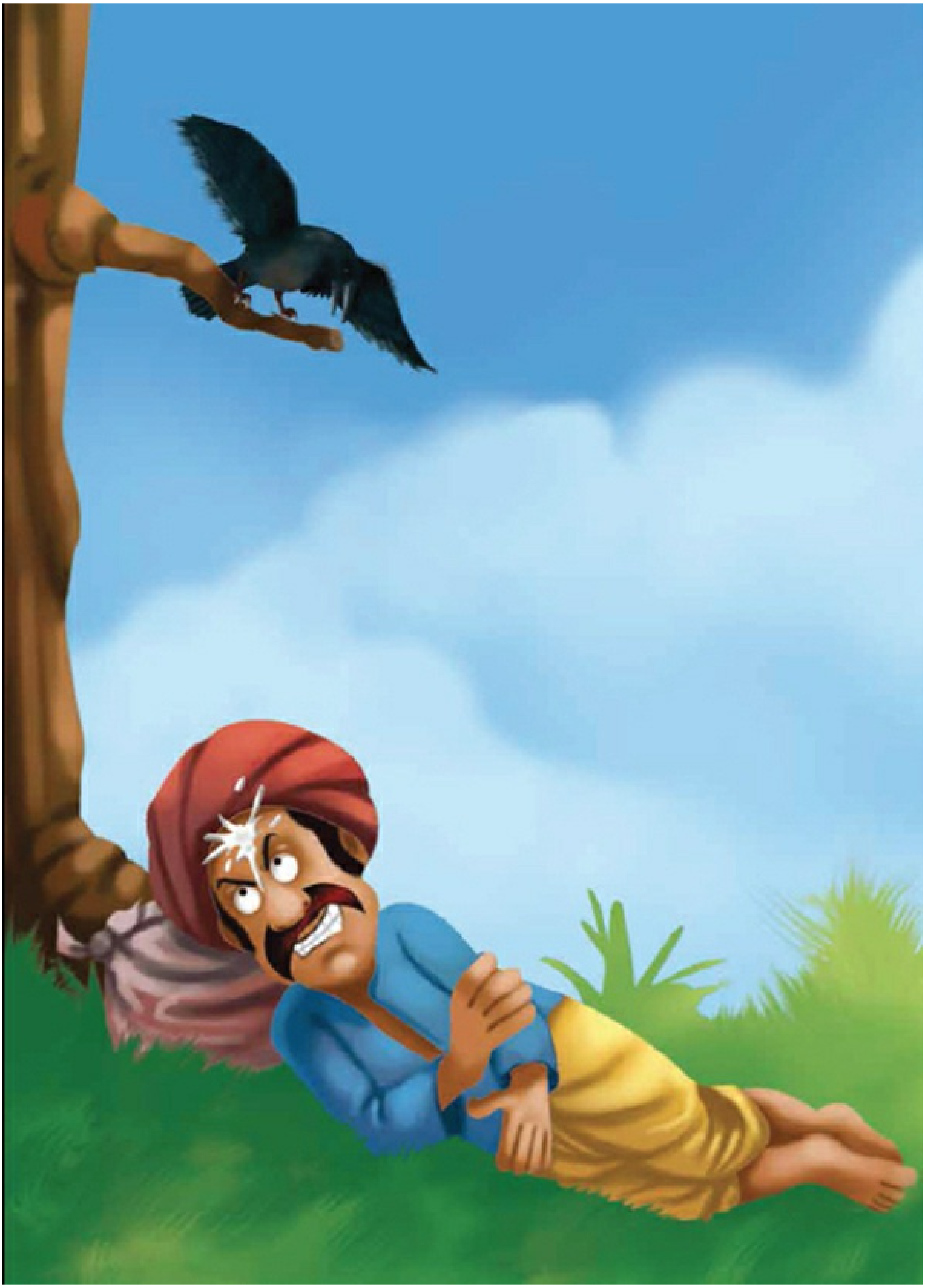


43 उपचार और कौए

एक बार एक राजा ने अपने राजवैद्य को अपने बीमार हाथियों के उपचार के लिए बुलाया। राजमहल जाते समय राजवैद्य एक पेड़ की छाया में लेट गया। अचानक, एक कौए की बीट उसके माथे पर गिरी! वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने सारे कौओं को मरवा देने का निश्चय किया।

उसने राजा के पास जाकर सुझाव दिया, “हाथियों के घावों पर कौओं की चर्बी मलने से वे ठीक हो जाएँगे।”

राजा ने आदेश दिया कि दवा बनाने के लिए सारे कौओं को मार डाला जाए। कौओं को मारने का काम शुरू कर दिया गया। कौओं का सरदार राजा के पास गया और विनती करने लगा, “हम लोगों को मत मारिए। सच तो यह है कि कौओं के शरीर में चर्बी होती ही नहीं है।” राजा को अपनी गलती महसूस हुई और उसने दुष्ट राजवैद्य को दंड देने का आदेश दिया।



44 बलशाली मछली

बहुत समय पहले की बात है। एक दयालु और नेक मछली थी। तभी भयानक सूखा पड़ा। संकट समझकर नेक मछली ने अपनी और अपने साथियों की जान बचाने का निश्चिय किया।

एक दिन, हर तरह के खतरों का सामना करते हुए नेक मछली कीचड़ में जगह बनाती हुई सतह पर आई। उसने वर्षा के देवता इंद्र से प्रार्थना की, “हे देव! हमारे पाप क्षमा कर दो। कृपया बारिश को भेजकर हमें इस संकट से निकालो।”

उसकी यह गुहार सुनकर स्वर्ग से लेकर नर्क तक, हर किसी के मन में दया पैदा हो गई। इंद्र ने वर्षा को पृथ्वी पर भेज दिया और महान नेक मछली तथा उसके साथी बच गए।



45 बाघिन की कहानी

बोधिसत्व ने एक बार एक विद्वान के रूप में जन्म लिया। वे तपस्वी बन गए और उनके कई शिष्य भी बन गए। एक दिन, बोधिसत्व अपने शिष्य अजित के साथ वन से गुजर रहे थे कि उन्हें एक भूखी बाघिन दिखी, जो अपने ही बच्चों को खाने जा रही थी।

इस दृष्य को देखकर बोधिसत्व को बहुत दुख हुआ। उन्होंने स्वयं को बाघिन के भोजन के लिए प्रस्तुत करने का निश्चय किया। यह सोचकर, उन्होंने किसी बहाने से अजित को कहीं भेज दिया और स्वयं को बाघिन के सामने प्रस्तुत कर दिया। बाघिन ने अपने बच्चों के साथ मिलकर उन पर टूट पड़ी।

जब अजित वापस लौटा तो उन्होंने अपने गुरु के रक्त से सने कपड़े देखे। वह दुख से रोने लगा, "हे भगवान! ये तो गुरुजी के कपड़े हैं। इसका मतलब कि ये जानवर उन्हें मारकर खा गए... "

दुखी मन से अजित लौट आया और सबको उसने अपने गुरु की दया, करुणा और बलिदान के बारे में बताया।



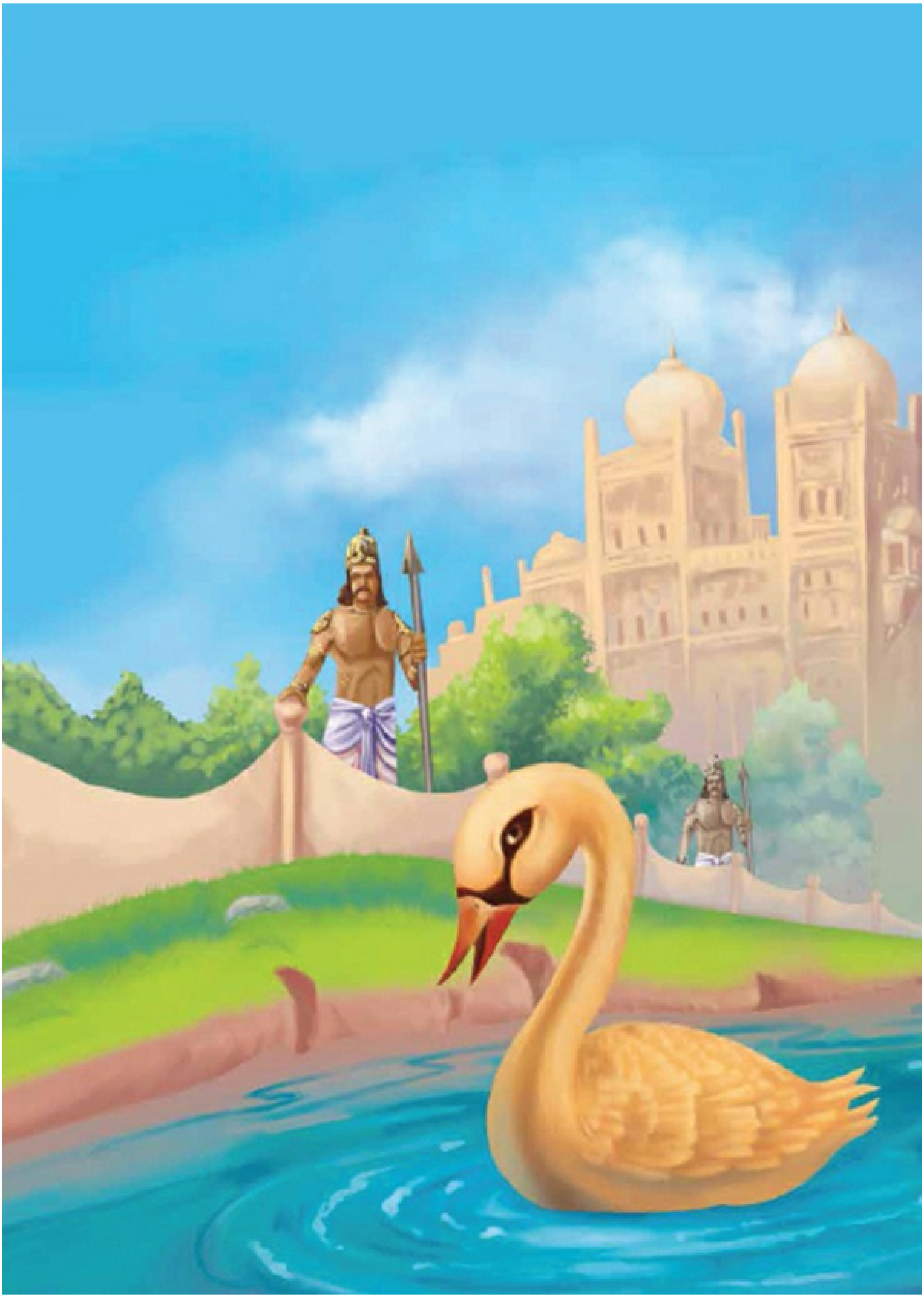
46 स्वार्थी हंस

एक दयालु राजा था। उसके महल में एक तालाब था। तालाब में सुनहरे हंस रहते थे। वे बहुत आराम का जीवन जी रहे थे। वे हर माह राजा को सोने के पंख देते थे। एक दिन वहाँ बाहर से एक पक्षी आया। हंस उसे देखकर मन ही मन जलने लगे। “देखो, ये पक्षी तो बिलकुल सोने जैसा ही है। राजा तो अब उसे अधिक महत्व दिया करेगा। हमें इसे खदेड़कर यहाँ से भगाना होगा, नहीं तो हमारी कोई पूछ नहीं रहेगी,” हंसों ने आपस में बातचीत की।

अचानक, राजा के सिपाहियों ने देखा कि हंसों ने उस बाहरी पक्षी पर आक्रमण कर दिया है। राजा महल से बाहर दौड़ा आया। उसने भी लड़ाई का यह दृष्य देखा।

“पकड़ो इन हंसों को और पिंजरे में बंद कर दो। वे उस नए पक्षी से ईर्ष्या कर रहे हैं,” राजा ने क्रोध में आकर आदेश दिया।

हंस तुरंत उड़कर वहाँ से चले गए। ईष्र्या के कारण हंसों ने अपनी सारी सुख-सुविधाएँ खो दीं।



47 दो बिल्लियों की कहानी

एक निर्धन वृद्ध महिला एक छोटी-दुबली बिल्ली के साथ एक झोपड़ी में रहती थी। बिल्ली बचे-खुचे टुकड़ों और कभी-कभार मिलने वाले पतले-से दलिया से ही अपना पेट भरती थी।

एक दिन सुबह, दुबली बिल्ली ने सामने वाले मकान की दीवार के पास एक मोटी बिल्ली देखी। दुबली बिल्ली ने मोटी बिल्ली को आवाज लगाई, "अरे सहेली, ऐसा लगता है कि तुम तो हर दिन दावत के मजे उड़ाती हो। मुझे भी बता दो तुम्हें इतना सारा खाना कहाँ से मिल जाता है।"

मोटी बिल्ली ने जवाब दिया, "राजा की चौकी पर, और कहाँ मिलता है! हर दिन जब राजा खाना खाने बैठता है, तो मैं उसकी चौकी के नीचे छिप जाती हूँ और वहाँ पर गिरने वाले स्वादिष्ट टुकड़े चुपके से उठा-उठाकर खाती रहती हूँ।"

दुबली बिल्ली आह भरकर रह गई। मोटी बिल्ली ने फिर कहा, "मैं तुम्हें राजा के महल में कल ले चलूँगी। लेकिन याद रखना, वहाँ पर तुमको छिपकर रहना पड़ेगा।"

"अरे वाह! धन्यवाद!" बोलकर बिल्ली खुशी के मारे म्याऊँ-म्याऊँ चिल्लाने लगी और अपनी मालकिन को बताने चल दी।

वृद्ध महिला ने जब उसकी बात सुनी तो वह प्रसन्न नहीं हुई और समझाने लगी, "मेरी विनती है कि तुम यहीं पर रहो और यहाँ मिलने वाले दलिए से ही संतुष्ट रहो। अगर वहाँ पर राजा के नौकरों-चाकरों ने तुम्हें चोरी करते देख लिया तो क्या होगा?"

लेकिन दुबली बिल्ली लालच में फँस चुकी थी। उसने महिला की एक न सुनी। अगले दिन दोनों बिल्लियाँ महल की ओर चल दीं।

उधर, एक दिन पहले ही राजा के भोजन-कक्ष में बहुत सारी बिल्लियाँ घुस आई थीं। इससे नाराज होकर राजा ने आदेश दिया था कि महल में घुसने वाली हर बिल्ली को वहीं पर जान से मार दिया जाए।



जब मोटी बिल्ली चुपके-चुपके महल के द्वार से घुस रही थी, तो एक दूसरी बिल्ली ने उसे राजा के आदेश के बारे में बताकर खतरे से सावधान किया। उसकी बात सुनकर मोटी बिल्ली तुरंत वहाँ से भाग गई।

उधर, दुबली बिल्ली चुपके-चुपके भोजन-कक्ष तक पहुँच चुकी थी। उत्साह में आकर उसने एक रोशनदान से छलाँग मारी और अंदर घुस गई। वह एक बर्तन में रखा मछली का टुकड़ा उठाने ही वाली थी कि राजा के नौकर ने उसे देख लिया और मार डाला।



48 अरब और ऊँट

एक व्यक्ति अरबी रेगिस्तान को पार करके लंबी यात्रा पर निकलने वाला था। यात्रा पर जाने से पहले, उसने काफी समय तक अपना सामान लगाया। उसके बाद उसने सारा आवश्यक सामान ऊँट की पीठ पर लादा। जब उसकी सारी तैयारियाँ हो गईं तो उसने ऊँट से पूछा, “तुम चढ़ाई के रास्ते से चलना चाहते हो या ढाल के रास्ते से?” ऊँट ने उसकी बात ध्यान से सुनी और अपनी पीठ पर लदे सामान के भार का अनुमान लगाया। कुछ देर बाद ऊँट ने पूछा, “मालिक, क्या जाने का कोई मैदानी रास्ता भी है? अगर हो, तो मैं उसी मैदानी रास्ते से जाना चाहूँगा। मेरे ऊपर जो भार लदा है, उसके हिसाब से मैदानी रास्ता ही ठीक रहेगा।”



49 मोर और सारस

एक झील किनारे एक मोर रहता था। उसे अपने सुंदर-सुंदर पंख बहुत अच्छे लगते थे। एक दिन एक सारस भी वहीं रहने आ गया। मोर ने कहा, “तुम्हारा इस स्थान पर स्वागत है।” अब मोर ने अपने पंख फैलाए। चमकीली धूप में उसके रंगीन पंख बहुत सुंदर लग रहे थे। झील के पानी में उनकी परछाई दिख रही थी। वह अपने पंखों को देखकर गर्व महसूस करने लगा। गर्व में डूबा मोर बोला, “मेरे पंख देखो। देखा, कितने सुंदर और आकर्षक हैं। तुम्हारे पंखों से बहुत अधिक सुंदर हैं ये।” सारस मोर के घमंडी भाव को पहचान गया।

वह बोला, “मेरे पंख जैसे भी हैं, पर उनकी सहायता से मैं उड़ तो लेता हूँ। तुम्हारी सुंदरता किसी काम की नहीं है। तुम अपने पंखों से उड़ तक नहीं सकते।” सारस की सीधी-सपाट बात से मोर को वास्तविकता का अहसास हो गया। उसने फिर घमंड करना छोड़ दिया।



50 लोमड़ी और अंगूर

एक भूखी लोमड़ी जंगल में इधर-उधर घूम रही थी। अचानक उसकी नजर पके और रसीले अंगूरों की बेल पर पड़ी। उसने मन में सोचा, “ये अंगूर तो बहुत स्वादिष्ट होने चाहिए। मैं इन्हें जरूर खाऊँगी।”

अंगूर काफी ऊँचाई पर लगे थे। लोमड़ी ने छलाँग लगाकर अंगूर तोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह उन तक नहीं पहुँच पाई। वह छलाँग लगा-लगाकर अंगूर तोड़ने की कोशिश करती रही, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली।

जब वह प्रयास कर-करके थक गई तो उसे समझ में आ गया कि अब और प्रयास करना बेकार है। वह अपने आप से बोली, “अरे! मुझे नहीं चाहिए ये अंगूर। ये तो खट्टे हैं।” लोमड़ी का व्यवहार यह दिखाता है कि जब किसी को कोई चीज नहीं मिलती, तो वह उसमें कमियाँ निकालने लगता है।



51 कपटी बाज

एक बाज एक पेड़ की डाली पर रहता था। उसी पेड़ की खोह में एक लोमड़ी रहती थी।

एक दिन, जब लोमड़ी अपनी खोह से निकली तो बाज उसमें घुस गया और अपने बच्चों को खिलाने के लिए लोमड़ी के बच्चों को उठाकर ले गया। जब लोमड़ी लौटी, तो उसने बाज से अनुरोध किया कि उसके बच्चे लौटा दे।

बाज जानता था कि लोमड़ी उसके घोंसले तक नहीं पहुँच पाएगी। उसने लोमड़ी के अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया। लोमड़ी पास के एक मंदिर गई और वहाँ से जलती हुई लकड़ी लेकर आई। उसने पेड़ के नीचे आग लगा दी। आग की गर्मी और धुएँ से बाज डर गया। अपने बच्चों की जान बचाने के लिए वह जल्दी से लोमड़ी के पास आया और उसके बच्चे लौटा दिए।

निर्दयी व्यक्ति जिनका दमन करता है, उनसे उसे हमेशा खतरा रहता है।



52 भेड़िया और मेमना

एक भेड़िए ने एक मेमने को देखा, तो उसे खाने की योजना बनाने लगा। वे दोनों एक छोटी नदी के पास खड़े थे। भेड़िए ने मेमने से कहा, “तुमने इस पानी को गंदा करने का साहस कैसे किया? यह मेरे पीने का पानी है।” “पानी तो तुम्हारी ओर से बह रहा है,” सीधे-सादे मेमने ने जवाब दिया।

“अरे!” भेड़िया आगे बोला, “चलो ठीक है, लेकिन पिछले साल तुमने मेरे साथ असभ्यता क्यों की थी? तुम सबके सामने मेरा नाम लेकर बुला रहे थे।” हैरान-परेशान मेमने ने जवाब दिया, “मैं तो तब पैदा भी नहीं हुआ था।” “अच्छा,” भेड़िया चालाकी से बात बदलते हुए बोला, “तो तुम्हारी माँ ने मेरा नाम लिया होगा। अपनी माँ के अपराध के लिए तुम्हें दंड भुगतना पड़ेगा।” इतना कहकर भेड़िया मेमने पर टूट पड़ा। अत्याचारी हमशा कोई न कोई बहाना तलाश ही लेता है और कमजोर व्यक्ति का कोई तर्क उसके सामने नहीं चल पाता।



53 मूर्ख कबूतर

एक बार एक भूखा बाज कबूतरों के झुंड पर झपटा। कबूतरों का झुंड हमेशा उसकी पकड़ से बच निकलता था। सारे कबूतर उस बाज से भयभीत रहते थे और उसके आक्रमण से बचने के लिए सतर्क रहते थे। बाज काफी दिनों से उन पर नजरें गड़ाए था। उसने एक योजना बनाई और कबूतरों के पास जाकर बोला, “इस तरह से डर-डरकर जीने से क्या लाभ? इससे अच्छा तो यही है कि तुम लोग मुझे अपना राजा बना दो ताकि मैं हर तरह के संकट से तुम लोगों की रक्षा कर सकूँ।” कबूतरों को यह बात पसंद आई। उन्हें लगा कि बाज उनकी भलाई चाहता है। उन्होंने बाज को अपना राजा बना दिया।

राजा बनते ही बाज ने एक-एक करके सारे कबूतरों को खाना शुरू कर दिया।

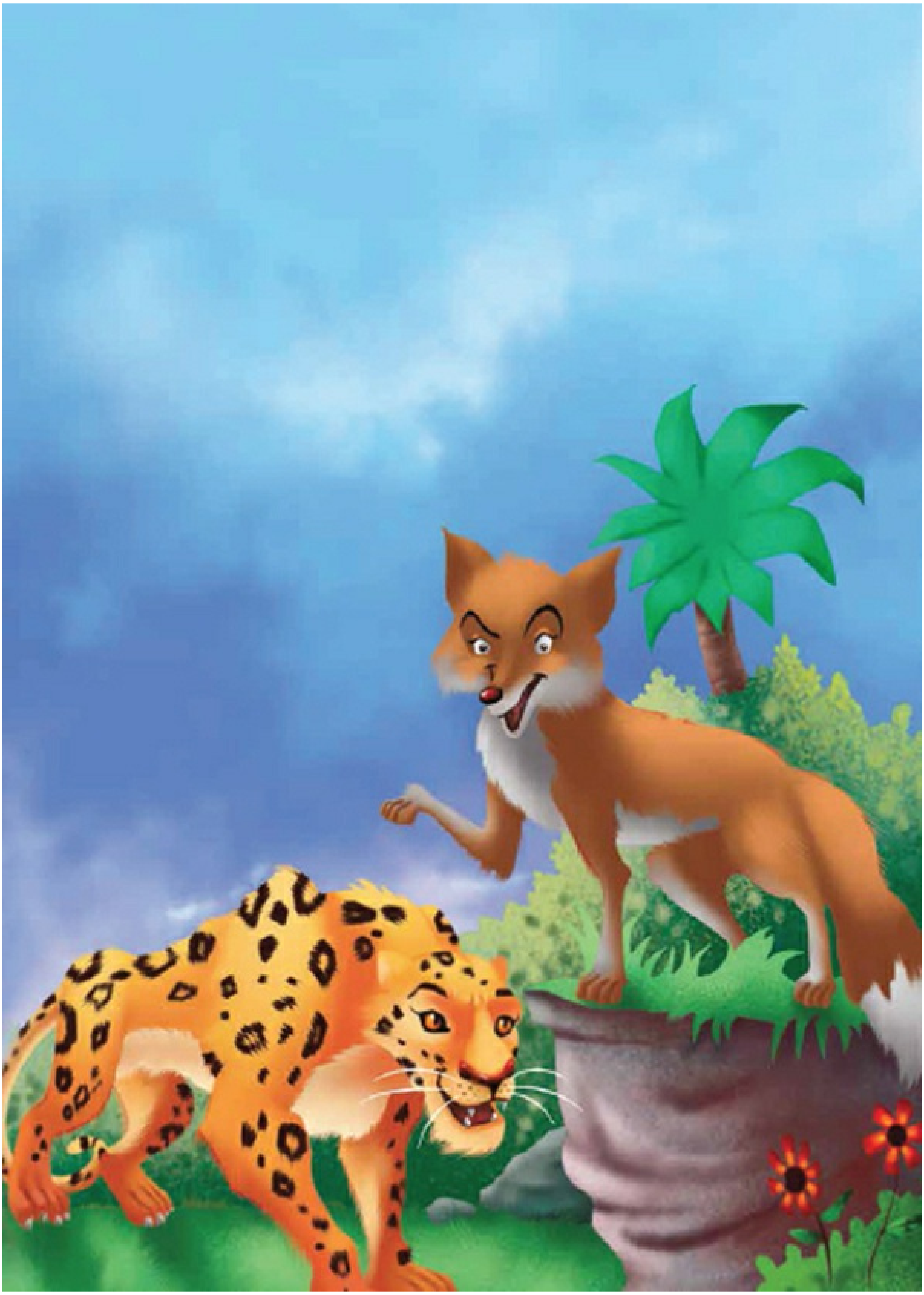
कुछ उपाय संकटों से भी बुरे होते हैं।



54 चीता और लोमड़ी

एक चीता और एक लोमड़ी एक वन में एक साथ रहते थे। वे बहुत अच्छे मित्र थे और छोटी-मोटी बातों पर कभी नहीं झगड़ते थे। हालाँकि, एक दिन, बातों ही बातों में उन दोनों के बीच बहस हो गई और दोनों ने निश्चय किया कि यह फैसला किया जाए कि दोनों में से कौन अधिक सुंदर है। चीते ने पहले जोर देकर कहा कि वही अधिक सुंदर है क्योंकि उसके पास आकर्षक पीले रंग की त्वचा है। उसने अपनी प्रशंसा जारी रखते हुए अपने काले धब्बों का जिक्र किया।

लोमड़ी पूरी बात ध्यान से सुनती रही और सहमति जताती रही। इसके बाद, जब उसकी बारी आई तो वह बोली, “ठीक है, तुम मुझसे अधिक सुंदर हो। तुम्हारे पास पीले रंग की काले धब्बों वाली चमकीली त्वचा है। लेकिन मुझे लगता है कि मेरा चतुर दिमाग तुम्हारे सुंदर शरीर से अधिक महत्वपूर्ण है।”



55 शेर और तीन बैल

एक बार की बात है। तीन बैल आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे।

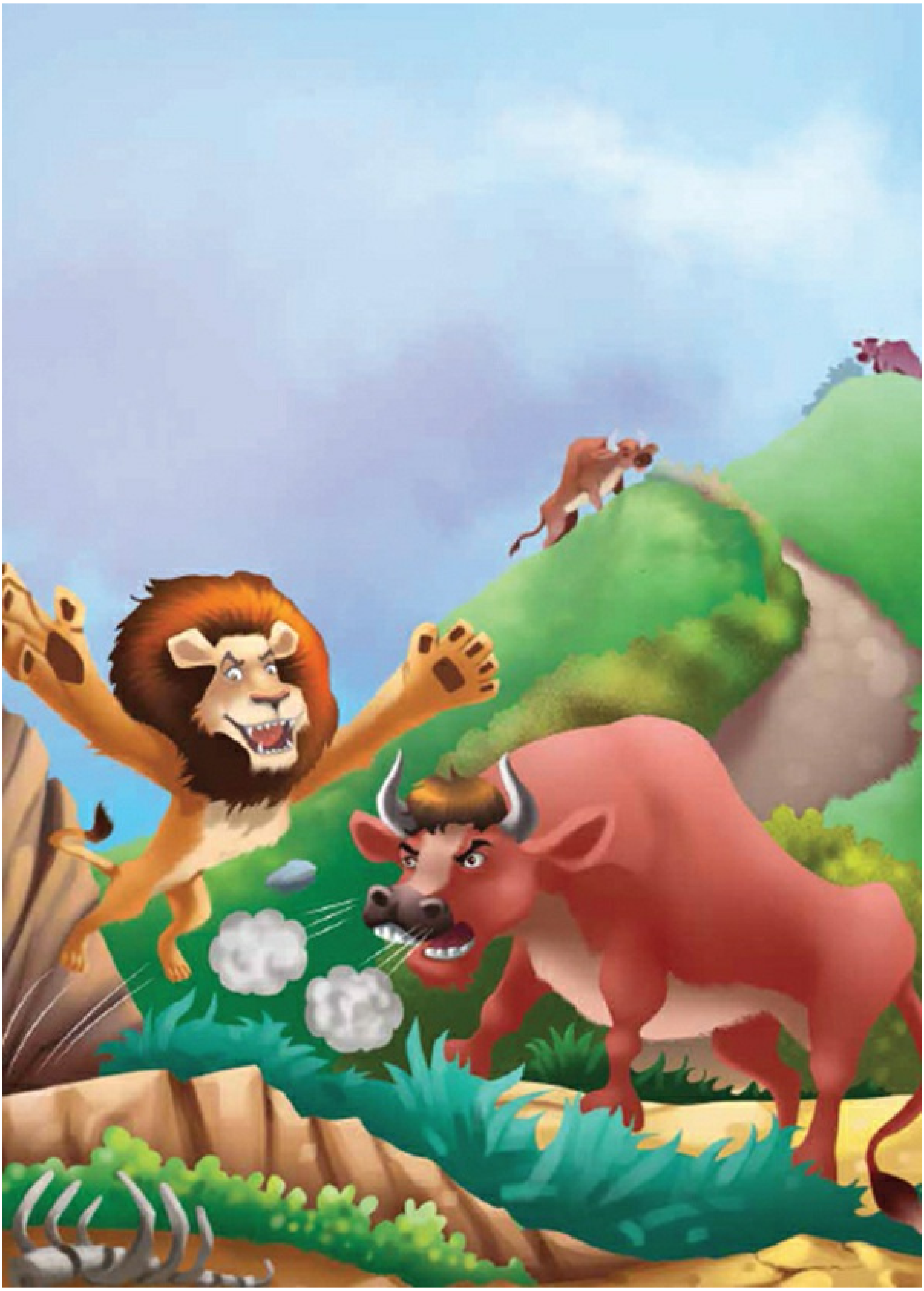
वे साथ मिलकर घास चरने जाते और बिना किसी राग-द्वेष के हर चीज आपस में बाँटते थे। एक शेर काफी दिनों से उन तीनों के पीछे पड़ा था, लेकिन वह जानता था कि जब तक ये तीनों एकजुट हैं, तब तक वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

शेर ने उन तीनों को एक-दूसरे से अलग करने की चाल चली।

उसने बैलों के बारे में अफवाहें उड़ानी शुरू कर दीं। अफवाहें सुन-सुनकर उन तीनों के बीच गलतफहमी पैदा हो गई।

धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से जलने लगे। आखिरकार एक दिन उनमें झगड़ा हो गया और वे अलग-अलग रहने लगे। शेर के लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। उसने इसका पूरा लाभ उठाया और एक-एक करके तीनों को उसने मार डाला और खा गया।

एकता में ही शक्ति होती है।



56 व्यापारी के बेटे की कहानी

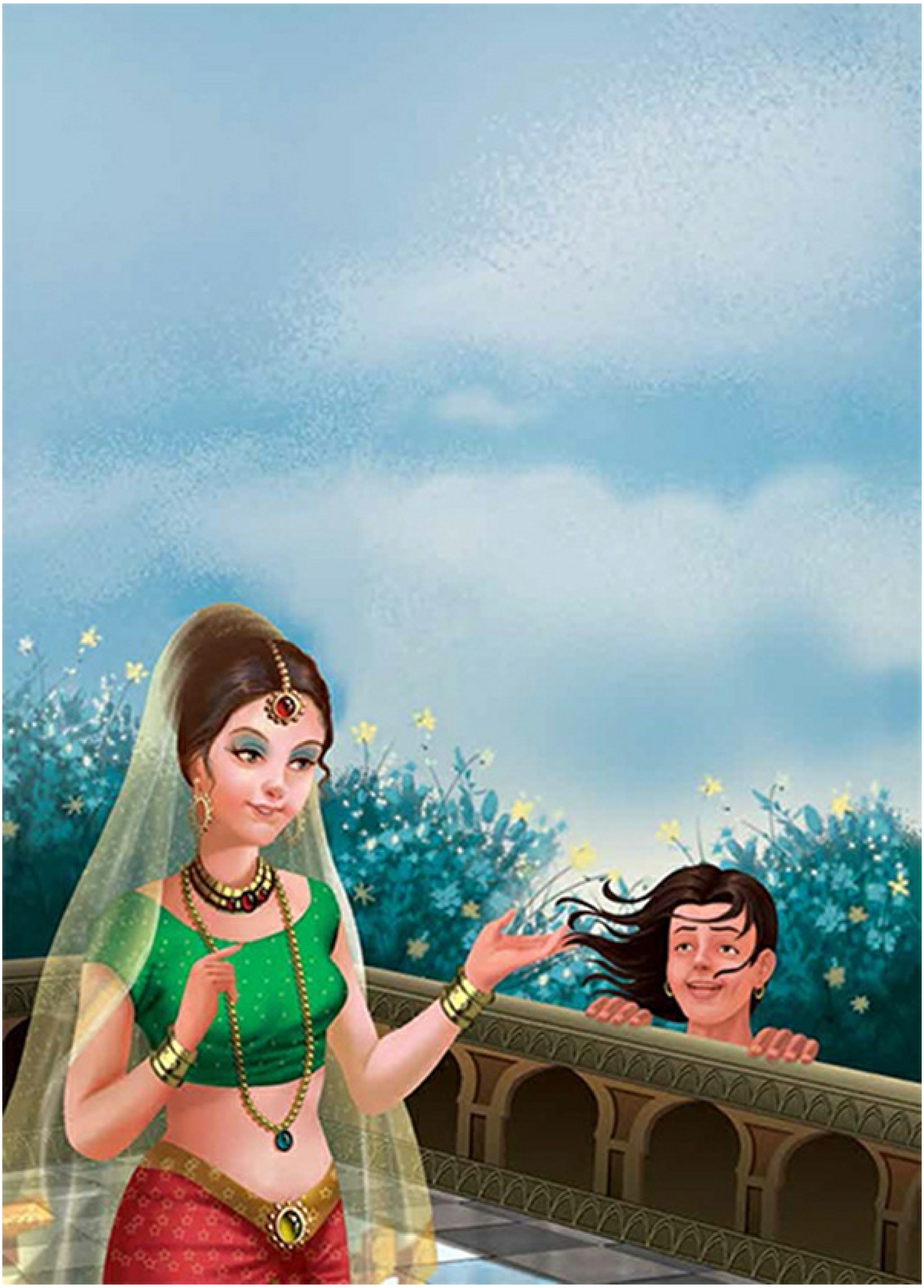
एक व्यापारी के बेटे ने 100 रुपए में एक किताब खरीदी। उसमें केवल एक वाक्य लिखा था, 'आदमी को वही मिलता है, जो उसके भाग्य में लिखा होता है '। व्यापारी अपने बेटे की मूर्खता पर बहुत क्रोधित हुआ और उसने उसे घर से निकाल दिया। लड़का दूसरे नगर चला गया और वहाँ उसने एक नया नाम प्राप्त रखकर नया जीवन आरंभ कर दिया।

नगर की राजकुमारी चंद्रावती एक सुंदर योद्धा से प्रेम करती थी। उसने अपनी दासी से योद्धा से मुलाकात का प्रबंध कराने को कहा। दासी ने चुपके से रात के समय योद्धा को महल में आमंत्रित किया। उसने योद्धा से कहा कि वह दीवार से रस्सी की सहायता से महल की दीवार पर चढ़ जाए।

योद्धा की दिलचस्पी राजकुमारी से मिलने में थी नहीं, इसलिए उसने इन्कार कर दिया। इस बीच, प्राप्त ने दीवार पर लटकी हुई रस्सी देख ली और उसे पकड़कर दीवार पर चढ़ गया। इस तरह वह सीधे राजकुमारी के शयन कक्ष में पहुँच गया।

राजकुमारी ने उसे ही योद्धा समझ लिया और बोली, "हे सुंदर सिपाही, मैं तुमसे प्रेम करने लगी हूँ।" इस पर प्राप्त ने जवाब दिया, "आदमी को वही मिलता है, जो उसके भाग्य में लिखा होता है।"

राजकुमारी को महसूस हुआ कि यह युवक वह योद्धा नहीं है। उसने उसे चले जाने को कह दिया। प्राप्त महल से निकल गया और एक मंदिर में सोने चला गया। वहीं पर नगर का मुखिया एक गोपनीय बैठक करने आया। उसने प्राप्त को सोने के लिए अपने घर भेज दिया।



जब प्राप्त मुखिया के घर पहुँचा तो उसकी बेटी विनयवती ने उसे अपना होने वाला पति समझ लिया और उससे विवाह की व्यवस्था करने लगी। दोनों की गाँठ बँधने से पहले विनयवती ने प्राप्त से कुछ कहने को कहा। प्राप्त ने आदमी के भाग्य के बारे में

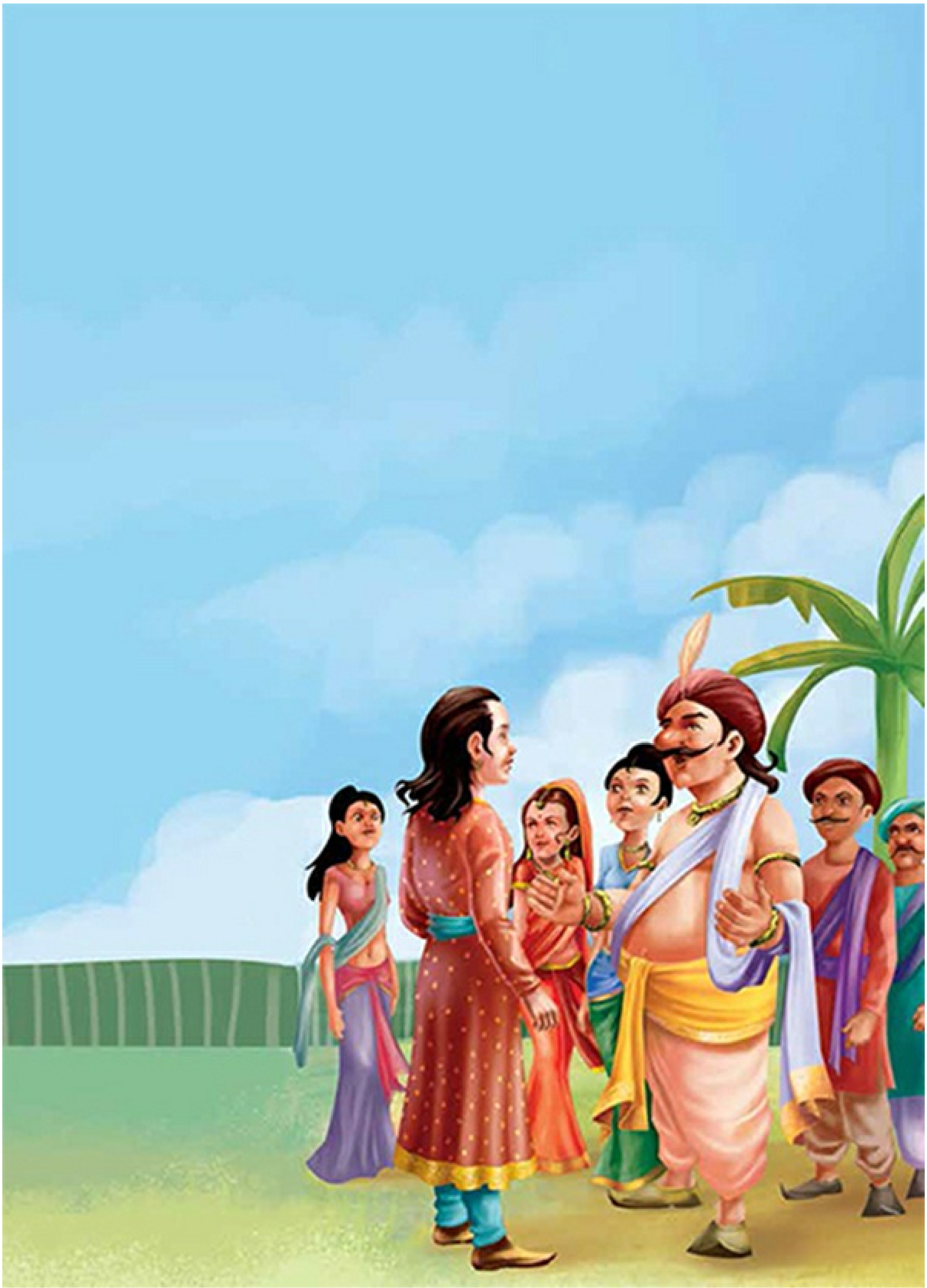
अपना पुराना कथन दुहरा दिया। उसकी बात सुनकर विनयवती नाराज हो गई और उसे तुरंत वहाँ से जाने को कह दिया।

प्राप्त एक बार फिर सड़क पर आ गया। उसकी निगाह एक बारात पर पड़ी, जिसमें एक हाथी पागल हो गया था और हर किसी पर हमला कर रहा था। दूल्हा अपनी बारात समेत वहाँ से डरकर भाग निकला।

प्राप्त ने देखा कि वहाँ डरी-सहमी दुल्हन अकेली बैठी है। वह आगे बढ़ा और बहादुरी के साथ हाथी को सँभाल लिया। इस बीच, सब कुछ शांत हो गया। दुल्हन का पिता भी बारात के साथ वहाँ लौटकर आ गया। उसकी बेटी ने उससे कहा, “इस वीर पुरुष ने मुझे पागल हाथी से बचाया है। मैं अब और किसी से नहीं, बल्कि इसी से विवाह करूँगी।”

शोरगुल सुनकर, राजकुमारी और राजा भी विवाह-स्थल पर पहुँच गए। मुखिया की बेटी भी वहाँ पहुँच गई और देखने लगी कि वहाँ क्या हो रहा है। राजा ने प्राप्त से कहा कि वो पूरी बात निडर होकर बताए। प्राप्त ने हमेशा की तरह अपना भाग्य के बारे में कथन दुहरा दिया।

प्राप्त का वाक्य सुनकर राजकुमारी का माथा ठनका। मुखिया की बेटी को भी प्राप्त से हुई मुलाकात याद आ गई। राजा, मुखिया और व्यापारी, तीनों ने अपनी-अपनी बेटियों का विवाह प्राप्त के साथ कर दिया। राजा ने उसे उपहार के रूप में एक हजार गाँव दे दिए। सबने यह बात मान ली कि भाग्य में जो लिखा है, उसे कोई नहीं बदल सकता।



57 मूर्ख कौआ

एक पहाड़ी की चोटी पर एक बाज रहता था। घाटी में एक बरगद के पेड़ पर एक कौआ अपना घोंसला बनाकर रहता था। कौआ मूर्ख और आलसी था तथा वह भोजन की तलाश में कोई मेहनत नहीं करना चाहता था। वह सोचा करता था कि उसे उसी पेड़ के नीचे एक बिल में रहने वाले खरगोश खाने को मिल जाएँ। बाज कभी-कभी ऊपर से झपट्टा मारकर खरगोशों का शिकार किया करता था।

खरगोशों का स्वादिष्ट माँस खाने के विचार से ही कौए के मुँह में पानी आने लगा।

एक दिन, उसने निश्चय किया कि वह भी बाज की तरह की खरगोश का शिकार करेगा। अगले दिन कौआ बहुत ऊँचाई तक उड़ा और जब उसकी निगाह एक खरगोश पर पड़ी, तो उसने वहाँ से नीचे आकर एकदम से झपट्टा मारकर उसे पकड़ने की कोशिश की। खरगोश ने कौए को देख लिया और एक चट्टान के पीछे छिप गया।

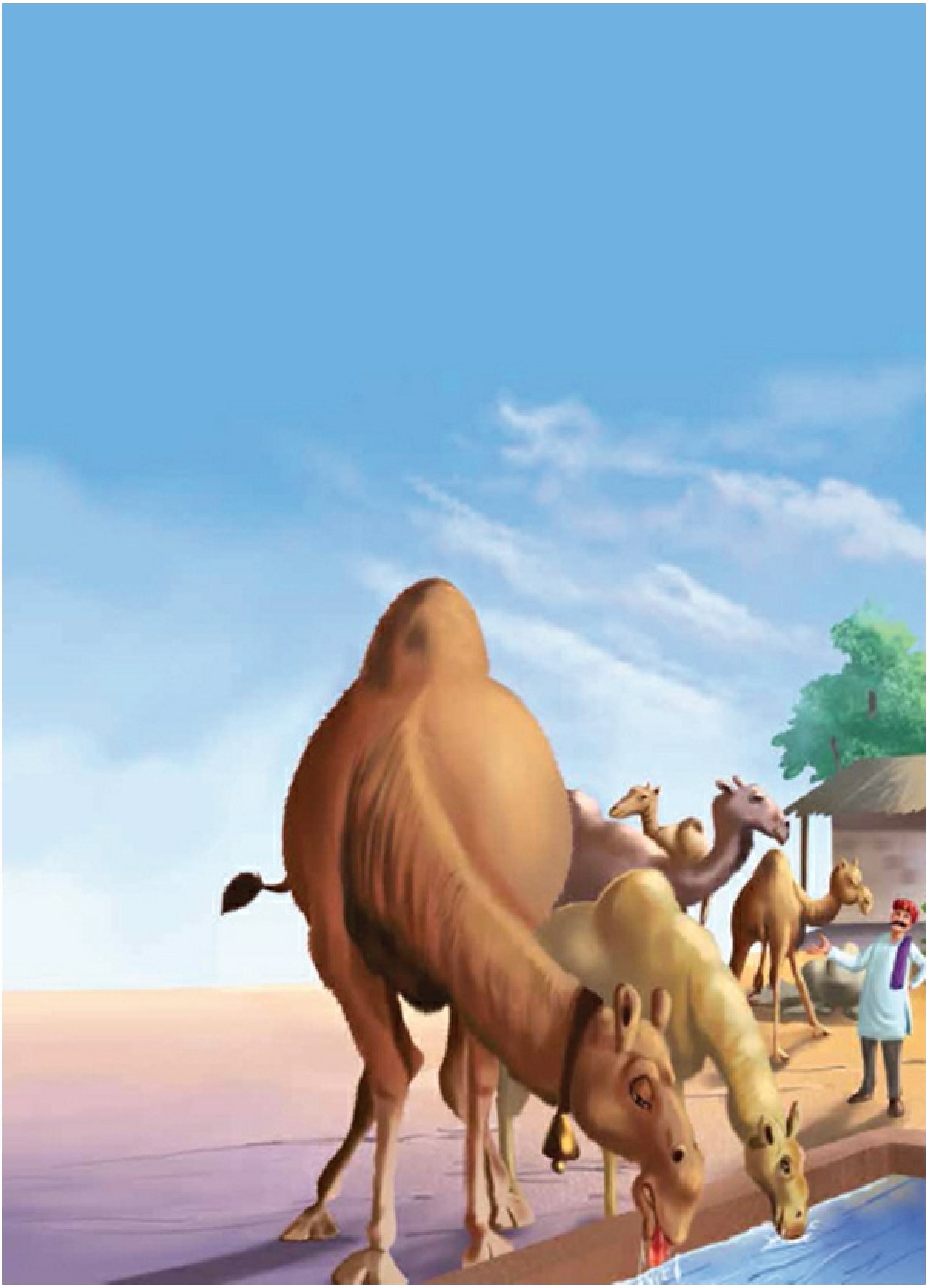
कौआ एकदम से नीचे आया और चट्टान से टकरा गया। उसकी वहीं पर मौत हो गई।

किसी ने सच ही कहा है, कि किसी की बिना सोचे-समझे नकल नहीं करनी चाहिए। अपनी क्षमता और कौशल पर भी ध्यान देना चाहिए।



58 सुंदर ऊँट

एक दिन, एक निर्धन ग्रामीण को तीन ऊँट मिले-दो बच्चे थे और एक उनकी माँ थी। ग्रामीण तीनों को घर ले आया और उनकी देखभाल करने लगा। वह तीनों को घास चराने के लिए जंगल ले जाता, नहलाने के लिए नदी ले जाता। वह सोचने लगा, “इन ऊँटों को बड़ा हो जाने दो। इनसे और बहुत सारे ऊँट पैदा होंगे। इस तरह से मेरे पास बहुत सारे ऊँट हो जाएँगे। तब मैं ऊँटों का व्यापार शुरू कर दूँगा। मेरी निर्धनता दूर हो जाएगी।” जब भी वह अपने ऊँटों की सवारी करता, उसके पड़ोसी उससे ईर्ष्या करने लगते। कुछ ही वर्षों में, उसके पास सचमुच बहुत ऊँट हो गए। वह धनी बन गया। गाँव वाले उससे जलते थे। एक दिन, उसके ईर्ष्यालु पड़ोसी ने उससे कहा, “तुम्हारे ऊँट चरने जाते हैं। तुम्हें कैसे पता लगेगा कि ऊँट कहाँ घूम रहे हैं? तुम उनकी गर्दन में घंटी क्यों नहीं बाँध देते?” ग्रामीण ने अपने एक ऊँट की गर्दन में घंटी बाँध दी। एक दिन वह ऊँट जंगल में घूम रहा था। उसकी घंटी लगातार बज रही थी। एक बाघ को घंटी की आवाज सुनाई दी। आवाज सुनकर वह बाघ ऊँट पर झपट पड़ा और उसे मारकर खा गया। इस प्रकार, उस ग्रामीण को अपने ईर्ष्यालु पड़ोसी की सलाह बिना सोचे-समझे मानने की वजह से हानि उठानी पड़ी।



59 केकड़ा और उसकी माँ

एक दिन केकड़े की माँ उसे लेकर समुद्र तट पर घूमने गई। जब वे चल रहे थे, तो माँ ने कहा, “अरे, बेटा, तुम चलते समय अपने पैर अंदर की ओर क्यों मोड़ लेते हो? ” केकड़े का बच्चा बोला, “माँ, तुम चलकर दिखाओ न।” केकड़े की माँ यह जानकर बड़ी प्रसन्न हुई कि उसका बेटा सीखना चाहता है। “मैं दिखाती हूँ, मेरे बेटे। अब पीछे रहो और ध्यान से देखो,” केकड़े की माँ बोली। इतना कहकर केकड़े की माँ ने अपनी एक टाँग खींची, उसका निचला हिस्सा बाहर की ओर मोड़ा और आगे बढ़ने का प्रयास किया। जब उसने ऐसा किया तो उसका पैर उलझ गया और वह नाक के बल गिर पड़ी! जो काम आप स्वयं करके न दिखा पाओ, उसे दूसरों से करने को नहीं कहना चाहिए।



60 मुर्गे को मिल गया गहना

एक मुर्गे को बहुत भूख लगी थी। वह भोजन की तलाश में गया। वह अपने खाने के लिए अनाज के दानों की तलाश में जमीन कुरेदने लगा। जमीन में गड़ा उसे एक गहना मिल गया। गहना काफी महँगा और बड़ा था। मुर्गा उसे देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने गहना उठा लिया और अपने आप से बोला, “यह कितना सुंदर है! यह बहुत ही मूल्यवान होगा। सारी दुनिया इसे पाना चाहेगी।” कुछ देर बाद वह सोचने लगा, “मैं भूखा हूँ और मुझे खाना चाहिए। इस गहने का मैं क्या करूँगा? अभी तो अनाज का दाना मेरे लिए गहने से अधिक मूल्यवान होगा। यह गहना तो अभी मेरे लिए बेकार है।” उसने वह गहना वहीं छोड़ दिया और दूसरी जगह जाकर जमीन खोदने लगा। वास्तव में कोई चीज तुम्हारे लिए तभी मूल्यवान हो सकती है, जब वह तुम्हारे लिए उपयोगी हो।



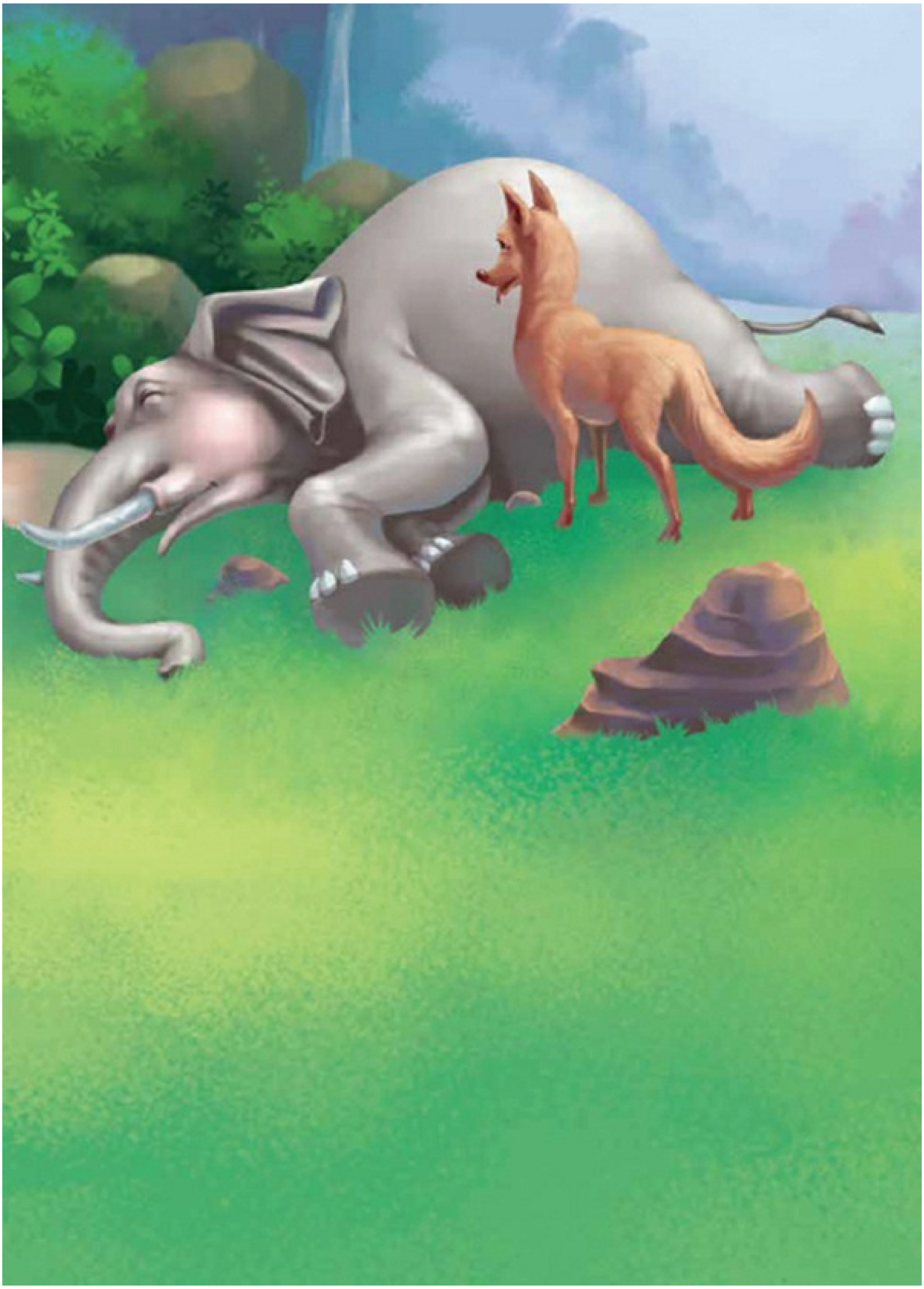
61 बुद्धिमान लोमड़ी

एक भूखी लोमड़ी जंगल में भटक रही थी। उसे एक मरा हुआ हाथी दिखाई दिया। वह अपना पेट भरने के लिए उस पर झपट पड़ी लेकिन उसके दाँत हाथी की मोटी खाल को काट नहीं पाए। उसने सोचा कि किसी नुकीले दाँतों वाले जानवर को साथ मिला लेना चाहिए, जिससे उसे कुछ तो हिस्सा मिल ही जाए।

वह शेर के पास गई और कहने लगी, “महाराज, मैंने एक हाथी मारा है। चलिए उसे खा लीजिए। ” लोमड़ी का आमंत्रण सुनकर शेर क्रोधित हो गया। “मैं किसी दूसरे के मारे हुए जानवर का माँस छूता तक नहीं,” वह गुर्राकर बोला।

बेचारी लोमड़ी एक बाघ के पास गई और उससे बोली, “महाराज, शेर ने एक हाथी मारा है। अब वह नहाने गया है और माँस की रखवाली मैं कर रही हूँ। चलिए, आप उस माँस को खा लीजिए।” बाघ ने भी कोई दिलचस्पी नहीं ली और वहाँ से चला गया।

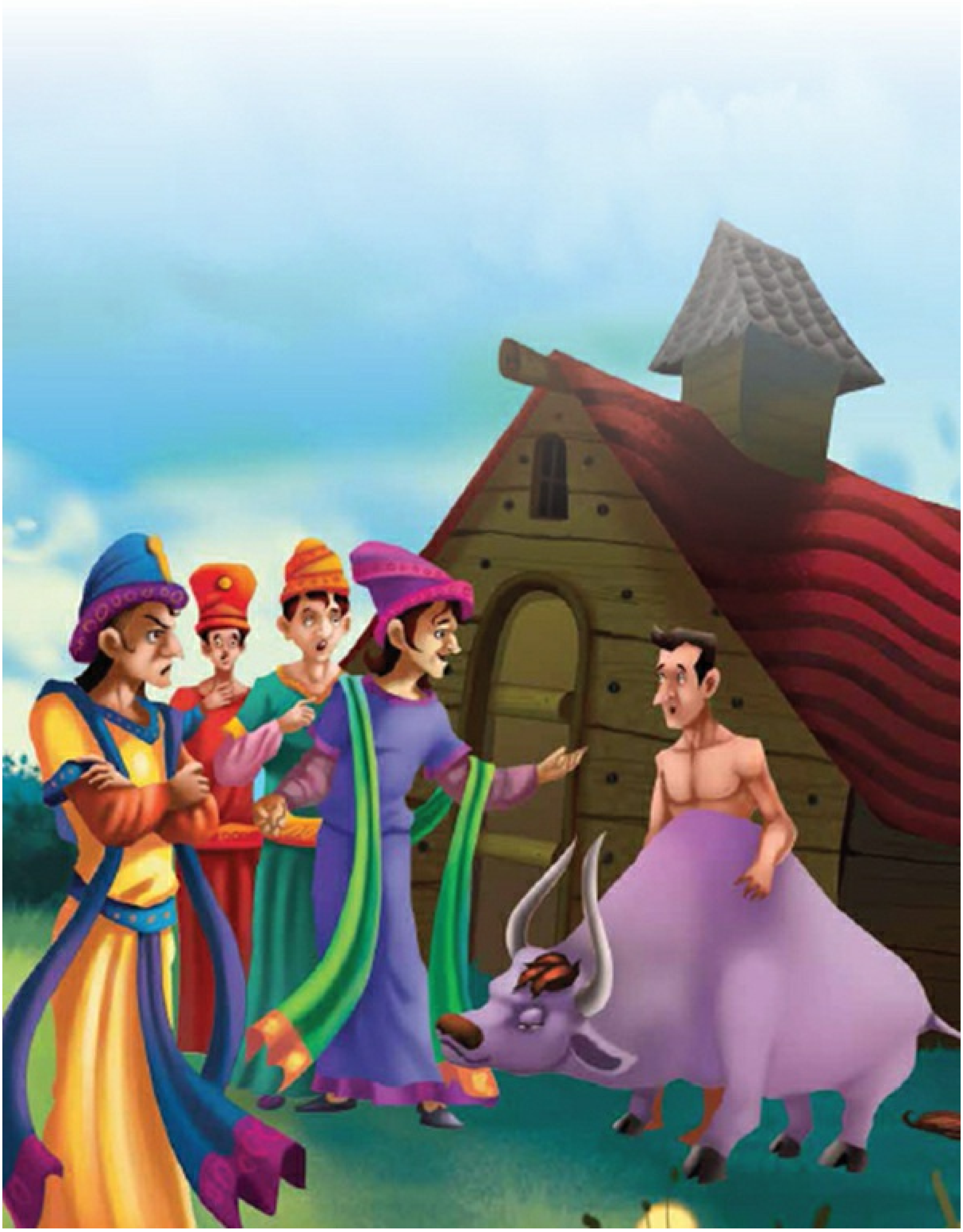
आखिर में, लोमड़ी एक भेड़िया के पास गई। भेड़िया उसकी बात मान गया। जब भेड़िए ने अपने दाँतों से हाथी की खाल काटी तभी शेर वहाँ से गुजरा। शेर को देखकर भेड़िया भाग निकला। लोमड़ी का तो मन वैसे भी किसी और को हाथी का माँस खिलाने का नहीं था। उसने छककर माँस खाया।



62 शनि, मंगल और शुक्र

शनि, मंगल और शुक्र, तीनों देवों ने निश्चय किया कि वे एक-एक चीज ऐसी बनाएँगे, जो एकदम संपूर्ण हो। शनि ने मनुष्य को बनाया। मंगल ने बैल बनाया और शुक्र ने एक मकान बनाया। अब उन लोगों ने नारद मुनि को बुलाया और उनसे निर्णय करने को कहा कि इन तीनों में से कौन संपूर्ण है। नारद ने बैल से शुरुआत की और उसमें कमी ये पाई कि उसके सींग आँखों से ऊपर है। “इस कारण बैल अपने सींग तो देख ही नहीं पाएगा,” नारद ने कहा। अब बारी मनुष्य की थी। नारद मुनि ने पाया कि मनुष्य भी संपूर्ण नहीं है क्योंकि उसकी छाती में खिड़कियाँ नहीं हैं जिस कारण उसके अंदर के विचार बाहर नहीं आ सकते।

अब बारी मकान की आई। मकान में नारद ने कमी पाई कि उसमें पहिए नहीं हैं, जिस कारण वह चल-फिर नहीं सकता। यह सुनकर शनि ने कहा, “आपके जैसा गलतियाँ गिनाने वाला कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। दूसरों की गलतियाँ तब गिनाइए, जब आप स्वयं कोई ऐसी चीज बना लें जिसमें कोई कमी न हो।”



63 जंगली सुअर और लोमड़ी

एक जंगली सुअर एक पेड़ के तने से घिस-घिसकर अपने दाँत नुकीले कर रहा था। एक लोमड़ी ने उसे देखा तो सोचने लगी कि जब इसके सामने लड़ने के लिए कोई है ही नहीं, तो यह मूर्ख जानवर क्यों लड़ाई की तैयारी कर रहा है। वह सुअर के पास गई और पूछने लगी, “दोस्त, तुम अपने दाँत नुकीले क्यों कर रहे हो? आस-पास देखो जरा। क्या यहाँ कोई शिकारी या खतरनाक जानवर है? अरे, यहाँ तो किसी तरह का खतरा है ही नहीं। मेरे हिसाब से तो तुम बेकार में मेहनत कर रहे हो।”

सुअर ने उसकी ओर देखा और आराम से जवाब दिया, “अरे मेरी दोस्त! खतरा बताकर नहीं आता। वह तो अचानक ही आ जाता है। जब खतरा आएगा तो मुझे दाँत नुकीले करने का समय नहीं मिलेगा। तुम तो जानती ही हो कि जब लड़ाई का बिगुल बज जाए, तब तलवारों की धार नुकीली करने का समय नहीं मिलता।”



64 मूर्ख कौआ

एक कौए ने एक हंस को देखा। कौआ तो पूरा काला ही था, इसलिए उसे हंस का सुंदर सफेद रंग बहुत अच्छा लगा। वह स्वयं को उसी हंस की तरह सफेद बनाना चाहता था। उसने सोचा कि अगर वह भी हंस की तरह तालाब में रहने लगेगा तो वह भी सफेद हो जाएगा। बस फिर क्या था! वह अपना घर छोड़कर तालाब की ओर उड़ चला। उसने पानी में डुबकी लगाई और बार-बार अपना तन साफ करने लगा, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। बेचारे कौए को दोहरी निराशा हो रही थी। पुराने घर में तो उसे खाने-पीने का सामान आसानी से मिल जाता था, जो कि यहाँ नहीं मिल रहा था, दूसरे उसका रंग भी सफेद नहीं हुआ। भूख और दुख से उसकी जल्द ही मौत हो गई।

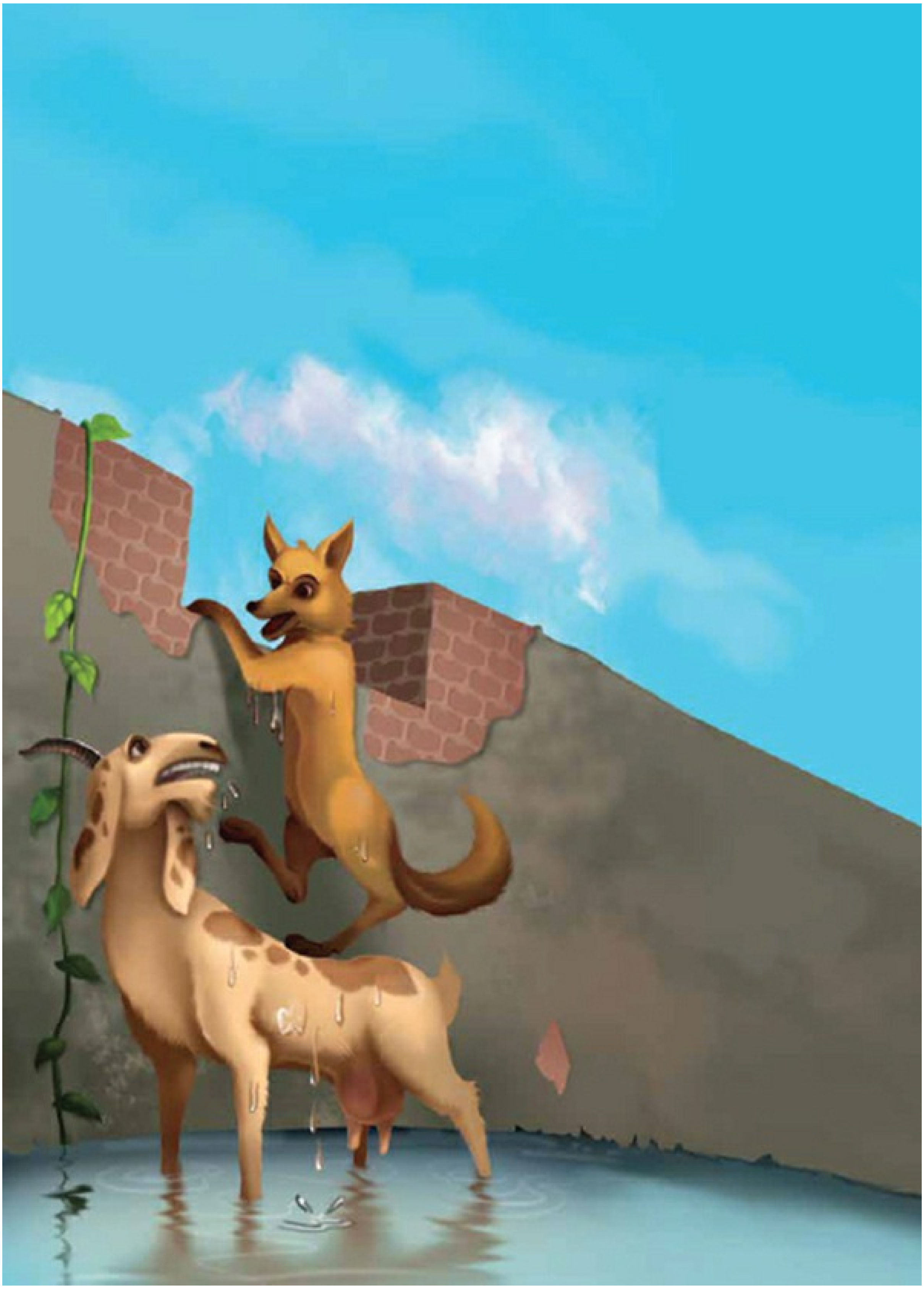
निवास का स्थान बदलने से स्वभाव नहीं बदल जाता।



65 मूर्ख बकरी

एक दिन एक लोमड़ी एक गहरे कुएँ में गिर पड़ी। कुछ ही देर में एक बकरी उसी कुएँ पर पानी पीने आई। पानी में तैरती लोमड़ी देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। लोमड़ी ने भी योजना बनाई कि किसी तरह से बकरी की सहायता से अपने को बचाना चाहिए। वह चिल्लाई, “अरे बकरी! तुम्हें पता है, मैं यहाँ कुएँ में क्यों उतरी हूँ? कुएँ के अंदर आकर ही बढ़िया पानी पिया जा सकता है। देखो! मैं जी भरकर पानी पी रहा हूँ और मजे कर रही हूँ। ”

लोमड़ी की बातें सुनकर बकरी लालच में आ गई। वह भी कुएँ में कूद पड़ी। लोमड़ी ने तुरंत बकरी को पकड़ा और थोड़ी-सी मेहनत के बाद वह कुएँ से बाहर निकलने में सफल हो गई। बेचारी बकरी कुएँ में डूबने लगी और सहायता के लिए चिल्लाने लगी, “तुम मूर्ख हो। छलाँग लगाने से पहले हमेशा अच्छी तरह से देख तो लेना चाहिए। तुमने इस पर ध्यान नहीं दिया, इसलिए तुम्हें दंड मिलना ही चाहिए। ”



66 कौआ चला मोर बनने

एक कौए ने बहुत सारे मोर पंख इकट्ठे किए और उन्हें अपने तन पर लगा लिए। उसे अपना नया रूप बहुत अच्छा लगा और उसने निश्चय किया कि अब वह कौओं के साथ नहीं, बल्कि मोरों के साथ रहेगा। इसके बाद वह अपने पुराने साथियों का तिरस्कार करके वहाँ से चला गया और मोरों के झुंड में मिलने की कोशिश करने लगा। हालाँकि, मोरों ने तुरंत पहचान लिया कि उनके बीच में एक कौआ आ गया है। उन्होंने अपनी चोंचों से नोंच-नोंचकर कौए के तन पर लगे मोर पंख नोंच डाले और उसका मखौल उड़ाने लगे। अपमानित और दुखी कौआ भारी मन से अपने घर वापस लौट आया। सारे साथी कौए सिर हिलाते उसके पास आ पहुँचे और कहने लगे, "तुम बहुत ही नीच जीव हो! अगर तुम अपने ही पंखों से संतुष्ट रहते तो तुम्हें दूसरों से इस तरह का अपमान नहीं सहना पड़ता और न ही तुम्हारे अपने लोगों के बीच तुमसे घृणा की जाती।"



67 शेर और लोमड़ी

एक शेर, एक लोमड़ी और एक गधा शिकार के लिए निकले। जब वे जंगल में घूम रहे थे, तो उन्हें एक बारहसिंघा मिला। तीनों ने मिलकर बारहसिंघे का पीछा किया और उसे मार डाला। अब तीनों ने उसे आपस में बाँटने का निश्चय किया। गधा आगे आया और उसने बारहसिंघे के माँस को तीन हिस्सों में बाँट दिया। शेर कुछ नाराज हुआ क्योंकि वह सबसे बड़ा हिस्सा चाहता था। वह गधे पर झपटा और उसे वहीं मार डाला। शेर ने अब लोमड़ी से माँस बाँटने को कहा। लोमड़ी बहुत बुद्धिमान थी। उसने माँस की सारी बोटियाँ इकट्ठी कीं और उसमें से कुछ अपने लिए अलग रख लीं। शेर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने लोमड़ी से पूछा, “तुम्हें हिस्से बाँटने की कला किसने सिखाई?”

लोमड़ी हँसते हुए बोली, “महाराज, इस गधे के भाग्य ने!”

स्वयं गलती करके सीखने के बजाय दूसरों की गलतियों से सीखना बेहतर होता है।



68 रेत भरी सड़क

एक दिन एक व्यापारी ने व्यापार करने के लिए शहर जाने का निश्चय किया। उसने अपने साथ कुछ और लोगों को भी ले लिया। शहर जाने के लिए उन्हें रेगिस्तान से गुजरना था।

जब वे लोग रेगिस्तान पहुँचे, तो उन्हें बहुत गर्मी लगने लगी। व्यापारी और उसके साथियों ने तय किया कि शेष यात्रा वे रात में करेंगे। जब रात हुई, तो उन्होंने अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी। उनमें से एक व्यक्ति को सितारों की जानकारी थी। वह सितारों की स्थिति के अनुसार लोगों को आगे बढ़ने का रास्ता बताने लगा। उन लोगों ने बिना रुके सारी रात यात्रा की। दिन होने पर वे रुक गए और वहीं आराम करने लगे।

दो दिन इसी तरह यात्रा करते रहे। अब उनकी यात्रा एक दिन की और बची थी। अचानक, उनके पास का सारा पानी समाप्त हो गया। सारे लोग थक चुके थे और बिना पानी पिए यात्रा करने की उनमें शक्ति नहीं बची थी। वे बैठ गए।

व्यापारी ने पानी खोजने का निश्चय किया। वह चल पड़ा। आखिरकार, उसे कुछ घास दिखाई दी। वह सोचने लगा, “यहाँ घास होने का मतलब है कि यहीं धरती के नीचे पानी भी होगा।”

उसके सारे साथी भागकर वहाँ आ गए और खुदाई करने लगे। उन लोगों के खोदे गड्ढे में व्यापारी कूद गया और उसमें पड़ी चट्टान से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगा। उसने अपने साथियों से कहा, “मुझे इस चट्टान के अंदर पानी बहने की आवाज सुनाई दे रही है। हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए।” ऐसा कहकर वह व्यापारी गड्ढे से बाहर निकल आया और अपने साथियों से बोला, “अगर तुम लोगों ने हिम्मत खो दी, तो हम भी खो जाएँगे। इसलिए हिम्मत मत हारो और खुदाई करते रहो।”

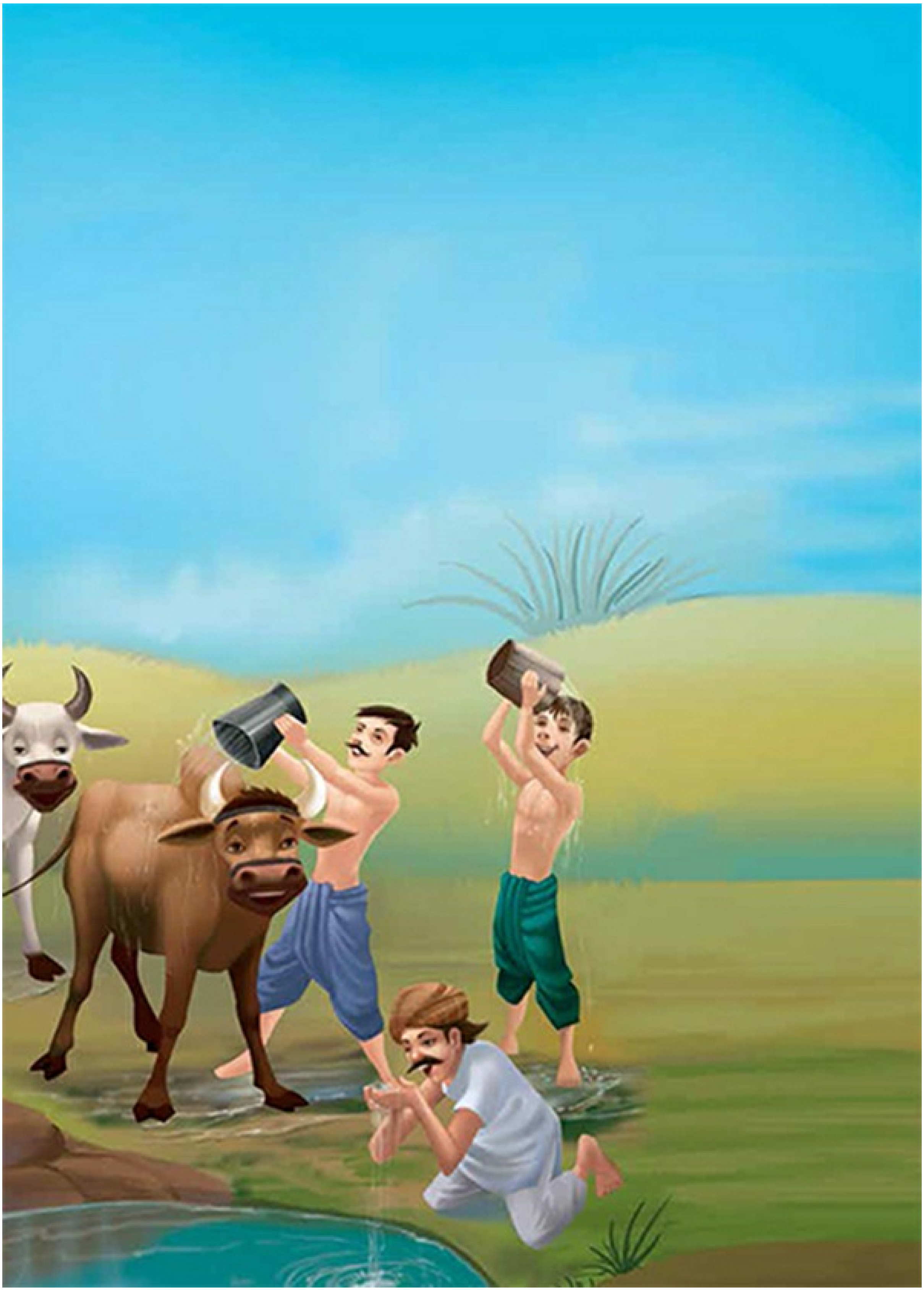


सारे साथी हथौड़े से चट्टान तोड़ने में जुट गए। व्यापारी की बात मानकर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। आखिरकार, चट्टान टूट गई और गड्ढा पानी से लबालब भर गया। सारे लोगों ने छककर पानी पिया। उन्होंने अपने बैलों को भी पानी पिलाया और

जमकर स्नान भी किया।

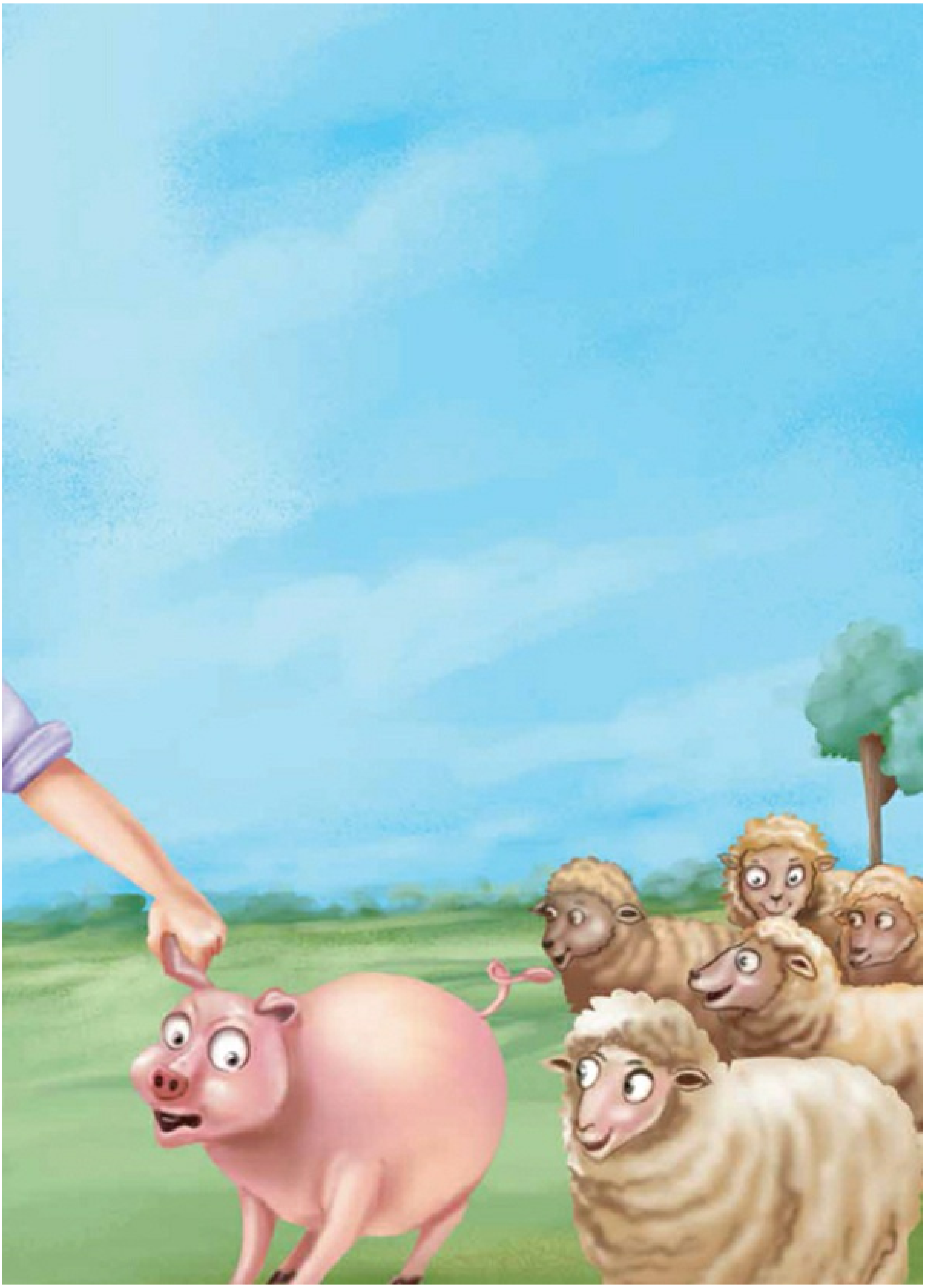
नहाने-धोने के बाद वे अपने साथ लाई लकड़ियाँ चीरने लगे। उन लकड़ियों से उन्होंने आग जलाई और चावल पकाए। सभी ने खाना खाया और दिन भर आराम किया। उन लोगों ने उस गड्ढे के पास एक झंडा भी गाड़ दिया, ताकि आने-जाने वाले यात्रियों को भी पानी का पता लग जाए। दिन ढलने के बाद सभी ने फिर से यात्रा शुरू कर दी और सुबह तक शहर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने अच्छी तरह से व्यापार किया और अच्छा मुनाफा कमाकर अपने गाँव लौट आए।

इच्छा और संकल्प से सब कुछ हासिल किया जा सकता है।



69 सुअर और भेड़

एक मोटा-तगड़ा सुअर था। उसे हमेशा पकड़े जाने और मार डाले जाने का डर लगा रहता था। वह भेड़ों के बाड़े में रहने लगा। उसने सोचा कि यहाँ रहने पर उसे कोई नहीं देख पाएगा और वह बचा रहेगा। एक दिन, चरवाहे ने उसे देख लिया और उसके कान पकड़कर बाहर खींच लाया। सुअर चीखता-चिल्लाता रहा और अपने को छुड़ाने का प्रयास करता रहा। पास खड़ी एक भेड़ उसे देख रही थी। वह सुअर को समझाने लगी, “तुम इतने घबरा क्यों रहे हो? हमारा मालिक तो हमारे साथ अक्सर ऐसा ही करता है, लेकिन हम लोग तो नहीं चिल्लाते। ये चीखना-चिल्लाना बंद करो।” सुअर ने उत्तर दिया, “मेरे दोस्त, मेरा मामला अलग है। तुम्हें वह ऊन निकालने के लिए पकड़ता होगा, पर मुझे तो वह काटकर गोश्त पकाने के लिए पकड़े है।”



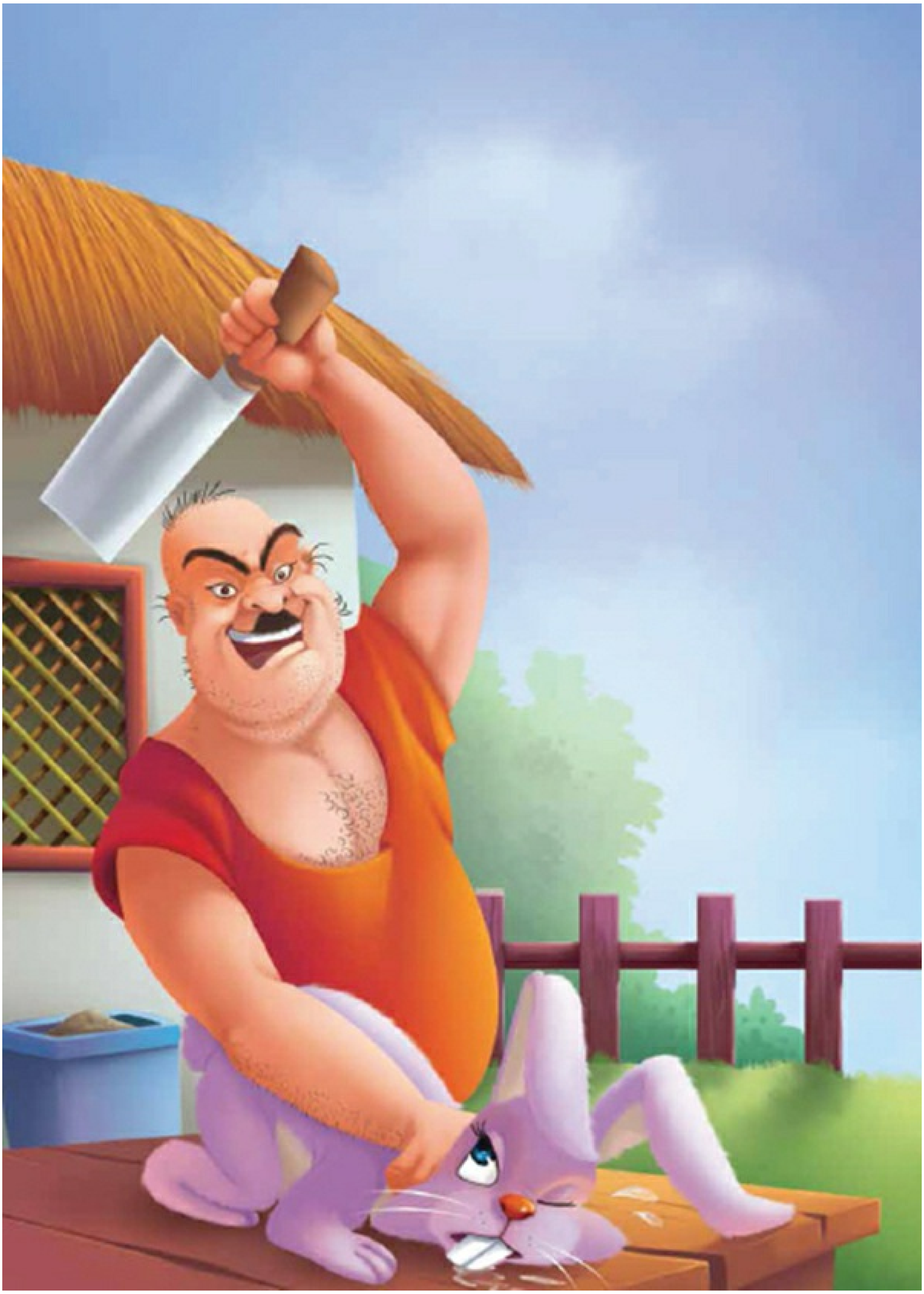
70 शिकारी और खरगोश

एक निर्दयी शिकारी खरगाशों को पकड़ा करता था और उनका माँस खाया करता था। एक दिन, फिर से उसने एक खरगोश पकड़ा और उसके कान पकड़कर उसे घर ले चला। रास्ते में उसे एक साधु मिला। साधु ने शिकारी से कहा कि वह खरगोश को छोड़ दे और इस भलाई के बदले पुण्य कमा ले।

शिकारी ने इन्कार कर दिया। उसने वहीं साधु के सामने ही निर्दयतापूर्वक खरगोश की गर्दन काटने का निश्चय किया।

उसने थैले से बड़ा धारदार चाकू निकाला। वह चाकू से खरगोश को काटने ही वाला था कि चाकू फिसलकर उसी के पैर पर गिर पड़ा। उसका पैर बुरी तरह से कट गया। वह दर्द से चिल्लाने लगा और उसके हाथ से खरगोश छूट गया।

शिकारी को अपने पापों का दंड मिला। उसका पैर बुरी तरह से कट गया था, इसलिए वह ठीक से चलने लायक भी नहीं रहा और न कभी दुबारा कोई शिकार कर पाया।



71 नन्हाँ लालची पक्षी

बहुत समय पहले की बात है। तेज गर्मी में एक दिन पक्षियों का राजा अपने साथी पक्षियों के साथ भोजन की तलाश में किसी नई जगह के लिए उड़ चला। उसने सारे पक्षियों से हर ओर भोजन की तलाश करने को कहा।

सारे पक्षी भोजन की तलाश में दूर-दूर फैल गए। एक पक्षी एक राजमार्ग पर पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि बहुत सारी बैलगाड़ियों में अनाज के बोरे लदे हैं। उसने यह भी देखा कि जब गाड़ियाँ आगे बढ़ती हैं तो उनसे बहुत सारा अनाज नीचे गिर रहा है।

वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने जल्दी से राजा को इस स्थान के बारे में सबसे पहले बताने का निश्चय किया। वह उड़कर वापस आया और राजा से कहने लगा,

“महाराज, मैंने सड़क पर देखा है कि बहुत सारी बैलगाड़ियों पर अनाज के बोरे लदे जा रहे हैं, जिनसे अनाज गिर रहा है। हालाँकि, अगर आप सड़क पर नीचे दाने चुगेंगे, तो गाड़ियों से कुचले जा सकते हैं। वहाँ न जाने में ही भलाई है।”

पक्षियों के राजा को उसकी सलाह उचित लगी। उसने सभी पक्षियों को उस सड़क पर न जाने की चेतावनी दे दी।

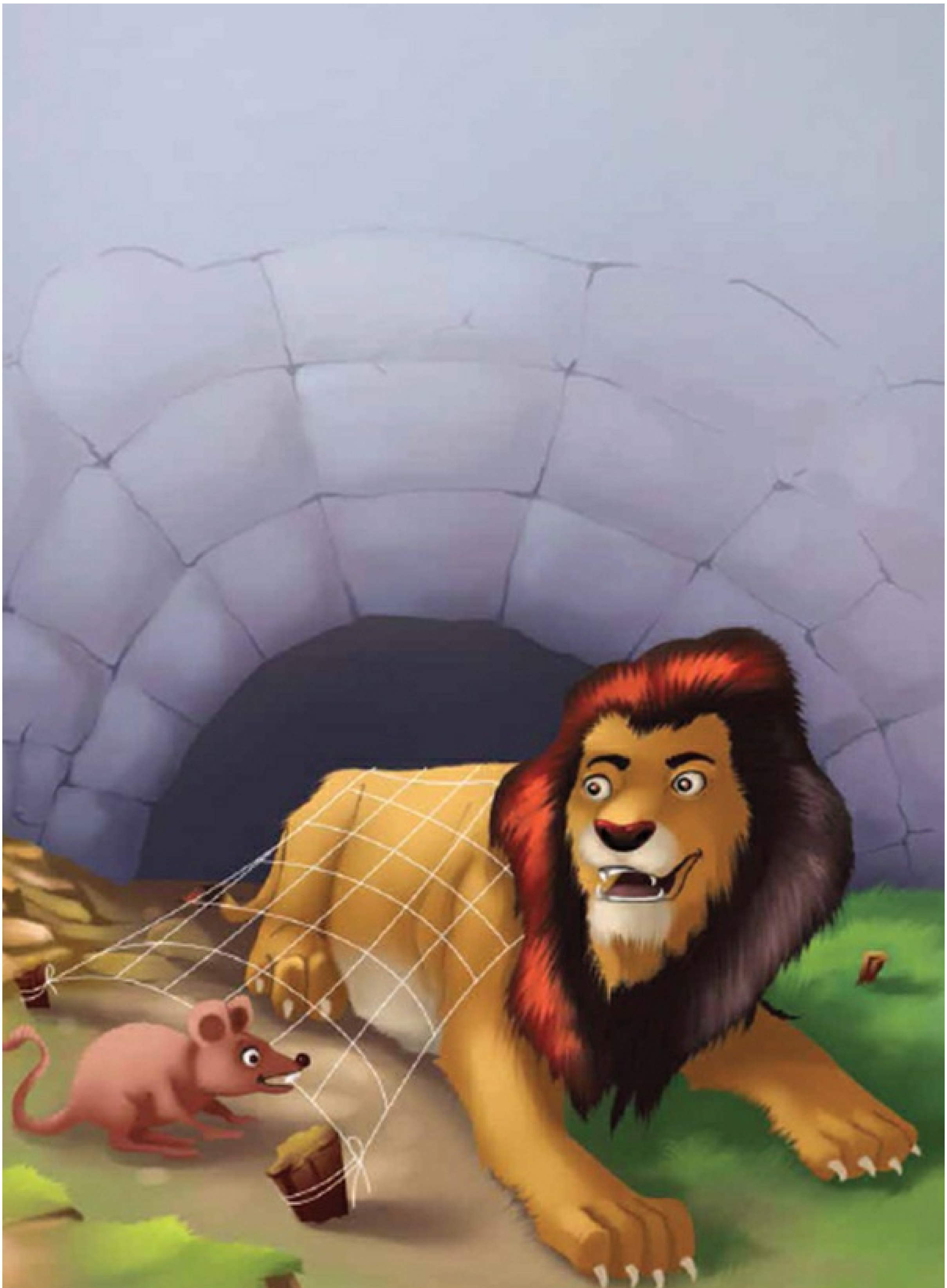
नन्हाँ पक्षी हर दिन उस जगह जाता और अकेले ही अपना पेट भरकर आ जाता। एक दिन जब वह दाने चुग रहा था, तभी एक बैलगाड़ी निकली और वह लालची पक्षी कुचलकर मर गया।



72 शेर और चूहा

गर्मी का दिन था और एक शेर अपनी माँद में लेटा झपकी ले रहा था। अचानक एक चूहा अनजाने में उसके ऊपर कूद पड़ा। शेर की नींद टूट गई। शेर ने चूहे को पंजे में दबोच लिया और उसे मसलने ही वाला था कि चूहा गिड़गिड़ाकर जान की भीख माँगने लगा। शेर को उस पर दया आ गई और उसने चूहे को छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद, शेर जंगल में घूम रहा था। तभी अचानक वह शिकारियों के लगाए जाल में फँस गया। जाल की रस्सियों में वह इतनी बुरी तरह से उलझ गया कि वह हिल तक नहीं पा रहा था। शेर जमीन पर पड़ा था और असहाय होकर चिल्ला रहा था। उसके चीखने की आवाज जंगल में गूँजने लगी। चूहे ने भी वह आवाज सुनी। वह भी दौड़ा-दौड़ा पहुँचा। चूहे ने तुरंत जाल को अपने नुकीले दाँतों से काटना शुरू कर दिया।

कई बार छोटे और तुच्छ समझे जाने वाले लोग भी बड़े उपयोगी साबित होते हैं।

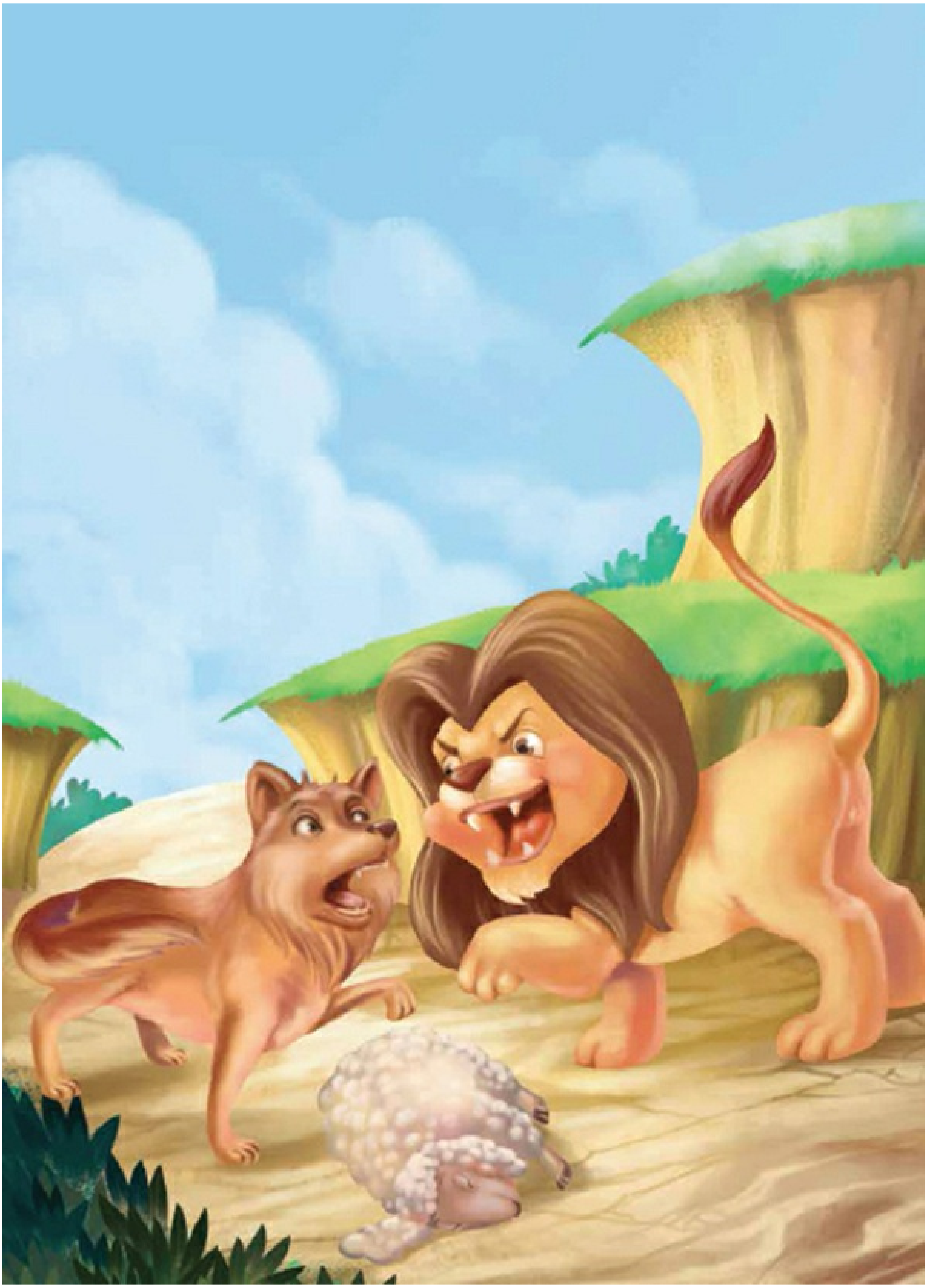


73 शेर और भेड़िया

एक बार की बात है। एक भेड़िए ने एक भेड़ को मार डाला और वह उस मरी हुई भेड़ को अपनी माँद में लेकर जाने ही वाला था कि अचानक एक शेर आ गया। वह शेर उस पर झपट पड़ा और भेड़ को छीनने का प्रयास करने लगा। भेड़िया शेर को देखकर चिल्लाया, “तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तुम जंगल के राजा हो। तुम्हारे ऊपर सारे जानवर विश्वास करते हैं। तुम अब खुद ही मेरा शिकार छीन रहे हो? तुम तो इस जंगल के कलंक हो!”

शेर हँस पड़ा और बोला, “मुझे क्यों शर्म आए? मैं तुमसे शिकार छीनने में क्या बुराई है, जबकि तुम्हारा तो काम ही चोरी करके पेट भरना है। मेरे ऊपर इस तरह का आरोप लगाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, सड़ियल जानवर? शर्म तो तुम्हें आनी चाहिए क्योंकि तुमने चरवाहे की भेड़ चुराई है।”

एक चोर दूसरे चोर से अच्छा नहीं हो सकता।



74 दो मित्रों की कहानी

एक शहर में दो मित्र रहते थे, धर्मबुद्धि और पापबुद्धि। चालाक पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि का सारा धन हड़पने की योजना बनाई। उसने धर्मबुद्धि से कहा, “दोस्त, मुझे लग रहा है कि अपना सारा धन अपने घर पर रखना सुरक्षित नहीं है। हम अपना धन जंगल में किसी गुप्त स्थान पर गाड़ देते हैं। जब कभी हमें धन की आवश्यकता पड़ेगी, हम जाकर निकाल लाएँगे।”

धर्मबुद्धि सहमत हो गया। दोनों ने पास के जंगल में जाकर एक गहरा गड्ढा खोदा और अपना सारा धन उसमें गाड़ दिया। एक दिन पापबुद्धि गया और गड्ढे से उसने सारा धन निकाल लिया। अगले दिन, वह धर्मबुद्धि के पास गया और बोला कि उसे कुछ धन की आवश्यकता है, इसलिए साथ चलकर जंगल से धन निकाल लिया जाए।

जब दोनों जंगल में पहुँचे तो उन्होंने पाया कि गड्ढा तो खाली है। पापबुद्धि जोर-जोर से रोते हुए कहने लगा, “धर्मबुद्धि, तुमने सारा धन चुरा लिया। उसमें आधा हिस्सा मेरा भी था। मेरा हिस्सा वापस करो।” हालाँकि, धर्मबुद्धि ने फौरन इन्कार कर दिया। पापबुद्धि नहीं माना और उस पर लगातार आरोप लगाता ही रहा।

दोनों का झगड़ा अदालत पहुँचा। वहाँ पर पापबुद्धि ने न्यायाधीश से कहा, “मैं गवाह के रूप में वनदेवता को प्रस्तुत कर सकता हूँ। वे ही तय करेंगे कि कौन दोषी है।” न्यायाधीश मान गए। उन्होंने दोनों से अगले दिन सुबह जंगल पहुँचने का आदेश दिया।

पापबुद्धि घर गया और अपने पिता से बोला, “पिताजी, मैंने धर्मबुद्धि का सारा धन चुरा लिया है। मामला अदालत में है। अगर आप सहायता करें तो मैं मुकदमा जीत सकता हूँ। आप जाइए और पेड़ के खोखले तने में छिप जाइए। कल सुबह जब न्यायाधीश वहाँ पहुँचेंगे तो मैं आपसे सचाई पूछूँगा। आप कह देना कि धर्मबुद्धि ही चोर है।”

पिता को पापबुद्धि के षड्यंत्र में शामिल होने में झिझक हो रही थी लेकिन अपने बेटे के प्यार की वजह से वह आखिरकार राजी हो गया।

अगले दिन, जब धर्मबुद्धि और न्यायाधीशों के सामने पापबुद्धि पेड़ के पास गया और चिल्लाकर बोला, “हे वनदेवता, आप गवाह हैं। आप ही बताएँ, हम दोनों में से कौन दोषी है।”

पेड़ के खोखले तने में छिपा पिता ने जवाब दिया, “धर्मबुद्धि ने चुराया है सारा धन।”

धर्मबुद्ध को संदेह हो गया। उसने पेड़ के खोखले तने में घास-फूस भर दिया और उसमें तेल डालकर आग लगा दी। आग जली तो पिता पेड़ से निकलकर भागा।

“यह सब पापबुद्धि के शैतानी दिमाग की उपज है,” पिता ने न्यायाधीशों से स्पष्ट कह दिया।

राजा के सिपाहियों ने पापबुद्धि को गिरफ्तार कर लिया।



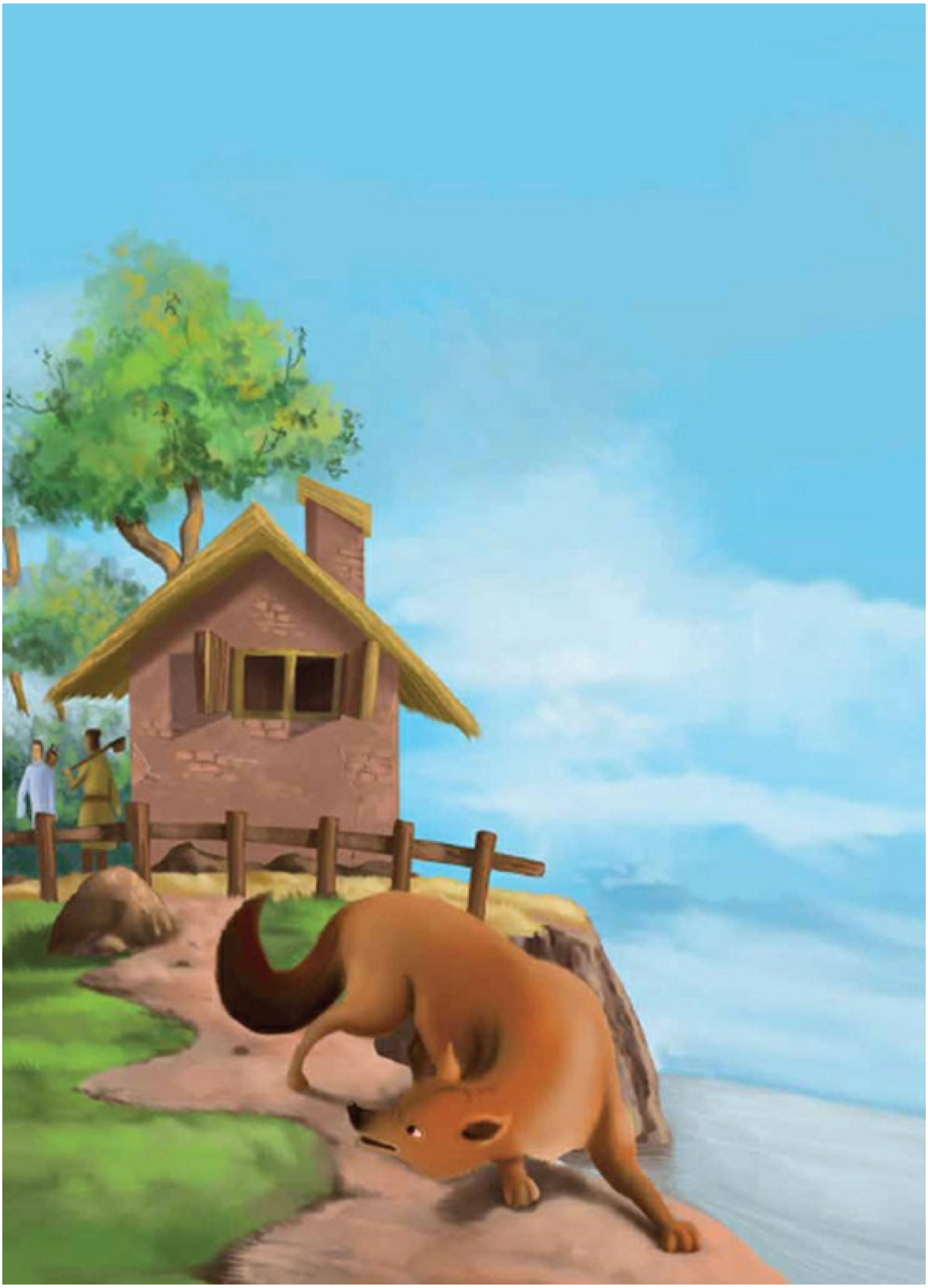
75 लकड़हारा और लोमड़ी

एक लोमड़ी के पीछे शिकारी पड़े थे। लोमड़ी भागते-भागते एक लकड़हारे के पास पहुँची और उससे शरण माँगने लगी। लकड़हारे ने अपनी झोपड़ी की ओर इशारा करते हुए लोमड़ी से उसमें छिप जाने को कह दिया। थोड़ी ही देर में शिकारी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने लकड़हारे से पूछा, “क्या तुम्हें कोई लोमड़ी दिखी यहाँ?”

लकड़हारे ने जवाब दिया, "नहीं,” लेकिन चुपचाप अपनी झोपड़ी की ओर इशारा कर दिया। शिकारी उसके इशारे को नहीं समझ पाए और वहाँ से चले गए। लोमड़ी झोपड़ी से बाहर निकलकर आई और भागने लगी। लकड़हारे ने उसे आवाज लगाई और कहा, “तुम कितनी कृतघन हो! अपनी जान बचाने के लिए तुमने मुझे धन्यवाद तक नहीं दिया!”

लोमड़ी रूखे स्वर में बोली, “अगर तुम्हारे बोल की तरह तुम्हारे इशारे भी भरोसे लायक होते तो मैं तुम्हें धन्यवाद जरूर देती।”

कई बार एक हल्का-सा इशारा, बोले गए शब्दों से ज्यादा बुरे होते हैं।



76 बंदर और ऊँट

कई साल पहले, जंगल से सारे जानवर अपनी-अपनी अभिनय और नाच-गाने की प्रतिभा दिखाने के लिए एकत्र हुए। जब सारे जानवर आ गए, तो बंदर से नाचने को कहा गया। बंदर तो उछल-कूद और कलाबाजियों में माहिर था ही। उसने अपने नाच से सबका मनोरंजन किया।

सभी लोगों ने बहुत सराहना की और बंदर को सभी ने बहुत अच्छा नर्तक मान लिया। ऊँट से बंदर की सराहना सहन नहीं हुई और उसने भी नाचना शुरू कर दिया। उसका नाच बिलकुल बेतुका और बेढंगा था। उसका नाच किसी को भी पसंद नहीं आया और सबने उसकी बुराई की। उसने ईष्र्या से भरकर नाच किया था, इसलिए उसे दंड के रूप में जंगल से निकाल दिया गया।

अगर तुम अपनी बाँह से अधिक अपना हाथ पसारोगे, तो तुम्हें हानि ही होगी।



77 नदियाँ और समुद्र

नदियाँ और समुद्र काफी प्राचीन समय से आपस में मिलकर रहते आ रहे थे। नदियाँ अपना पानी समुद्र में डालती थीं और समुद्र उस पानी को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता था ताकि नदियाँ साफ और सुरक्षित बनी रहें।

हालाँकि नदियों को यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि समुद्र सारे पानी को खारा कर देता है। एक दिन उन्होंने समुद्र से इस बात को लेकर शिकायत करने का निश्चय किया। वे सारी एकजुट होकर समुद्र के पास गईं। सारी नदियाँ विशाल नीले समुद्र के पास जाकर एक स्वर में बोलीं, “अरे समुद्र, हम लोग तुम्हारे पास इतनी मीठा पानी लाते हैं, लेकिन तुम उसे खारा क्यों कर देते हो?"

समुद्र कुछ देर शांत रहा और नदियों की नाराजगी भरी बातें सुनता रहा। फिर वह बोला, “अगर तुम नहीं चाहतीं कि यह पानी खारा हो, तो तुम लोग मुझसे दूर रहने लगो।”

नदियाँ चुपचाप मुँह लटकाए लौट पड़ीं क्योंकि वे जानती थीं कि वे समुद्र के बिना नहीं रह सकती हैं।



78 बूढ़ा बाघ और लालची राहगीर

एक बाघ बूढ़ा होने के कारण काफी कमजोर हो गया था। उसमें इतनी शक्ति भी नहीं बची थी कि वह अपने लिए कोई शिकार कर सके। उसे एक सोने का कंगन मिला। कंगन लेकर वह कीचड़ में खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा, "देखो, देखो! मेरे पास आओ और सोने का यह सुंदर कंगन ले लो।"

एक राहगीर वहाँ से गुजरा तो लालच में आकर रुक गया। उसे बाघ के पास जाने में डर भी लग रहा था। "मैं तुम्हारा विश्वास कैसे करूँ?" उसने दूर से ही बाघ से पूछा। "अगर मैं कंगन लेने तुम्हारे पास आया तो तुम मुझे खा जाओगे।"

बाघ ने जवाब दिया, "मैं हमशा लोगों को मारता रहा, लेकिन अब मैं सुधर गया हूँ और भलाई का जीवन बिता रहा हूँ। लोगों को दान करने में मुझे सुख मिलता है।" राहगीर उसकी बातों में आ गया लेकिन बाघ के पास आकर वह कीचड़ में फँस गया। बूढ़े बाघ को इसी का इंतजार था। वह उस पर झपट पड़ा और कीचड़ में खींच ले गया। वह राहगीर पछताते हुए रोने-चिल्लाने लगा, "हाय मेरी किस्मत! लालच में आकर मैं यही भूल गया कि हत्यारा हमेशा हत्यारा ही रहता है।"



79 हाथी और चूहे

एक बड़ी झील के पास बहुत सारे चूहे रहते थे।

एक दिन वहाँ हाथियों का एक झुंड आया। हाथियों के पैरों तले दबकर सैकड़ों चूहे दबकर मर गए।

बचे हुए चूहे बहुत चिंतित हुए। चूहों के सरदार ने कहा, "हमें इन हाथियों से दया का अनुरोध करना चाहिए।"

सारे चूहों ने मिलकर हाथियों के मुखिया से अनुरोध किया, "आप लोगों के झील जाते समय हमारे सैकड़ों साथी आप लोगों के पैरों तले दबकर मर गए। हमारा अनुरोध है कि आप लोग झील जाने के लिए किसी दूसरे रास्ते का प्रयोग करें।"

हाथियों का मुखिया मान गया।

एक दिन, राजा ने जंगल के सारे हाथियों को पकड़ने का आदेश दिया। जंगल में जाल लगा दिए गए। एक को छोड़कर सारे हाथी जाल में फँस गए। बचा हुआ हाथी चूहों के सरदार के पास पहुँचा और उससे सहायता माँगने लगा। सभी चूहे तुरंत जालों की ओर भागे। वहाँ पहुँचते ही सभी ने जल्दी से अपने नुकीले दाँतों से जालों को कुतरना शुरू कर दिया। देखते ही देखते जाल कट गए और सारे हाथी मुक्त हो गए।

दया के बदले और अधिक दया मिलती है।



80 मेंढक और चूहा

एक दुष्ट मेंढक ने एक चूहे से दोस्ती कर ली। एक दिन दोनों यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में उन्हें एक तालाब मिला। चूहे को पानी में जाने से डर लग रहा था लेकिन मेंढक ने कहा कि वह तालाब पार करने में चूहे की सहायता करेगा।

उसने चूहे की टाँगें अपनी टाँगों से बाँध ली और पानी में कूद पड़ा। जब मेंढक तालाब के बीच गहरे पानी में पहुँचा तो वह चूहे को पानी में नीचे खींचने लगा। चूहे ने अपने को छुड़ाने की बहुत कोशिश की और उनकी खींचतान से पानी में काफी हलचल होने लगी। हलचल देखकर तालाब के ऊपर उड़ रहे एक बाज वहाँ आ गया। वह नीचे आया और चूहे को अपने पंजे में दाबकर उड़ गया। धोखेबाज मेंढक की टाँगें भी उसकी टाँगों के साथ बँधी थीं, इसलिए वह भी चपेट में आ गया और चूहे के साथ वह भी बाज की पकड़ में आ गया |

जो दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयास करते हैं, वे स्वयं भी अपने ही कार्यों से हानि उठाते हैं।



81 आड़ू और सेब

एक बगीचे में एक आड़ू और एक सेब आपस में बहस कर रहे थे। दोनों अपने आपको अधिक सुंदर बता रहे थे। दोनों अपनी बात पर अड़े थे। उन्होंने निर्णय के लिए खुली बहस करने का निश्चय किया। दोनों फलों के बीच तीखी बहस होने लगी। बगीचे के सारे फल उनकी बातें सुन रहे थे। तभी पास की झाड़ी से एक काली बेरी ने अपना सिर उठाया और चिल्लाकर बोली, “तुम लोगों की बहस बहुत हो चुकी है। हमें नहीं लगता कि तुम लोगों का फैसला हो पाएगा। इस बहस से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। अपने मतभेद भुलाकर हाथ मिलाओ और फिर से दोस्त बन जाओ। शांति से रहने का यही एक तरीका है। ”

ऊँचे स्वर में झगड़ने से कोई लाभ नहीं होता।



82 सूरज का विवाह

गर्मी का दिन था। पृथ्वी पर अचानक लोगों ने खबर सुनी कि सूरज का जल्द ही विवाह होने वाला है। सारे लोग बहुत प्रसन्न हुए। मेंढक भी बहुत प्रसन्न हुए और पानी में उछल-कूद मचाने लगे। एक बूढ़ा मेंढक पानी के ऊपर आया और सारे मेंढकों को समझाने लगा कि यह प्रसन्नता की नहीं दुख की बात है, “मेरे साथियो! तुम लोग इतने प्रसन्न क्यों हो रहे हो? क्या यह वाकई खुशी मनाने की खबर है? एक अकेला सूरज तो अपनी गर्मी से हमें झुलसा देता है। जरा सोचो, जब इस सूरज के दर्जन भर बच्चे हो जाएँगे तो हमारा क्या हाल होगा। हमारा कष्ट कई गुना बढ़ जाएगा और हम लोग जीवित नहीं रह पाएँगे। ”



83 किसान और लोमड़ी

एक लोमड़ी थी, जो एक किसान को बहुत परेशान किया करती थी। वह किसान के मुर्गीबाड़े में घुसकर हमेशा उसके मुगेर्-मुर्गियाँ खा जाया करती थी। किसान उस लोमड़ी से बहुत तंग आ चुका था। उसने लोमड़ी को सबक सिखाने का निश्चय किया। कई दिनों बाद, एक दिन आखिरकार वह लोमड़ी को पकड़ने में सफल हो ही गया। गुस्से में उसने एक रस्सी को तेल में भिगोकर लोमड़ी की पूँछ से बाँध दिया और उसमें आग लगा दी।

लोमड़ी आग से परेशान होकर किसान के पूरे खेत में दौड़ने लगी। देखते ही देखते किसान की पूरी फसल में आग लग गई। लोमड़ी की पूँछ तो जली ही, साथ ही किसान भी बर्बाद हो गया! किसान ने गुस्से में आकर अगर इस तरह का काम न किया होता तो उसे इतना बड़ा नुकसान न झेलना पड़ता। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा होने लगा। उसने तय किया कि अब वह गुस्से में आकर कभी भी ऐसा काम नहीं करेगा।



84 पाशुओं की भाषा जानने वाला राजा

एक बार एक राजा ने एक साँप की जान बचाई। साँप ने प्रसन्न होकर राजा को ऐसी शक्ति दी जिससे कि वह पशुओं की भाषा समझने लगा। हालाँकि उसने इस शक्ति को गुप्त रखने की भी शर्त लगा दी और कहा कि अगर किसी को भी उसने यह बता बताई तो उसकी मृत्यु हो जाएगी।

एक बार राजा, रानी के साथ बगीचे में बैठा था। उसने एक चींटी को मिठाई के टुकड़े के बारे में बोलते सुना। राजा चींटी की बात सुनकर मुस्कराने लगा। रानी ने उससे मुस्कराने का कारण पूछा। राजा ने रानी को बहुत समझाने की कोशिश की पर वह बार-बार कारण पूछती ही रही। आखिरकार राजा उसे रहस्य बताने को तैयार हो गया। तभी आकाशवाणी सुनाई दी, “हे राजन, तुम क्यों उसके लिए अपने प्राणों का बलिदान दे रहे हो, जो स्वयं तुम्हारे प्राणों का मूल्य नहीं समझ रही थी?”

राजा ने रानी को बताया कि वह कितनी स्वार्थी है। रानी को भी अपनी गलती समझ में आ गई।



85 भेड़िया-भेड़िया चिल्लाने वाला बालक

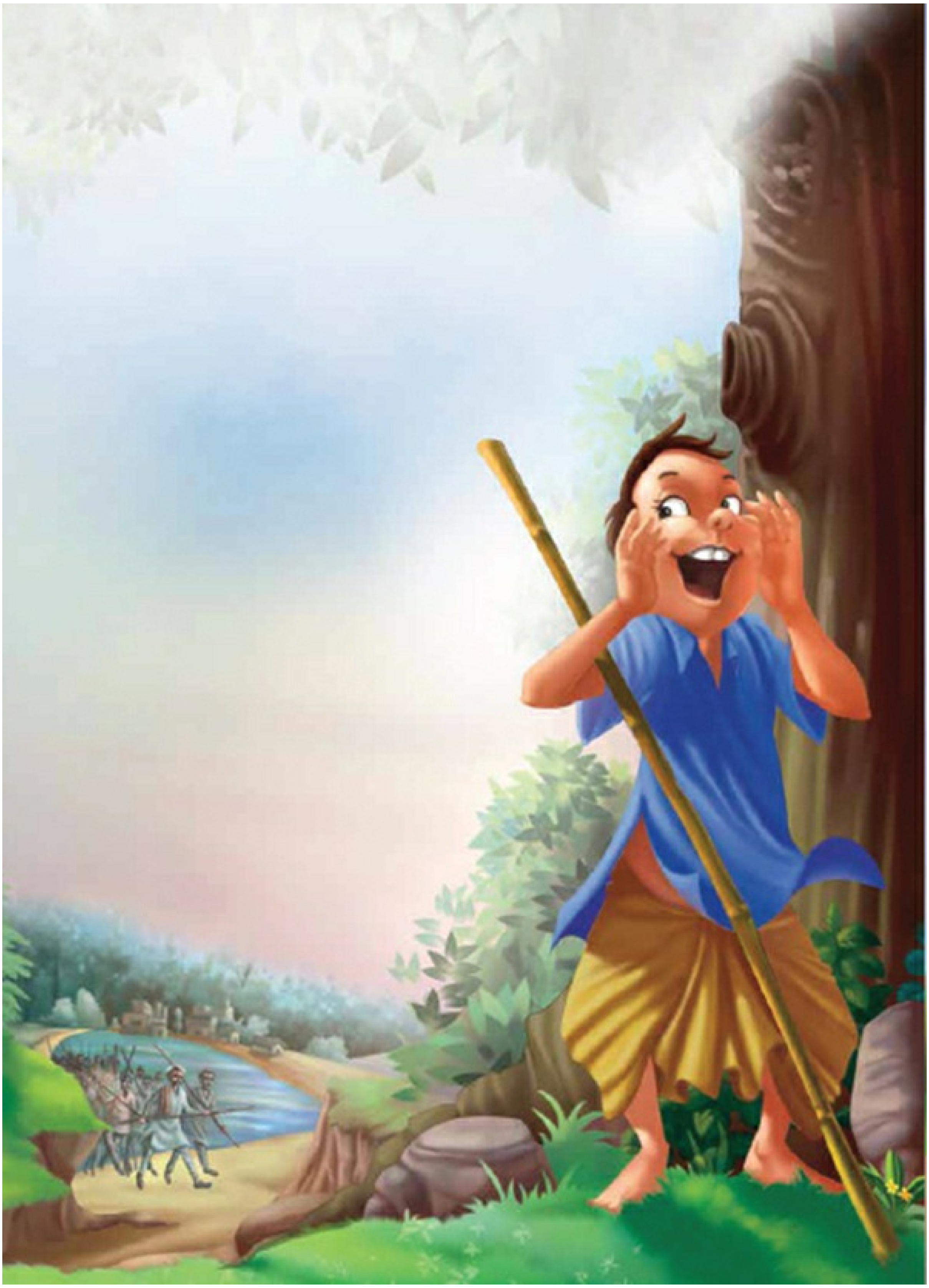
बहुत समय पहले एक चरवाहा था जो अपनी भेड़ों को चराने जंगल ले जाया करता था। एक दिन, उसने गाँव वालों के साथ मजाक करने का निश्चय किया। वह चिल्लाने लगा, “बचाओ! भेड़िया आया!”

गाँव वाले उसकी पुकार सुनकर दौड़े-दौड़े गए। जब वे लोग चरवाहे के पास पहुँचे तो वहाँ उन्हें कोई भेड़िया नहीं दिखा। चरवाहा गाँव वालों को देखकर जोर-जोर से हँसने लगा। उसने कई बार गाँव वालों के साथ यही मजाक किया। अब गाँव वालों को उसकी पुकार पर भरोसा नहीं रहा।

एक दिन ऐसा हुआ कि सचमुच एक भेड़िया आ गया। चरवाहा गाँव वालों की ओर भागा और चिल्लाने लगा, “बचाओ! भेड़िया आया!”

गाँव वालों ने समझा कि चरवाहा तो हमेशा की तरह मजाक कर रहा है।

गाँव वाले उसका चिल्लाना सुनकर हँसते रहे। जब चरवाहा बहुत गिड़गिड़ाया तो अनिच्छापूर्वक कुछ गाँव वाले उसके साथ गए। वहाँ सबने देखा कि भेड़िए ने कई सारी भेड़ों को मार डाला था।



86 लड़ने वाले मुर्गे और बाज

कुछ समय पहले की बात है। दो मुर्गे एक कूड़े के ढेर पर लड़ रहे थे। दोनों पूरी शक्ति से एक-दूसरे पर आक्रमण कर रहे थे। लड़ाई में जीतने वाला ही उस ढेर का राजा घोषित होने वाला था। आखिरकार एक मुर्गा बुरी तरह से घायल होकर गिर पड़ा। धीरे-धीरे उठकर वह अपने दड़बे में चला गया। जीतने वाले मुर्गे ने एक उड़ान मारी और जोर से बाँग लगाने लगा। उसी समय एक बाज ऊपर से उड़कर जा रहा था। बाज ने एकदम से झपट्टा मारा और उस मुर्गे को दबोचकर ले गया। हारा हुआ मुर्गा यह सब देख रहा था। वह दड़बे से बाहर निकला और कूड़े के ढेर पर खड़ा हो गया। उसने बाँग लगाकर अपने को राजा घोषित कर दिया। घमंड करने वाले की सदैव हार होती है।



87 सियारों का झुंड और हाथी

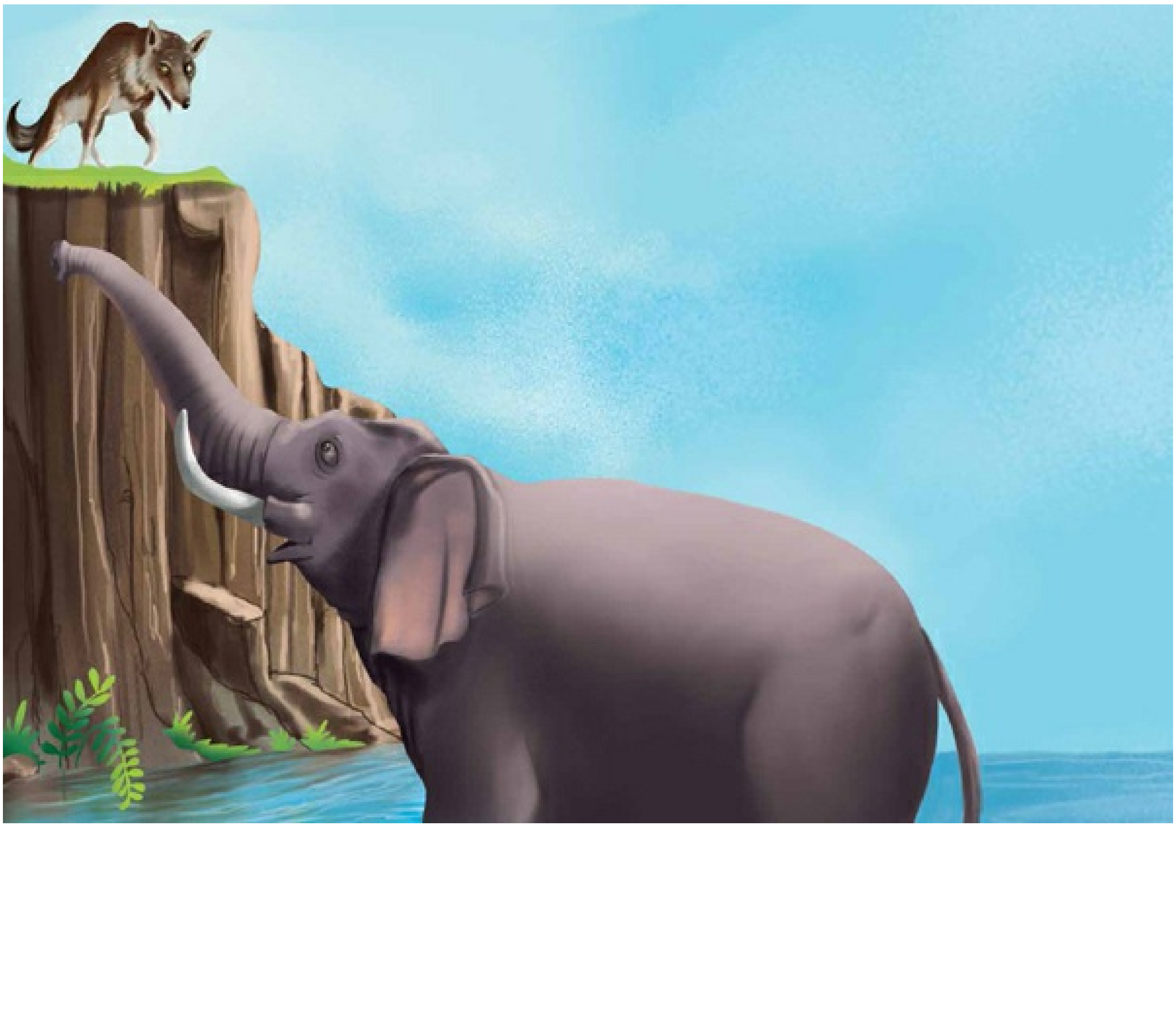
सियारों के एक झुंड ने एक हाथी को देखा। उनका मन उस हाथी का माँस खाने का करने लगा। एक बूढ़ा सियार बोला, “चलो, मैं तुम लोगों को तरीका सुझाता हूँ। हाथी को मारने का एक तरीका है मेरे पास।”

हाथी इधर-उधर घूम रहा था। बूढ़ा सियार उसके पास पहुँचा। “महोदय, मैं एक सियार हूँ। मैं सारे जानवरों ने मुझे आपके पास भेजा है। हम लोगों ने मिलकर तय किया है कि आपको जंगल का राजा बनाया जाना चाहिए। आपके अंदर राजा के सारे गुण हैं। कृपया मेरे साथ चलिए और राजा का काम सँभाल लीजिए।”

हाथी सियार की चापलूसी भरी बातों में आ गया। वह सियार के साथ चल पड़ा। सियार उसे एक झील के पास ले गया, जहाँ हाथी फिसल पड़ा और गहरे कीचड़ में फँस गया।

“मेरी सहायता करो मित्र,” हाथी असहाय होकर चिल्लाने लगा। सियार कुटिलता से मुस्कराया और कहने लगा, “महोदय, आपने मेरे जैसे जानवर पर विश्वास किया। अब आपको इसकी कीमत जान देकर ही चुकानी पड़ेगी।”

हाथी कीचड़ में फँसा रहा और कुछ देर में मर गया। सारे सियारों ने मिलकर उसके गोश्त की दावत उड़ाई।



88 नीमहकीम मेंढक

बहुत समय पहले, एक मेंढक था, जो अधिकतर समय कीचड़ से भरे दलदल में घुसा रहता था। उसे यह भ्रम हो गया कि वह हर किसी का इलाज कर सकता है। एक दिन वह दलदल से निकला और दावा करने लगा कि उसने धरती की सारी बीमारियाँ ठीक कर दी हैं। “अरे साथियो, मेरे पास आओ। मुझे चमत्कारी शक्तियाँ मिल गई हैं। मैं तुम सबकी बीमारियाँ ठीक कर सकता हूँ,” वह पूरी ताकत से चिल्लाकर बोला। पास से एक लोमड़ी निकल रही थी। वह वहीं रुक गई और बोली, “तुम तो नीमहकीम हो। अगर तुम्हारे पास कोई चमत्कारी शक्ति है तो पहले अपनी ये लँगड़ी चाल और यह छेदों वाली खाल ही ठीक कर लो। अपने आपको जबरदस्ती डॉक्टर कहते हो, पहले स्वयं का इलाज तो कर लो।” किसी के काम की जाँच व्यवहार से ही की जा सकती है।

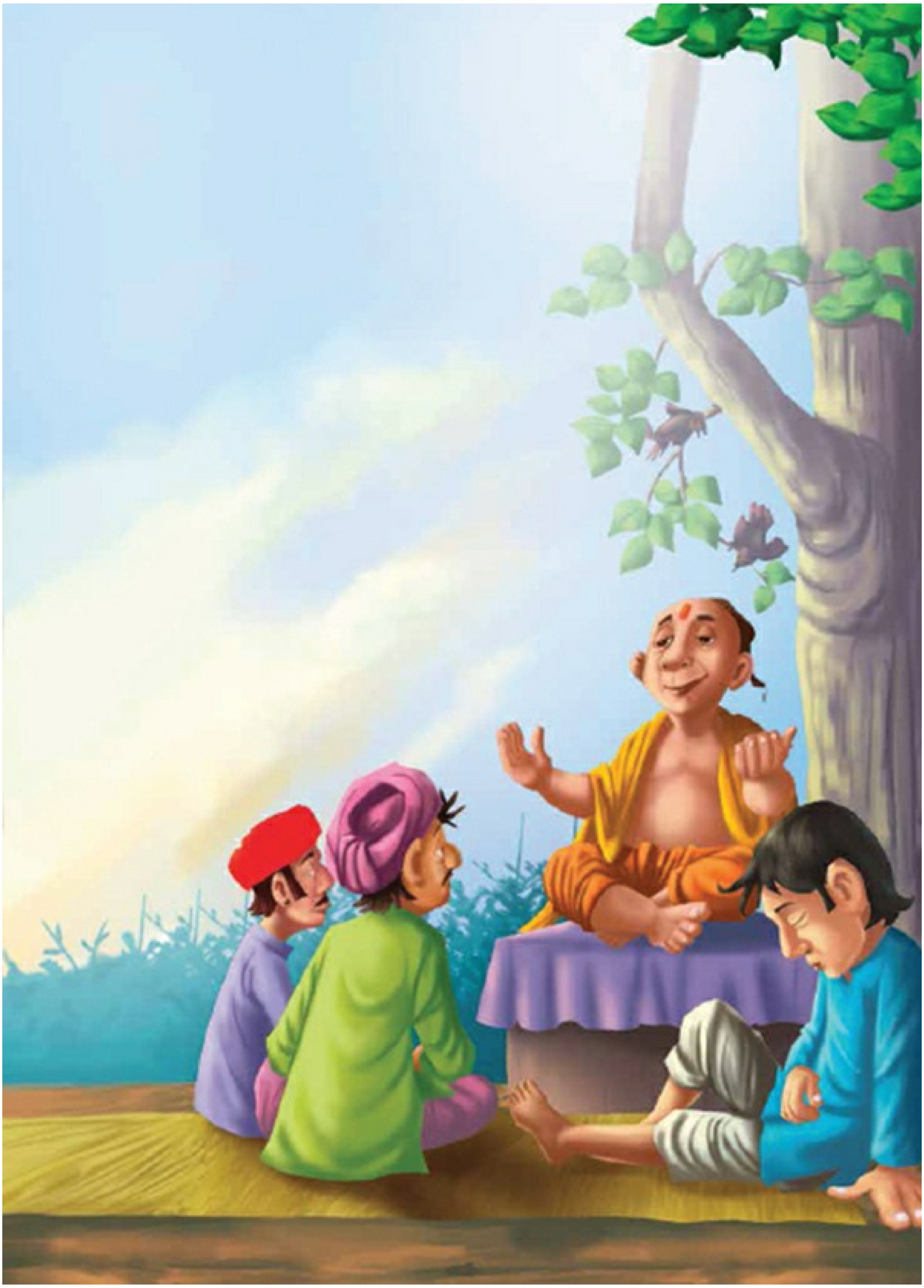


89 उद्दंड बेटा

एक व्यापारी का बहुत उद्दंड बेटा था। वह पूजा-पाठ और भलाई के कामों में बिलकुल रुचि नहीं लेता था। धर्म-कर्म में उसकी रुचि जगाने के इरादे से उसकी माँ ने उसे एक मंदिर में संत के प्रवचन सुनने के लिए भेजा। उसकी माँ ने उसे लालच दिया कि अगर वह संत के पूरे प्रवचन सुनकर आएगा तो वह उसे हजार रुपए देगी। रुपयों के लालच में बेटा तैयार हो गया, लेकिन ध्यान से प्रवचन सुनने के बजाय वह वहाँ पूरे समय सोता रहा।

अगले दिन सुबह, उसका बेटा घर लौटा और उसने माँ से हजार रुपए ले लिए। रुपए लेकर उसने व्यापार के लिए समुद्र पार जाने का निश्चय किया। उसकी माँ ने उसे रोकने का बहुत प्रयास किया, लेकिन बेटे ने उसकी एक नहीं सुनी। उसने अपना सामान बाँधा और यात्रा पर निकल पड़ा। मगर अफसोस! रास्ते में बहुत तेज तूफान आया और उसका जहाज सारे यात्रियों समेत डूब गया।

इस प्रकार माँ की सलाह न मानने की सजा बेटे को भी भुगतनी पड़ी।



90 बिना पूँछ की लोमड़ी

शिकारियों के हमले से एक लोमड़ी की जान तो बच गई लेकिन उसकी पूँछ कट गई। उसे बहुत शर्म आ रही थी।

अपनी शर्म छिपाने के लिए उसने सारी लोमड़ियों की सभा बुलाई और बोली, "मेरे साथियो, मेरे ऊपर ईश्वर ने विशेष कृपा की है और मेरी पूँछ हटा दी है। अब मैं सुखी और आरामदायक जीवन जी सकता हूँ। हमारी पूँछें तो कुरूप और बोझ जैसी हैं। हैरानी की बात है कि हमने अब तक अपनी पूँछों को काटा क्यों नहीं! मेरी सलाह मानो और सब लोग अपनी-अपनी पूँछें काट डालो।"

एक चालाक लोमड़ी उठ खड़ी हुई और हँसते हुए बोली, "अगर मेरी पूँछ भी कट गई होती, तब तो मैं तुम्हारी बात का समर्थन कर देती। लेकिन मेरी पूँछ तो सकुशल है तो मैं या बाकी लोमड़ियाँ अपनी-अपनी पूँछ क्यों काटें? तुम अपनी स्वार्थी सलाह अपने पास ही रखो।"

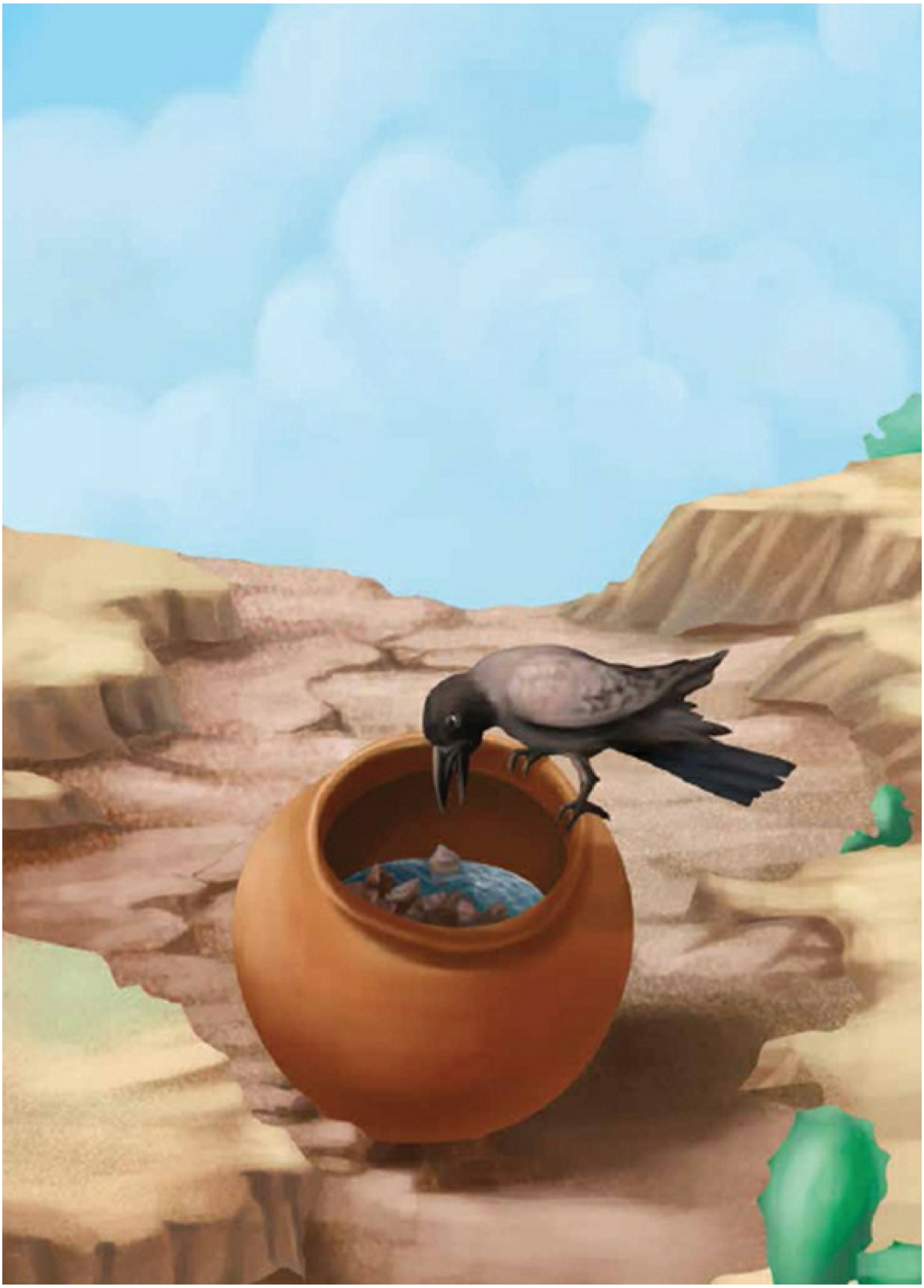


91 कौआ और घड़ा

तेज गर्मी का दिन था। एक कौए को जोर से प्यास लगी थी। उसने आसपास पानी की खोज की। उसे एक घड़ा दिखाई दिया। कौआ उड़कर घड़े के पास गया और घड़े में झाँककर देखने लगा। घड़े में तली में बहुत थोड़ा-सा पानी बचा था।

कौआ समझ गया कि पानी के लिए या तो घड़ा उलटना पड़ेगा या उसे फोड़ना पड़ेगा। दोनों ही काम उसके बस के नहीं थे। हालाँकि, कौए ने आस नहीं छोड़ी और किसी दूसरे उपाय के बारे में सोचने लगा। उसने घड़े के पास बहुत सारे कंकड़ पड़े देखे। उसके मन में एक विचार आया। कौए ने एक-एक करके सारे कंकड़ घड़े में डालने शुरू कर दिए। जब काफी सारे कंकड़ घड़े में पहुँच गए तो पानी का स्तर धीरे-धीरे ऊपर आ गया। कौए की चोंच पानी तक पहुँचने लगी। उसने भरपेट पानी पिया।

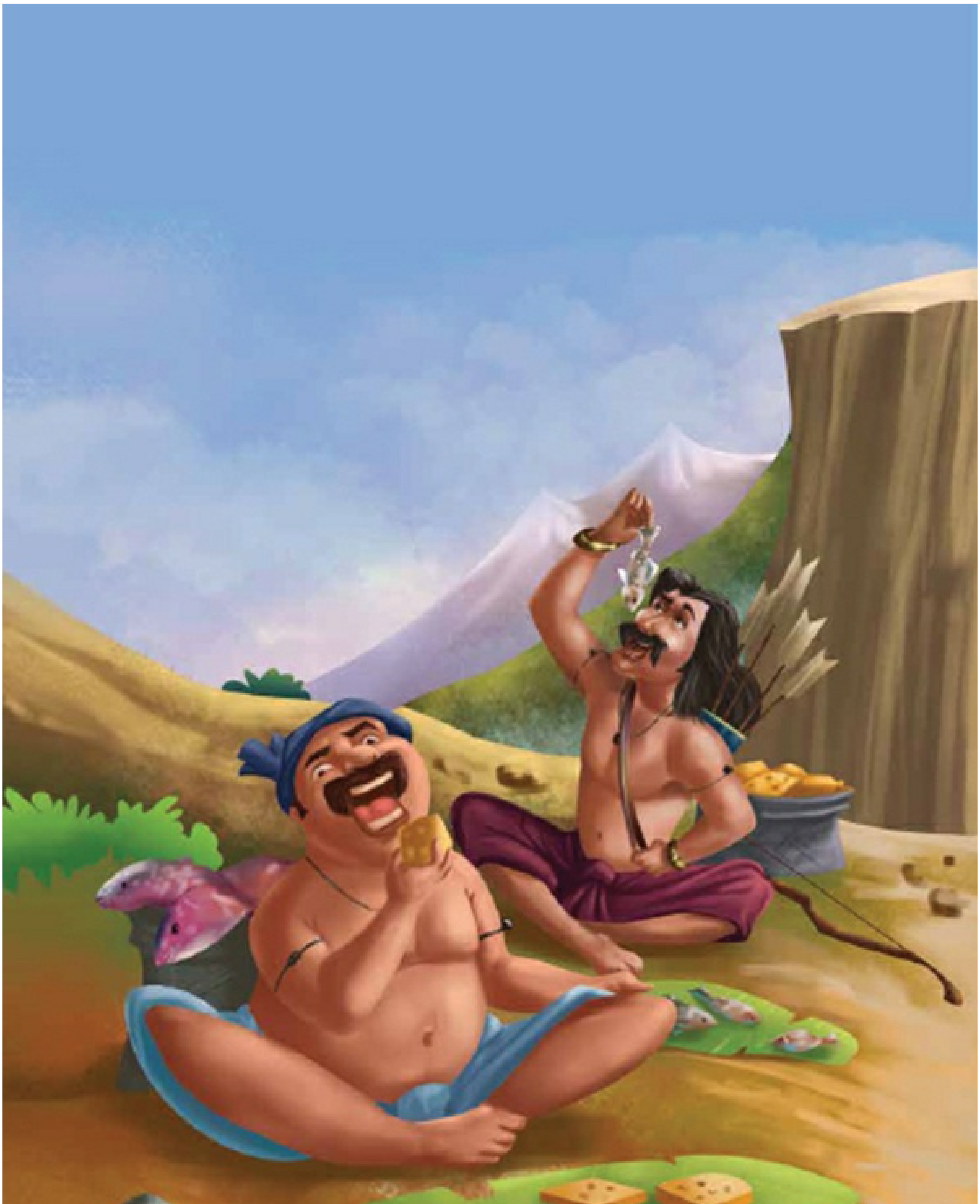
आवश्यकता आविष्कार की जननी है।



92 मछुआरा और शिकारी

एक शिकारी बहुत सारे शिकार लेकर पहाड़ से नीचे उतर रहा था। अचानक उसके सामने मछलियों से भरा थैला लिए एक मछुआरा आ गया। दोनों मिले और थोड़ी बातचीत के बाद ही दोनों अच्छे दोस्त बन गए।

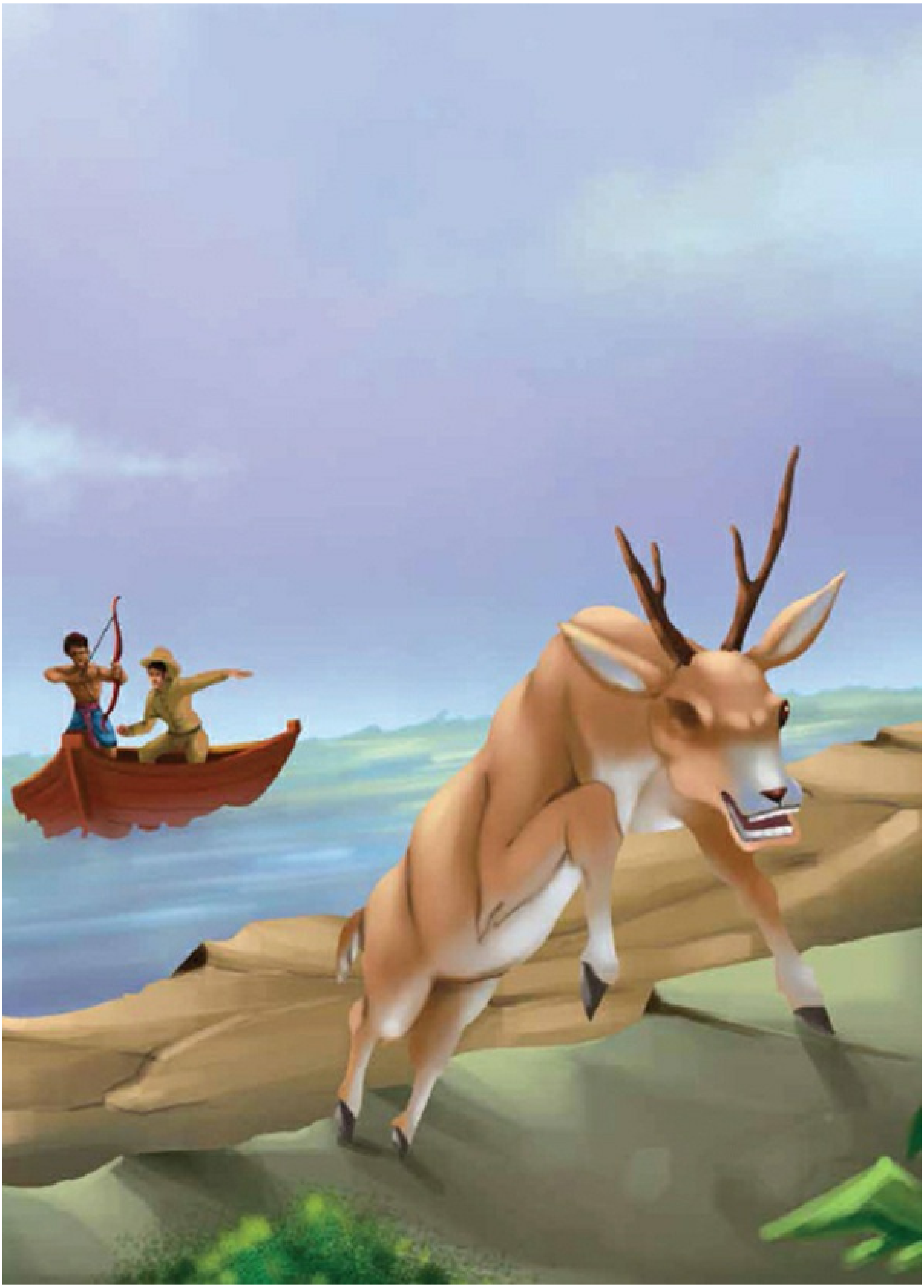
मछुआरे ने शिकार खाने की इच्छा जताई और शिकारी का मन मछलियाँ खाने का था। दोनों ने अपना-अपना सामान एक-दूसरे से बदल लिया। अब तो दोनों की ही यह आदत बन गई। हर दिन वे अपना-अपना सामान एक-दूसरे से बदल लेते। एक दिन जब वे दोनों साथ बैठे भोजन कर रहे थे, तभी एक बुद्धिमान व्यक्ति वहाँ आया। उसने दोनों को अपना-अपना भोजन बदलते देखा। कुछ देर सोचने के बाद वह दोनों से बोला, “दोस्तो, अगर तुम लोग हर दिन अपना भोजन आपस में बदलते रहे तो कुछ ही दिनों में तुम्हें इसमें मजा आना बंद हो जाएगा और फिर से अपना भोजन करने का ही मन करने लगेगा। खुशी पाने के लिए कुछ परहेज भी करना चाहिए।”



93 कानी हिरनी

एक कानी हिरनी समुद्र तट के पास घास चर रही थी। उसे हमेशा सतर्क रहना पड़ता था क्योंकि शिकारी कभी भी उस पर हमला कर सकते थे। वह बार-बार आसपास के मैदान पर नजर डाल लेती थी। उसका मानना था कि शिकारी आएँगे तो इसी रास्ते से आएँगे। वह समुद्र की ओर कभी नहीं देखती थी क्योंकि उसे लगता था कि समुद्र की ओर से तो शिकारी आएँगे नहीं। एक दिन, कुछ लोग एक नाव पर सवार होकर आए। हिरनी को चरते देखकर, उन्होंने उस पर तीर चला दिया। देखते ही देखते हिरनी जमीन पर गिर पड़ी। अंतिम साँस लेते हुए हिरनी स्वयं से बोली, “भाग्य का खेल कितना निराला है! मैं सोचती थी कि खतरा जमीन की ओर से आएगा, लेकिन मेरे दुश्मन तो समुद्र की ओर से आ गए।”

खतरे प्राय: उस ओर से आते हैं, जहाँ से उनके आने की आशंका कम होती है।



94 किंग कोबरा और चींटियाँ

बहुत समय पहले की बात है, एक भारी किंग कोबरा एक घने जंगल में रहता था। वह रात में शिकार करता था और दिन में सोता रहता था। धीरे-धीरे वह काफी मोटा हो गया और पेड़ के जिस बिल में वह रहता था, वह उसे छोटा पड़ने लगा। वह किसी दूसरे पेड़ की तलाश में निकल पड़ा।

आखिरकार, कोबरा ने एक बड़े पेड़ पर अपना घर बनाने का निश्चय किया, लेकिन उस पेड़ के तने के नीचे चींटियों की एक बड़ी बाँबी थी, जिसमें बहुत सारी चींटियाँ रहती थीं। वह गुस्से में फनफनाता हुआ बाँबी के पास गया और चींटियों को डाँटकर बोला, “मैं इस जंगल का राजा हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम लोग मेरे आस-पास रहो। मेरा आदेश है कि तुम लोग अभी अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह तलाश लो। अन्यथा, सब मरने के लिए तैयार हो जाओ! ”

चींटियों में काफी एकता थी। वे कोबरा से बिलकुल भी नही डरीं। देखते ही देखते हजारों चींटियाँ बाँबी से बाहर निकल आईं। सबने मिलकर कोबरे पर हमला बोल दिया। उसके पूरे शरीर पर चींटियाँ रेंग-रेंगकर काटने लगीं! दुष्ट कोबरा दर्द के मारे चिल्लाते हुए वहाँ से भाग गया।

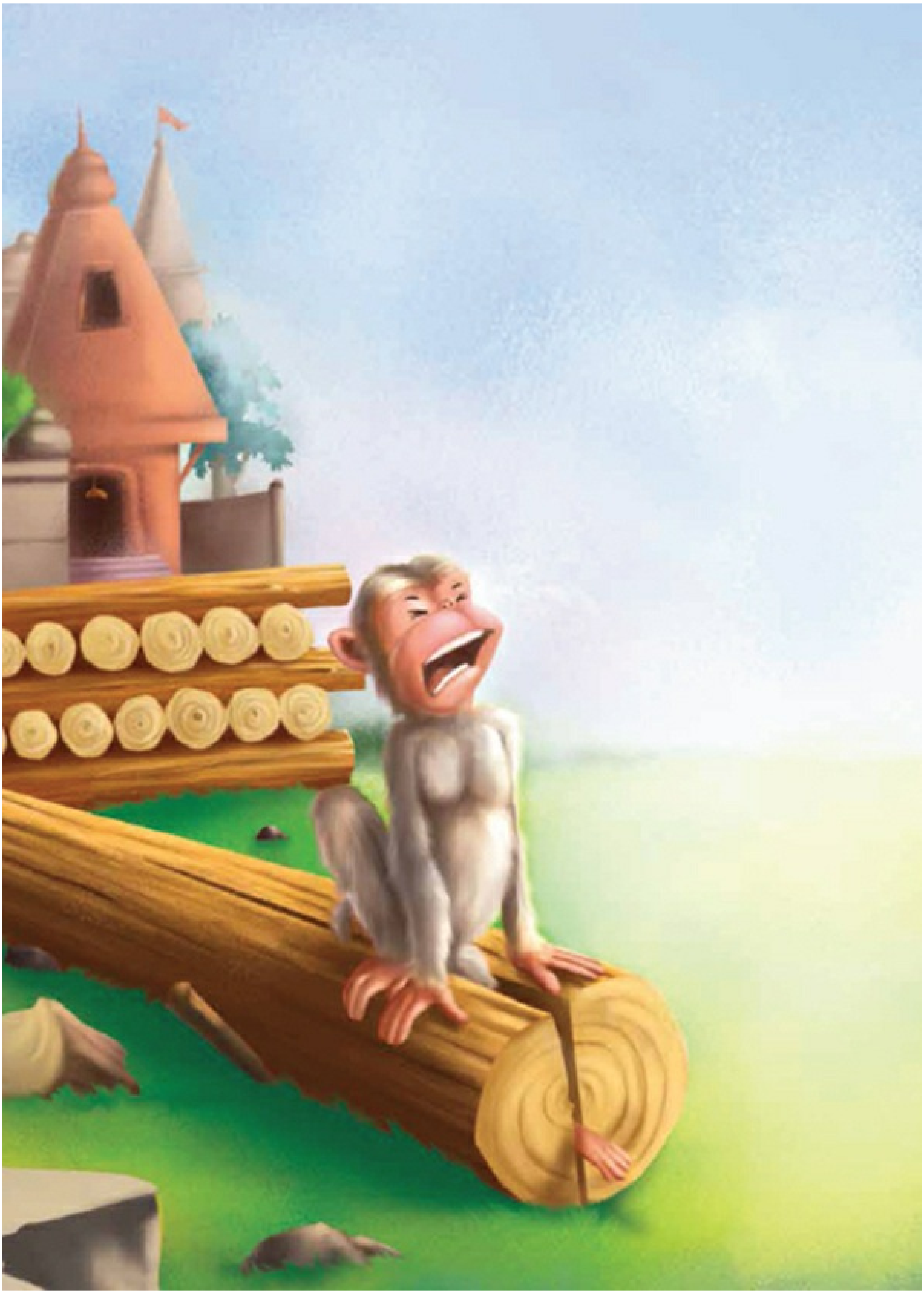


95 बंदर की जिज्ञासा और कील

एक व्यापारी ने एक मंदिर बनवाना शुरू किया और मजदूरों को काम पर लगा दिया। एक दिन, जब मजदूर दोपहर में खाना खा रहे थे, तभी बंदरों का एक झुंड वहाँ आ गया।

बंदरों को जो सामान हाथ लगता, उसी से वे खेलने लगते। एक बंदर को लकड़ी का एक मोटे लट्ठे में एक बड़ी-सी कील लगी दिखाई दी। कील की वजह से लट्ठे में बड़ी दरार सी बन गई थी। बंदर के मन में आया कि वह देखे कि आखिर वह है क्या। जिज्ञासा से भरा बंदर जानना चाहता था कि वह कील क्या चीज है। बंदर ने उस कील को हिलाना शुरू कर दिया। वह पूरी ताकत से कील को हिलाने और बाहर निकालने की कोशिश करता रहा। आखिरकार, कील तो बाहर निकल आई लेकिन लट्ठे की उस दरार में बंदर का पैर फँस गया। कील निकल जाने की वजह से वह दरार एकदम बंद हो गई। बंदर उसी में फँसा रह गया और पकड़ा गया। मजदूरों ने उसकी अच्छी पिटाई की।

जिस बात से हमारा कोई लेना-देना न हो, उसमें अपनी टाँग नहीं अड़ाना चाहिए।

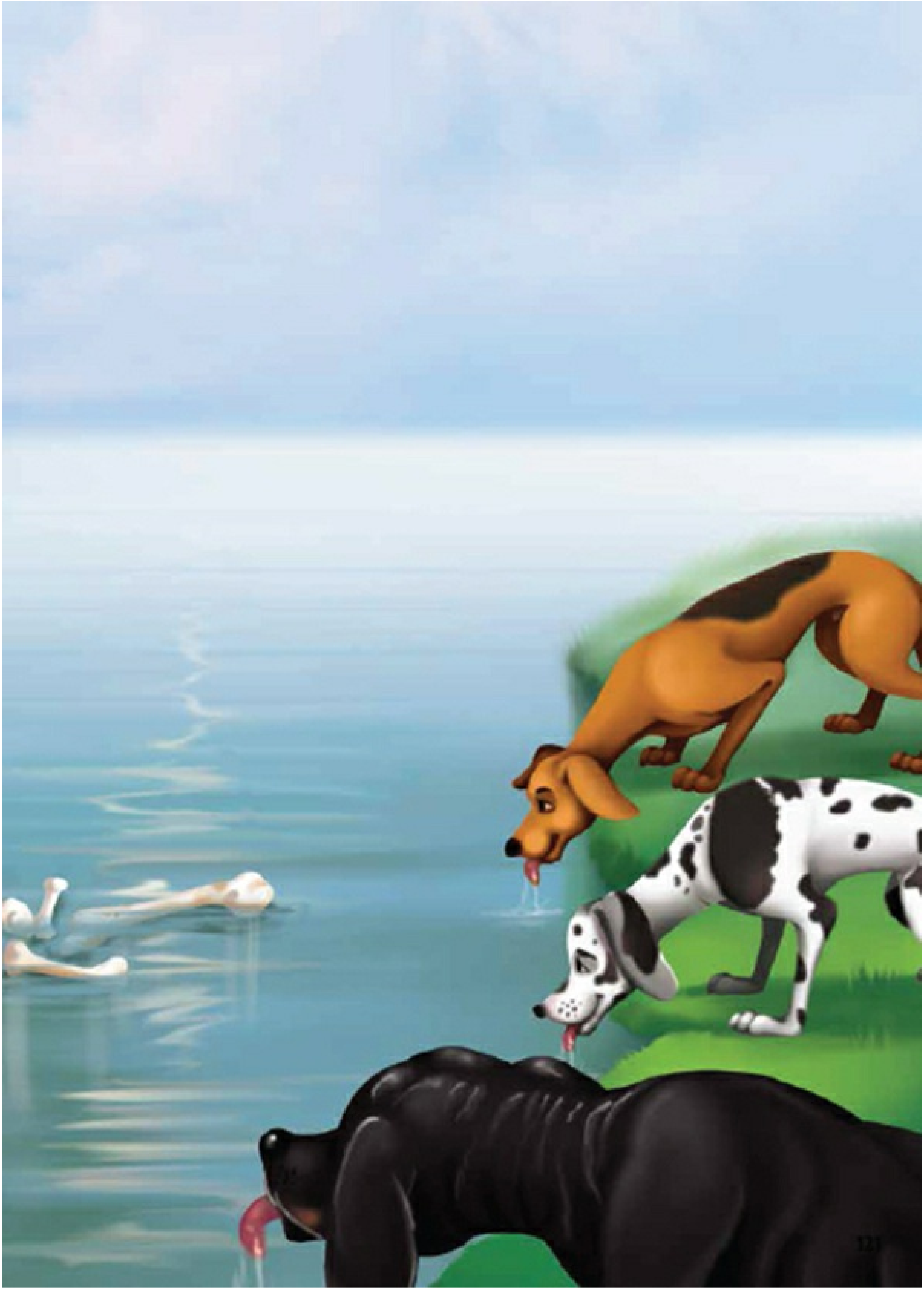


96 भूखे कुत्ते

तीन कुत्ते थे, जो आपस में गहरे मित्र थे। एक दिन, तीनों कुत्ते भूखे थे और उन्हें खाने-पीने को कुछ नहीं मिल रहा था। अचानक उन्हें पानी की धारा में नीचे एक हड्डी पड़ी दिखी। उन्होंने वह हड्डी उठाने की बहुत कोशिश की लेकिन उस तक नहीं पहुँच पाए। तीनों ने निश्चय किया कि अगर सारा पानी पी लिया जाए तो उन्हें हड्डी मिल जाएगी।

तीनों ने पानी पीना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में उनके पेट भर गए और फूलने लगे। वे तब भी नहीं रुके और लगातार पानी पीते गए। उनके पेट और अधिक फूलते गए और फट गए। उनके पेटों से सारा पानी भी बाहर निकल पड़ा। तीनो कुत्ते उसी पानी की धारा में नीचे मरे पड़े थे।

अगर तुम मूर्खतापूर्ण तरीकों से किसी असंभव कार्य करने की कोशिश करोगे तो तुम्हें हानि होना निश्चित है।



97 कुत्ता और खरगोश

एक कुत्ते और एक खरगोश के बीच बहुत पक्की दोस्ती थी। खरगाश का स्वभाव सीधा-सादा था, जबकि कुत्ता बहुत चालाक था। एक दिन कुत्ते ने अचानक खरगोश को पकड़कर जोर से काट लिया। खरगोश दर्द के मारे मरा जा रहा था। अब कुत्ता खरगोश के घाव को चाट-चाटकर उसे आराम पहुँचाने की कोशिश करने लगा। खरगोश कुत्ते के व्यवहार को देखकर दंग था और समझ नहीं पा रहा था कि वो क्या करे।

वह जानने की कोशिश कर रहा था कि कुत्ता क्या चाहता है। “पहले मुझे यह बताओ, तुम मेरे दोस्त हो या दुश्मन? अगर तुम मेरे सच्चे दोस्त हो, तो तुमने मुझे इतने जोर से काटा क्यों? अगर तुम दुश्मन हो तो अब मेरे घावों को चाट क्यों रहे हो? या तो मुझे मार डालो या मुझे अपनी मर्जी से जीवन जीने दो।”

संदिग्ध मित्र तो शत्रु से भी बुरा होता है।



98 मुर्गी और बिल्ली

एक बार एक बहुत चालाक मुर्गी थी। एक दिन वह बीमार पड़ गई और अपने घोंसले में पड़ी थी। तभी एक बिल्ली उसे देखने आई। उसके घोंसले में घुसकर बिल्ली बोली, “मेरी दोस्त, क्या हुआ तुम्हें? क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकती हूँ? तुम्हें कुछ चाहिए हो तो बताओ, मैं ला दूँगी। अभी तुम्हें कुछ चाहिए क्या?”

मुर्गी ने बिल्ली की प्यार भरी बातें सुनीं। उसे खतरे का आभास हो गया। वह बोली, “हाँ, बिलकुल। मेरे लिए एक काम कर दो। यहाँ से चली जाओ। मैं बीमार हूँ और किसी अनचाहे मेहमान को बुलाकर कोई खतरा नहीं उठाना चाहती।”



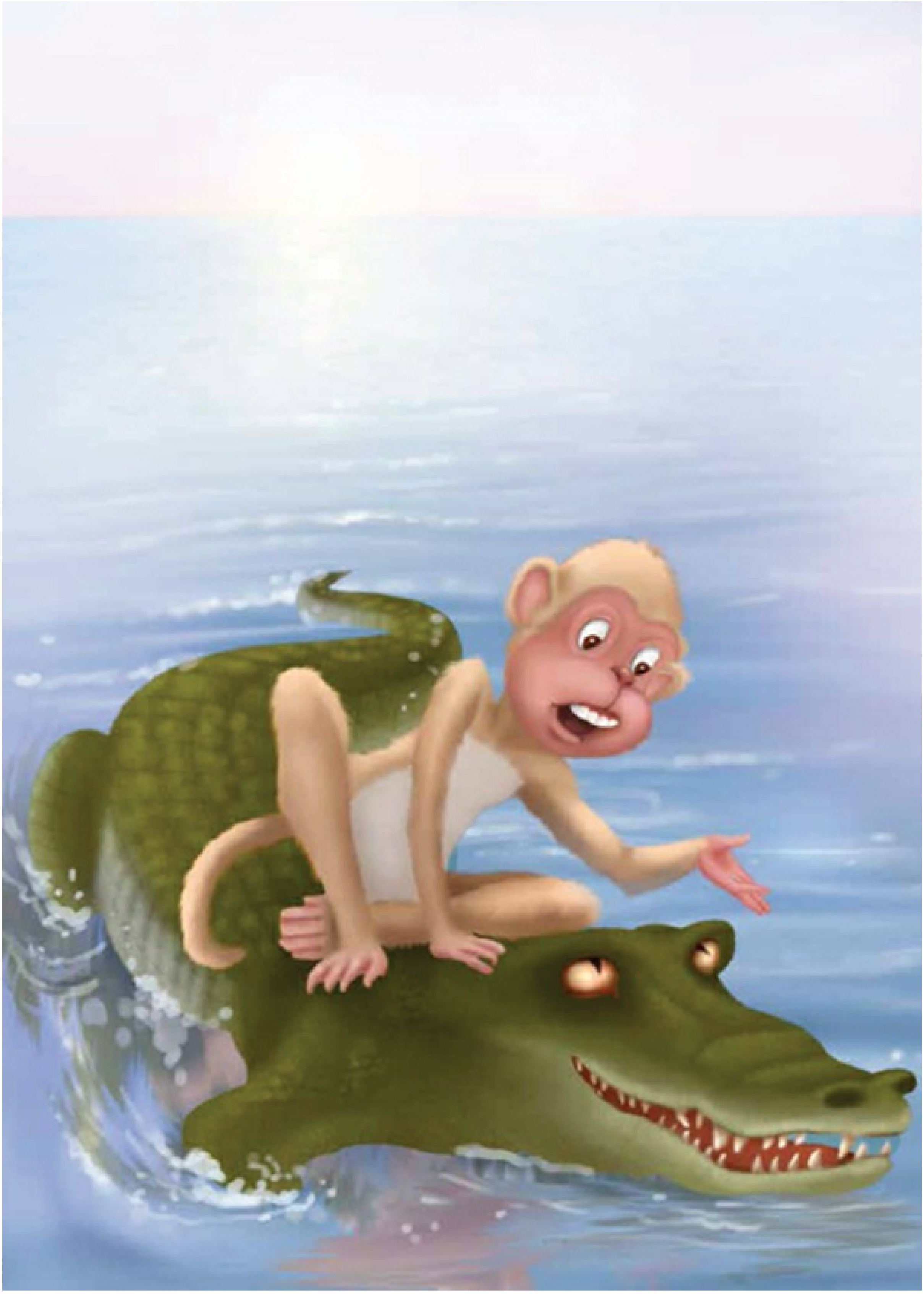
99 बंदर और मगरमच्छ

एक बंदर और एक मगरमच्छ आपस में दोस्त थे। मगरमच्छ की माँ को बंदर का हृदय बहुत स्वादिष्ट लगता था। उसने मगरमच्छ से कहा कि वह उसके लिए बंदर का हृदय लाए।

मगरमच्छ ने बंदर से कहा, “उस टापू के फल पक गए हैं। मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।” बंदर के मुँह में पानी आने लगा। वह उछलकर मगरमच्छ की पीठ पर बैठ गया। दोनों टापू की ओर चल पड़े। रास्ते में मगरमच्छ ने बताया, “मेरी माँ तुम्हारा हृदय खाना चाहती है और मैं तुम्हें उसके पास ही लिए जा रहा हूँ।” बंदर चुपचाप सोचने लगा। कुछ देर बाद वह बोला, “अरे, लेकिन मैं तो अपना हृदय पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ। तुम्हें मेरा हृदय चाहिए तो मुझे वापस वहीं ले चलो।”

चतुर बंदर ने बात बनाई।

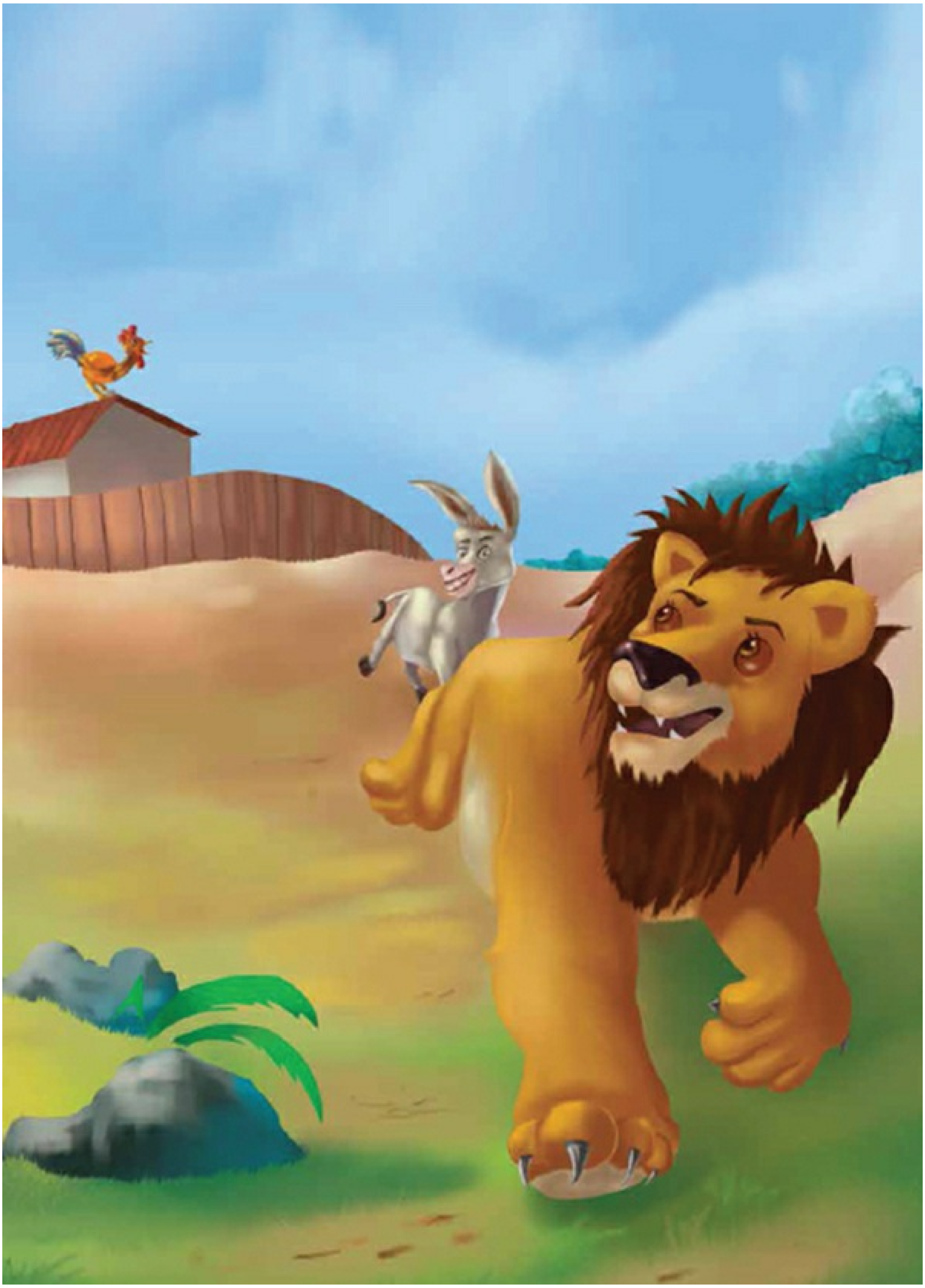
मूर्ख मगरमच्छ बंदर को वापस नदी के तट पर ले आया। जैसे ही वे तट के पास पहुँचे, बंदर उछलकर पेड़ पर चढ़ गया और उसकी जान बच गई।



100 गधा, मुर्गा और शेर

एक बाड़े में एक गधा, एक मुर्गा साथ रहा करते थे। एक दिन एक शेर उस गधे के ऊपर झपटने ही वाला था कि मुर्गे ने उसे देख लिया और जोर से चिल्ला दिया। शेर अचानक उसकी आवाज सुनकर डर गया और भागने लगा। गधे ने शेर को भागते देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि अगर मैं जंगल के राजा शेर का पीछा करूँ तो सारे जानवर उसका बहुत सम्मान करेंगे। यह सोचकर वह शेर के पीछे दौड़ पड़ा। अचानक शेर पलट गया और गधे पर झपट पड़ा। गधे की मौत वहीं पर हो गई और वह तुरंत मर गया।

घमंड नादानी से शुरू होता है और बर्बादी से खत्म होता है।



101 हाथी को चुनौती देने वाला भँवरा

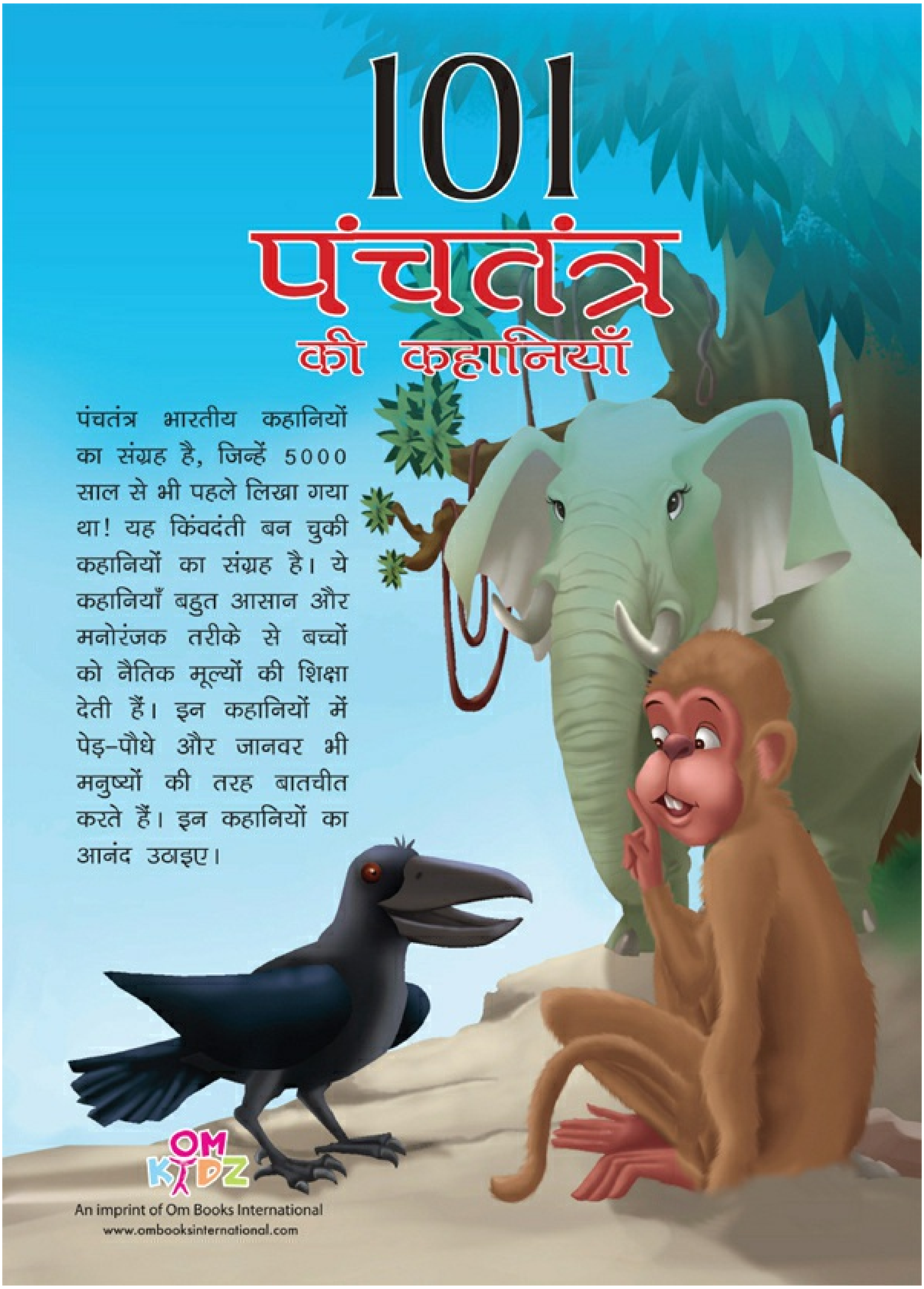
एक दिन, गोबर में रहने वाले भँवरे की निगाह मेज पर रखी शराब की खाली बोतल पर पड़ी। वह बोतल के पास गया और उसमें बची-खुची बूँदें पी गया जिससे उसे नशा चढ़ गया। इसके बाद वह खुशी-खुशी गुंजन करता हुआ वापस गोबर के ढेर में चला गया। पास से ही एक हाथी गुजर रहा था। गोबर की गंध की वजह से वह दूर हट गया और सीधा जाने लगा। नशे में चूर भँवरे को लगा कि हाथी उससे डर गया है।

उसने वहीं से भँवरे को आवाज लगाई और उसे लड़ने की चुनौती देने लगा।

"इधर आ, मोटे! मुझसे मुकाबला कर। देखते हैं कौन जीतता है," वह हाथी की ओर देखकर चिल्लाया। हाथी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। नशे की धुन में भँवरा उसे लगातार चुनौती देता रहा। आखिरकार, हाथी का धीरज खत्म हो गया। उसने गुस्से में आकर भँवरे पर गोबर और पानी फेंक दिया। भँवरे की वहीं जान निकल गई।

शराब का नशा व्यक्ति को अपने बारे में गलतफहमी पैदा कर देता है।





101
पंचतंत्र
की कहानियाँ

पंचतंत्र भारतीय कहानियों का संग्रह है, जिन्हें 5000 साल से भी पहले लिखा गया था! यह किंवदंती बन चुकी कहानियों का संग्रह है। ये कहानियाँ बहुत आसान और मनोरंजक तरीके से बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देती हैं। इन कहानियों में पेड़-पौधे और जानवर भी मनुष्यों की तरह बातचीत करते हैं। इन कहानियों का आनंद उठाइए।

OM KIDZ
An imprint of Om Books International
www.ombooksinternational.com